अक्टूबर 2012 ▪ ₹ 25/-

चन्दामामा

EACH POWER CAN BE UNLOCKED BY EATING THEIR FAVOURITE POPPINS. 10 POWERS: SHAPE SHIFTER-GREEN APPLE, SPEED-MANGO,
FLIGHT-ORANGE, GIANT-WATERMELON, STRENGTH-RASPBERRY, SHRINK-LYCHEE, INISIBLE-PINEAPPLE, STRETCH-MUSK MELON, FISSION-BLACK CURRANT, FORCE FIELD-GUAVA.
RECAP: RAM AND SHYAM RESCUE AN ALIEN - ZARTOGAARR, WHAN HIS SPACESHIP CRASHES TO EARTH. IN RETURN HE GIFTS THEM THE DEKATRIX, A POWERFUL GADGET WITH 10 POWERS.
PARLE
POPPINS
Doon Kya?
Ram and Shyam
ब्लैक होल
भाग 2
इन हैरतंगेज पावर्स के रहस्य को जानने के लिए विजिट करें
http://www.parleproducts.com/brands/parlepoppins
और www.chandamama.com//parle/index.php?pHcId=11
अब तक की कहानी: ब्लैक होल से गिरने के बाद, राम और श्याम से डेकाट्रिक्स खो जाता है और उनकी उम्र 5 साल बढ़ जाती है. धरती को बचाने के लिए वे बेलाट्रिक्स नाम के एक ग्रह पर जाते हैं.
अपने नए अवतार में, राम और श्याम ऐंजल के साथ बेलाट्रिक्स ग्रह पर उतरते हैं.
वक़्त है डेकाट्रिक्स और अपने ग्रह पृथ्वी को वापस पाने का.
और बेलाट्रिशियन्स को सबक सिखाने का!
बेलाट्रिशियन्स के वर्कशॉप में...
उन हथियारों को देखो!
जब उनके पास डेकाट्रिक्स है तो फिर उन्हें इतना समय क्यों लग रहा है?
वे दो बेलाट्रिशियन्स को आपस में बात करते सुनते हैं.
5 साल के बाद, हमें लगता है कि अब हम तैयार हैं.
डेकाट्रिक्स हमारे किसी काम का नहीं. हमें ये नहीं पता कि ये काम कैसे करता है.
इसे स्टोर रूम में ऐसे ही रहने देते हैं.
बग़ैर पॉपिन्स के वे उसकी शक्तियों को भला कैसे जान पाएंगे?
चलो डेकाट्रिक्स छीन लेते हैं और उन्हें सबक सिखाते हैं!
वे दोनों अपना हाथ आगे बढ़ाते हैं और डेकाट्रिक्स को याद करते हैं. डेकाट्रिक्स चमकते हुए आकाश में उड़ता है और उनकी कलाइयों से चिपक जाता है.
ब्लैक होल से गुज़रने के कारण डेकाट्रिक्स की शक्तियां और भी बढ़ गई हैं.
"बर्फ़ की शक्ति" के कारण बेलाट्रिशियन्स बर्फ़ में जम जाते हैं.
राम अपने हाथ से बर्फ़ की किरणें छोड़ता है और श्याम उनके यंत्रों को बर्फ़ के गोलों से नष्ट करता है.
बेलाट्रिशियन्स हार जाते हैं और पृथ्वी से ख़तरा टल जाता है. और इसका पूरा श्रेय जाता है राम और श्याम... और पारले पॉपिन्स को!
PARLE POPPINS
www.chandamama.com/parle/

युवा सितारे

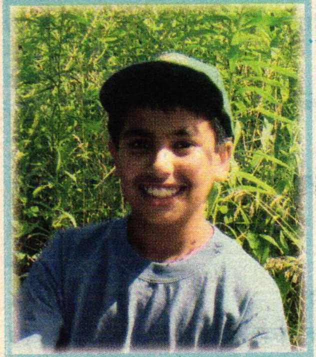

यदि आप अपने परिवार या आस-पास के किसी बच्चे का नाम युवा सितारे के रूप में सुझाना चाहें, तो कृपया हमें बच्चे का विवरण और अपना संपर्क विवरण इस पते पर भेजें:

Young Achievers-RCM,
Chandamama India Ltd,
No:2 Ground Floor, Swathi Enclave, Amman koil street, Vadapalani, Chennai-26
(या)
online@chandamama.com

उम्मीदों से परे

कनाडा में, स्वयंसेवा का समय क्रेडिट पॉइंट्स पाने का आधार होता है, जो विद्यार्थियों के स्नातक होने के लिये एक आवश्यकता है। १४ वर्षीय हरनूर गिल अब तक १००० घंटों से अधिक स्वयंसेवा कर चुके हैं। उन्होंने ३ वर्ष की उम्र से स्वयंसेवा करना शुरू किया था। हरनूर ने जिन विभिन्न चैरिटीज़ में काम किया था, उनमें चिल्ड्रन्स एड सोसायटी, और अमेज़िंग किड्स शामिल हैं। हाल ही में, उन्होंने स्वयं अपनी चैरिटी, द जीन ग्रीन ड्राइव चैरिटी बनाई, जिसमें वे नई और पुरानी जीन्स इकट्ठी करते हैं और उन्हें अपने समुदाय और विदेशों की चैरिटीज़ को दान करते हैं। यह आइडिया हरनूर को मुख्यतः लोगों को गर्म रखने के लिये आया। हरनूर को आशा है कि स्वयंसेवक के रूप में काम करके उनमें नेतृत्व के गुण विकसित होंगे और युवाओं को यह पता लगेगा कि स्वयंसेवक होने के लिये उम्र कोई पैमाना नहीं। दूसरे बच्चों को उनकी सलाह यह है कि वे बाहर निकलें और वेब पर स्वयंसेवा के बारे में पता लगाएँ और जानें कि वे अपने समुदाय के लिये क्या कर सकते हैं। स्कूल में उनके कुछ पसन्दीदा विषय हैं गणित और साइंस, लेकिन वे भाषाओं, इतिहास और भूगोल को भी पसन्द करते हैं। भविष्य में, वे सागरीय जीव वैज्ञानिक बनना चाहते हैं।

आगे, हरनूर समुद्री जीव विज्ञान में काम करते हुए पर्यावरण के लिये काम करना चाहते हैं और अपना चैरिटी का काम व स्वयंसेवा जारी रखना चाहते हैं।

October 2012 ₹25/-
Founded by **B. Nagi Reddi and Chakrapani**

Editor & Publisher :
Prashant Sharad Mulekar

Associate Editors :
R. Vaasugi, K. Raja Sekhara Raju

Sub Editor :
Patricia Pandian

General Manager :
Sowmya Bharadwaj

Senior Artists:
K.C. Sivasankaran (Sankar), Gandhi Ayya, P. Mahesh, Sandeep Solkar

Artist :
Venki

Layout Designers :
B. Thirumal, K. Narendra, N. Sivakumar

Production In-charge :
Prashant Pawar

Circulation:
circulation@chandamama.com

Asst. Manager - Sales & Circulation:
Subhankar Rej

Sales Officer - Circulation :
K. Ravishankar

Advertisement :
sales@chandamama.com

Customer Help :
Ph: 022 40786043
customerhelp@chandamama.com

Head Office :
CHANDAMAMA INDIA LTD.,
P.O.Box No:19407, Mumbai-400093
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email:chandamama@chandamama.com
Website : www.chandamama.com

Published, Printed and Owned by CHANDAMAMA INDIA LTD., Published and Printed on their behalf by Prashant Sharad Mulekar
Published At : B-3, Lunic Industries, "B" Cross Rd, Opp.SBI, MIDC, Andheri (E), Mumbai - 400 093.
Printed At :- Mothers Graphics (I) Pvt. Ltd. 91D, Govt. Ind. Estate, Charkop, Kandivali (W), Mumbai - 400 067.
Editor :- Prashant Sharad Mulekar

H

अनुक्रम

चन्दामामा

Volume-3 October 2012 Issue-10

* पाठकों के पत्र ...०६
* चाँदी का दीपदान ...०७
* मेरी स्मृतियाँ ...०९
* विराज का वैराग्य ...११
* अच्छा काम ...१७
* व्यवस्था ...२०
* मित्र-सम्प्राप्ति-३ ...२४
* वासव की व्यावसायिक बुद्धि ...२७
* आँधी-तूफ़ान ...३०
* भाग्य देवता ...३२
* बातों की दुकान ...३५
* विधि अचूक है ...३९
* कछुए से सीख ...४३
* स्वर्ण हस्त ...४४
* आदतन अपराधी ...४८
* मकरंद ...५२
* गीत की कहानी ...५४
* शिथिलालय-३१ ...५५
* पढ़ा हुआ-किया हुआ ...६३
* लहरों का मुन्शी ...६४
* बेकार का यश ...६६
* सब से बड़ा गुण क्या है? ...६७
* पुरस्कार ...७०
* मैं क्या बन सकता हूँ? ...७३
* चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४५ ...७४
* चुटकुले ...७५
* चूँ-चूँ का डिब्बा ...७६
* भारत-दर्शन ...७८
* बीरबल ...८०
* ट्रेज़र बॉक्स ...८२

© The stories, articles and designs contained in this issue are the exclusive property of the Publishers. Copying or adapting them in any manner/ medium will be dealt with according to law.

महात्मा की याद...

पिछले अक्टूबर के मेरे सम्पादकीय में, मैंने हमारी आँखों के सामने इतिहास को बनते देखने की बात कही थी। और इस एक वर्ष में हुई घटनाओं ने हम सभी को ऊपर आसमान की ओर देखकर ईश्वरीय मदद की आशा करने पर मजबूर कर दिया है। जो आंदोलन पिछले वर्ष इस समय अपने चरम पर था, कई कारणों से बिखर गया। इस प्रकार की असफलताओं को केवल हमारे दृढ़-संकल्प को मज़बूत बनाना चाहिये, न कि हमें कमज़ोर करना चाहिये।

इस माह हम दशहरा मनाएँगे, और यह हमारे सीखने के लिये एक उत्कृष्ट उदाहरण है। भगवान राम शक्तिशाली रावण को केवल अपने दृढ़-निश्चय और अपनी सेना के सहयोग के बल पर ही जीत पाए थे। इसी प्रकार, हमें अक्षमता, भ्रष्टाचार, भुखमरी, अशिक्षा के राक्षसों को हराने के लिये एकजुट होना होगा।

ऐपल के ऐप स्टोर पर हमारी पत्रिका को मिले प्रतिसाद से प्रोत्साहित होकर, हमने अपनी कॉफ़ी टेबल बुक, रामायण, ऐप स्टोर पर लॉन्च की है। इन सभी को हम ऐण्ड्रॉइड और माइक्रोसॉफ़्ट विण्डोज़ ८.० प्लेटफ़ॉर्म पर भी लॉन्च करने की प्रक्रिया में हैं। हमें उम्मीद है, कि हमारे पाठक इनका आनन्द लेंगे और चन्दामामा को उसी प्रकार समर्थन जारी रखेंगे, जैसा उन्होंने पिछले कई दशकों से रखा है।

- सम्पादक

पाठकों के पत्र

चन्दामामा बच्चों की पसन्दीदा पत्रिका है। सबसे अच्छी बात यह है कि यह कई भाषाओं में उपलब्ध है। यही नहीं, यह भारत की सबसे पुरानी बाल-पत्रिकाओं में से एक है। इसकी कहानियाँ सीधे दिल को छूती हैं। मुझे विश्वास है कि मुझे अपनी पूरी ज़िन्दग़ी यह पत्रिका पढ़ते रहने का मौका मिलेगा। *- शुभदीप, झारखण्ड*

मैं चन्दामामा का नियमित पाठक हूँ। यह सर्वश्रेष्ठ पत्रिकाओं में से एक है। मैंने इससे कई नैतिक शिक्षाएँ पाई हैं। इसकी कहानियाँ बहुत शानदार हैं इसलिये मैं इसे बहुत पसन्द करता हूँ। मैं चन्दामामा पढ़ना कभी बन्द नहीं करूँगा। *- राकेश पाल, भद्रक, उड़ीसा*

कहानियाँ चन्दामामा की कीर्ति के अनुरूप हैं। लेकिन जब इन्हें पुराने समय के चित्रों की गुणवत्ता से मिलाया जाए, तो ये मेरे जैसे कलाकारों को बेहद असन्तुष्ट कर रहे हैं। अच्छी गुणवत्ता वाले चित्रों की कमी चन्दामामा के नए अंक में स्पष्ट दिख रही है।

- एम. वी. वी. शास्त्री, मछलीपट्टनम्, आ. प्र.

मैं १९५७ से चन्दामामा का पाठक हूँ। उन दिनों, इसका मूल्य केवल ३७ पैसे था। आप कुछ धारावाहिक दुबारा प्रकाशित कर रहे हैं। लेकिन रूपधरण यत्रेगलु अब तक पुनर्प्रकाशित नहीं हुआ है। मेरा आपसे अनुरोध है कि उसे शिथिलालयम श्रृंखला समाप्त होने के तुरन्त बाद प्रकाशित करें। *- एस. जनार्दन, बंगलुरु*

जब मुझे चन्दामामा का पिछला अंक मिला, तो लगा जैसे मैं कई वर्षों के बाद पुरानी चन्दामामा देख रहा हूँ। इससे मुझे बड़ी खुशी हुई। प्रत्येक कहानी इस प्रकार मनोरंजक थी कि मैं उनमें से किसी कहानी को दूसरी कहानियों से अच्छी नहीं बता सकता। नई और पुरानी कहानियों ने एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा की। हमारा परिवार चन्दामामा को कई दशकों से पढ़ रहा है। यह किसी को लुभाने का कोई प्रयास नहीं है। वास्तव में, सभी कहानियाँ अच्छी हैं। मेरी इस बात का पूरा यकीन करें कि मुझे इनमें से प्रत्येक कहानी पढ़कर बेहद आनन्द आया। हमें हमारी पुरानी चन्दामामा वापस देने के लिये आपका आभार।

- जी. श्रीनिवास, हैदराबाद

मैं चन्दामामा बंगाली के हाल के अंकों को ध्यान से पढ़ रहा और उनका आनन्द ले रहा हूँ। कई नए स्तंभों के जुड़ने के बावजूद, कुछ मौजूदा स्तंभ हटा लिये गए हैं, विशेषकर चित्र शीर्षक प्रतियोगिता, जो बहुत अच्छी थी। यदि आप उसे दुबारा शुरू करने पर विचार करें, तो मैं आभारी रहूँगा। *- सन्तोष कुमार रॉय, कोलकाता*

चाँदी का दीपदान

हेलापुरी की अदालत में चाँदी के एक दीपदान की चोरी का मुकद्दमा चल रहा था। जिस केशव नामक व्यक्ति के दीपदान की चोरी हो गयी थी, उसने न्यायाधीश से कहा, ''साहब, वह श्रावण में शुक्रवार का दिन था। मेरी-पत्नी ने व्रत रखा और कुछ सुहागिनियों को अपने घर बुलाया। व्रत जब पूरा हुआ और सबके सब चले गये तब उसे मालूम पड़ा कि दीपदान को किसी ने चुरा लिया है। यह चोरी किसी और ने नहीं, स्वयं माधव की पत्नी गुणवती ने की।'' यों वह कहता ही जा रहा था, तब न्यायाधीश ने उसे टोका और पूछा, ''तुम्हें कैसे संदेह हुआ कि उस दीपदान की चोरी माधव की पत्नी गुणवती ने ही की?''

''साहब, एक सप्ताह के पहले गुणवती के घर में एक जो शुभकार्य हुआ, उसमें भाग लेने मेरी पत्नी भी गयी। पूजा में रखे गये उस दीपदान को मेरी पत्नी ने पहचान लिया। कृपया वह दीपदान मुझे दिलाइये।'' केशव ने विनती की।

''इसका क्या ठोस आधार है कि वह दीपदान तुम्हारा ही है?'' न्यायाधीश ने पूछा।

''साहब, हमारे दीपदान का आकार थोड़ा-सा अलग है। वह ऊँ आकार में है।'' केशव ने कहा। न्यायाधीश ने हँसते हुए कहा, ''ऐसी बात है! हमारे घर में भी ऊँ आकार का एक दीपदान है।''

''साहब, यही बात मैं आपसे बताने जा रहा था। आपके टोकने की वजह से मैं बता नहीं पाया। हाल ही में मालूम हुआ कि माधव की पत्नी ने जिस दीपदान को मेरे घर से चुराया, उसे उसने आपकी पत्नी को बेच दिया। वह दीपदान अब उसके घर में नहीं, आपके घर में हैं।'' केशव ने कहा।

यह सुनकर न्यायाधिकारी और वहाँ उपस्थित सब लोग स्तब्ध रह गये। *-नाग भैरव*

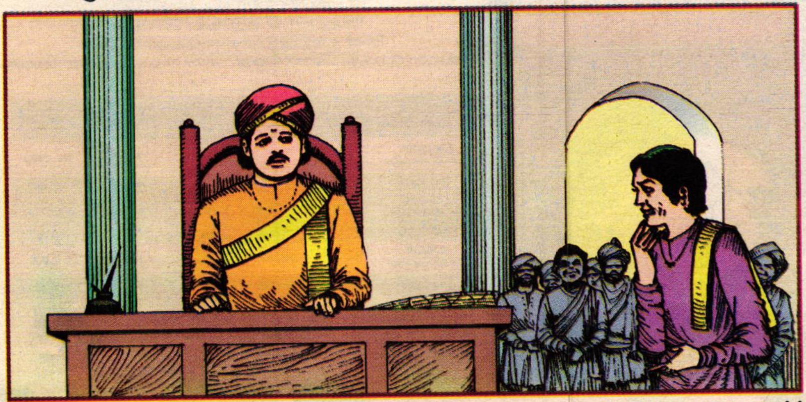

Avail the loyalty bonus!

Chandamama Subscribers will get flat 10% off on subscription renewals! (All Editions - within India)

Chandamama!

Because stories make the world go round...

Choose your Chandamama!
Go to www.chandamamashop.com & subscribe Now!!

You can also subscribe online at: **www.chandamamashop.com**

Chandamama is available in English and 11 regional languages. Junior Chandamama for children above 4 years is available only in English.

I want to subscribe to / gift / renew subscription for the following editions of Chandamama:

☐ English ☐ Telugu ☐ Tamil ☐ Kannada ☐ Hindi
☐ Marathi ☐ Gujarati ☐ Oriya ☐ Bengali ☐ Sanskrit
☐ Malayalam ☐ Assamese ☐ Junior (Only in English)

Name: ....

Date of Birth: .... Sex : ....

Address: ....

....

....

.... City: ....

State:.................... Pin:....................

Telephone:..

Mobile:..

Email:..

Subscription Number (for renewals):....................

Gift Subscription to the following address:

....

....

....

....

Enclosed Cheque/DD* for Rupees....................

Cheque/DD No ....

favouring Chandamama India Ltd on....................

....bank.

* Your subscription will commence in 6 weeks.
Please mail the subscription form to:
Chandamama India Limited,
P.O.Box No:19407, Mumbai-400093.
Phone +91 22 28312872 / 28311849
Email: subscription@chandamama.com
You can also subscribe online at : www.chandamamashop.com

Take Your Pick!	1 YEAR	2 YEARS	3 YEARS	4 YEARS	5 YEARS
ENGLISH (Rs. 30/- per copy)	Rs. 360	Rs. 645	Rs. 915	Rs. 1150	Rs. 1350
You Save		Rs. 75	Rs. 165	Rs. 290	Rs. 450
REGIONAL (Rs. 25/- per copy)	Rs. 300	Rs. 540	Rs. 765	Rs. 960	Rs. 1125
You Save		Rs. 60	Rs. 135	Rs. 260	Rs. 375
JUNIOR (Rs. 20/- per copy)	Rs. 240	Rs. 430	Rs. 610	Rs. 765	Rs. 900
You Save		Rs. 50	Rs. 110	Rs. 195	Rs. 300

** conditions apply

Annual Subscription Overseas : US $40 for English Chandamama, US $30 for Regional Languages, US $25 for Junior Chandamama (including shipping and handling charges) by air mail.

मेरी स्मृतियाँ - तेलुगु

जब मैं २६ वर्ष का था, तो मैं पर्यवेक्षण कैम्प्स में ग्राम पंचायतों में जाया करता था। एक बार, मैं रेलवे रोदुर पंचायत में था। पंचायत के कार्यालय के बगल में बच्चों का पुस्तकालय था। उस दिन रविवार था। मैं पुस्तकालय में चला गया। मैंने देखा कि पाँच-छः बच्चे एक बच्चे के पास बैठकर उसके कोई किताब समाप्त कर लेने की आतुरता से प्रतीक्षा कर रहे थे, जो किसी पत्रिका जैसी थी। उनमें से प्रत्येक ने किताब को बारी-बारी पढ़ा और फिर वहाँ से चले गए। प्रत्येक बच्चे ने उतनी ही रुचि और आतुरता से पत्रिका को पढ़ा था। मैंने भी उस पत्रिका को देखने की सोची और उसे पढ़ने के लिये उठा लिया। वह पत्रिका थी हमारी प्यारी चन्दामामा! मैं पत्रिका की सभी कहानियाँ और आलेख पढ़ लेने तक रुका नहीं। उसके पहले भी मैंने कुछ बाल पत्रिकाएँ पढ़ी थीं। लेकिन यह कहने में कोई अतिशयोक्ति न होगी कि उनमें से कोई भी चन्दामामा की बराबरी की नहीं थी। उस समय तक मैंने कहानियाँ लिखना शुरू कर दिया था। लेकिन मुझे सन्देह था कि मैं कोई ऐसी कहानी लिख सकूँगा जो चन्दामामा के लायक हो। फिर भी, मैंने अगले ही दिन एक बहुत ही छोटी कहानी लिखी और चन्दामामा को भेज दी।

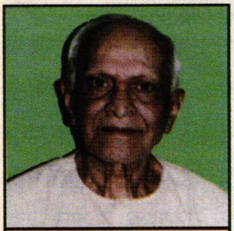

Name: Kolar Krishna Iyer
Occ: Retd. District Audit Officer, Tirupati.

उन दिनों, चन्दामामा के सम्पादक हमें यह सूचना पोस्टकार्ड के माध्यम से दिया करते थे कि वे हमारी कहानी को प्रकाशित करने के लिये चुन रहे हैं या नहीं। मैं अब भी उतना ही प्रसन्न होता हूँ जब मैं उस उत्तेजना के बारे में सोचता हूँ जो मुझे वह पोस्टकार्ड पढ़कर हुई थी। उसके बाद मैंने अपनी कहानियाँ अक्सर चन्दामामा को भेजना आरम्भ कर दिया। मैं भाग्यशाली था कि मेरी बहुत सी कहानियाँ चन्दामामा में प्रकाशन के लिये चुनी गईं। पाठकों को याद होगा कि चन्दामामा के फ़रवरी २०११ के अंक में मेरी पुरानी कहानी ''बंगारय्या की सम्पत्ति'' छपी थी।

लम्बे अन्तराल के बाद पिछले तीन माह से चन्दामामा में अपनी कहानियाँ फिर से देखकर मैं प्रसन्न हूँ। क्या अपनी कहानी चन्दामामा में छपना वास्तव में बहुत शानदार बात नहीं? चन्दामामा की अति लोकप्रियता के पीछे कई कारण हैं।

मैं कुछ सुझाव भी देना चाहता हूँ। पहले, आप 'चित्र पहेली' प्रतियोगिता रखते थे। वह एक बहुत लोकप्रिय स्तम्भ था। यदि आप उसे फिर शुरू कर सकें तो यह बहुत अच्छा होगा। आप विजेताओं के लिये आकर्षक पुरस्कारों वाली एक कहानी लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित कर सकते हैं। कहानियों के लिये आप एक विषय निर्धारित कर सकते हैं। इससे आपको प्रतिभागियों से बेहद अच्छी कहानियाँ मिलेंगी। किसी लेखक की कहानी प्रकाशन के लिये चुनी गई है या नहीं, इस बारे में उसे बताना बहुत महत्वपूर्ण है। सभी प्रमुख

पत्रिकाएँ इस नियम का पालन करती हैं। इस आशा के साथ कि कोई भी घर चन्दामामा के बिना नहीं रहेगा और यह कामना करते हुए कि चन्दामामा पत्रिका हमेशा पूर्ण चन्द्र के समान दमकती रहे।

मेरी स्मृतियाँ - मराठी

मैं ७६ वर्ष का हूँ। ५० वर्ष पूर्व, १९६१ में, मैं हाई स्कूल के प्रधानाध्यापक के रूप में पदस्थ हुआ। इस समय पर, प्राथमिक विद्यालय में मराठी 'चान्दोबा' आती थी। यह चेन्नई (मद्रास) से प्रकाशित होती थी। यह एक अजूबा ही था कि मराठी की पत्रिका तमिलनाडु से प्रकाशित हो रही थी, जो महाराष्ट्र से बहुत दूर है और जहाँ एक दूसरी ही भाषा बोली जाती है। मैं नियमित रूप से 'चान्दोबा' पढ़ता था। सभी कहानियाँ, रंगीन और सजीव चित्र मन को लुभाने वाले होते थे। मुझे 'चान्दोबा' स्कूल के पुस्तकालय से मिलती थी और मैं उसे ७-८ दिन बाद ही लौटाता था। 'विक्रम-बेताल' की कहानियाँ मेरी पसन्दीदा कहानियाँ थीं। मैं हमेशा सोचता था कि इतनी रुचिकर और दुर्लभ कहानियों का स्रोत क्या होगा। चित्रों का संग्रह भी बहुत उम्दा है। इसी कारण, अपनी ढलती उम्र में भी मैं उसी उत्सुकता से 'चान्दोबा' पढ़ता हूँ। मैं बहुत समय पहले 'चान्दोबा' में प्रकाशित दुनिया के सातों आश्चर्यों के चित्र भेज रहा हूँ। मेरे कई मित्रों ने इसे जानकारी युक्त और ज्ञानवर्धक माना। 'चान्दोबा' वास्तव में सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है। यह अब मुम्बई से प्रकाशित होती है, जो महाराष्ट्र में है। यह भाव मुझे बहुत आनन्द देता है। 'चान्दोबा' को मेरी शुभकामनाएँ।

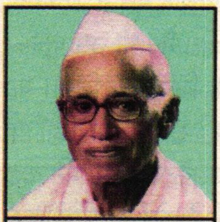

Name: D.T. Nandapure
Occ: Retd. Principal,
Loni, Maharashtra.

मेरी स्मृतियाँ - तेलुगु

मेरा नाम वाय सुवर्णकला है। मैं ६० वर्ष की हूँ। मुझे याद है कि मैं चन्दामामा को तब से जानती हूँ जब मैंने होश सम्भाला था। आज भी, जब चन्दामामा मेरे हाथ लग जाती है, तो मैं पूरा पढ़ लेने तक उसे छोड़ती नहीं हूँ। लेकिन मेरा इसे पढ़ने का तरीका थोड़ा अजीब है। मैं पिछले पन्ने से शुरू करके अगले आवरण पर इसे समाप्त करती हूँ।

Name: Y. Suvarnakala
Hyderabad, A.P.

मेरा दस वर्ष का एक पोता है। वह बिना कहानी सुने सोता नहीं है। मुझे उसे रोज़ एक कहानी सुनानी पड़ती है। इससे मुझे कभी-कभी लगता है कि चन्दामामा का प्रति माह एक ही अंक क्यों आता है?

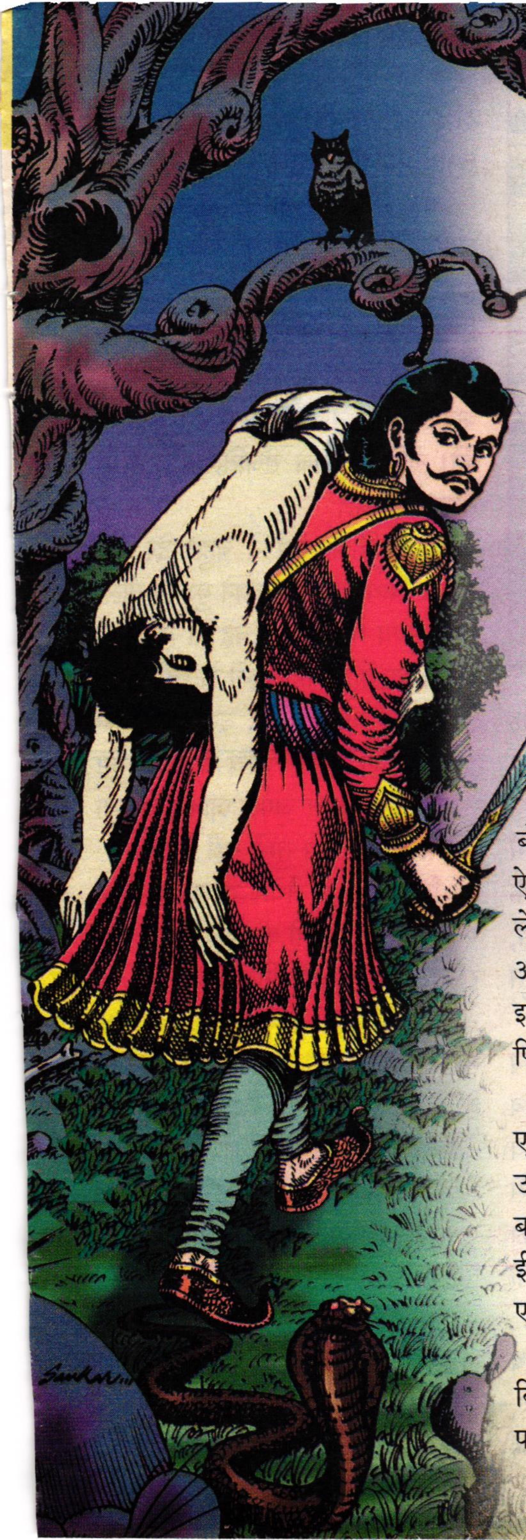

बेताल कथा

विराज का वैराग्य

राजा विक्रम बिना थके वापस पेड़ के पास आए। उन्होंने शव को पेड़ से नीचे उतारा और उसे अपने कंधे पर रख लिया। फिर शव को लादे हुए वे हमेशा की तरह चुपचाप श्मशान की ओर चल पड़े।

शव में छुपा बेताल हर बार की तरह बोल पड़ा, ''कुछ लोग कभी-कभी धन, ऐश्वर्य और पद के प्रति वैराग्य दिखाते हैं। लेकिन अन्त में, वे उन्हें प्राप्त कर लेते हैं और फिर उनका कार्य समरूप नहीं रहता। इस कहानी को सुनकर अन्दाज़ा लगाओ।'' फिर वह एक कहानी सुनाने लगा।

मालविका राज्य का राजा विचित्रवीर एक धर्मपरायण राजा था। बहुत समय तक उसके यहाँ कोई बच्चे नहीं थे। राजा-रानी ने बहुत सी पूजाएँ और यज्ञ करवाए। अन्त में ईश्वर की कृपा से रानी गर्भवती हुई। उन्होंने एक स्वस्थ बालक को जन्म दिया।

राजा-रानी ने अपने पुत्र का नाम विराज रखा और बड़े लाड़-प्यार से उसका पालन करने लगे। बहुत छोटी उम्र से ही,

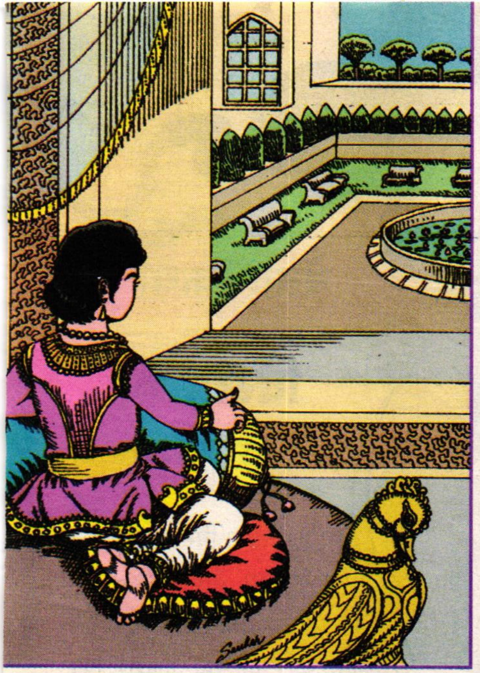

विराज की प्रवृत्ति दार्शनिक की थी। वह अकेले में बहुत सा समय सोच-विचार में लगाया करता था। उपयुक्त उम्र हो जाने पर राजा ने विराज को गुरुकुल में भेजा। विराज ने किसी राजकुमार के लिये उपयुक्त सभी कलाएँ सीख लीं, लेकिन उसने उनमें से किसी में भी बहुत गहरी रुचि न दिखाई।

अब विचित्रवीर बूढ़े हो गए थे। उन्होंने महसूस किया कि उनका प्रशासन अब पहले जैसा चुस्त नहीं था। उन्होंने तय किया कि वे राज्य के उत्तरदायित्व से मुक्त हो जाएँगे और अपने पुत्र विराज को प्रशासन की कमान सौंप देंगे जो युवा और सक्षम था।

राजा विचित्रवीर ने अपने पुत्र के साथ विचार-विमर्श किया। लेकिन विराज ने कहा, ''प्रिय पिताजी, मैं राजसी ठाठ-बाट में रुचि नहीं रखता। मैं तो जंगल जाकर तपस्वी बनना चाहता हूँ।''

यह सुनकर राजा को गहरा झटका लगा। ''प्रिय पुत्र, ये तुम क्या कह रहे हो? राज्य का शासन सम्भालना तुम्हारा उत्तरदायित्व है। तुम अभी जंगल जाकर तपस्या करने की आयु में नहीं पहुँचे हो,'' कहकर राजा ने उसे मनाने की कोशिश की। लेकिन विराज राजतिलक के लिये तैयार नहीं था।

राजा विचित्रवीर्य ने बहुत देर तक विचार किया। फिर वे अपने पुत्र से बोले, ''जो भाग्य में लिखा है वह तो होकर ही रहेगा। तुम पहले कुछ दिनों के लिये राज्य के दौरे पर जाओ। यदि उसके बाद भी तुम्हारी राजा बनने में रुचि न हो तो तुम अपनी इच्छानुसार जंगल जाकर तपस्या कर सकते हो। हम तुम्हें नहीं रोकेंगे।''

विराज इसपर तैयार हो गया। उसने एक सामान्य आदमी का वेश बनाया और राज्य का दौरा करने निकल पड़ा।

पूरे दिन यात्रा करने के बाद, वह एक गाँव में पहुँचा और उस रात एक किसान के घर में रुका। उसने देखा कि किसान और उसकी पत्नी किसी बात से परेशान थे। उसने उनसे पूछा, ''आप लोग परेशान लगते हैं। कृपया मुझे अपनी परेशानी का कारण बताएँ।''

किसान ने उत्तर दिया, ''नवयुवक, कुसमय वर्षा के कारण हमने अपने खातों की फसल खो दी। अब हमारे पास केवल कर्ज़ बचे हैं। हम राजा को अपनी परेशानी

बताना चाहते थे। लेकिन बीच में अधिकारी अड़े हैं और हमें राजा से नहीं मिलने दे रहे।''

मेरे कुछ सम्पर्क हैं जो राजा से मिलने में सहायता कर सकते हैं। मैं राजा से मिलकर उन्हें आपकी समस्या के बारे में बताऊँगा। कृपया चिन्ता न करें।'' यह आश्वासन सुनकर किसान और उसकी पत्नी को कुछ भरोसा हुआ और वे थोड़े मुस्कुराए। उन्होंने विराज से विनती की कि वह राजा से बात करना न भूले। रात बीतने के बाद विराज ने अपने वेष में ही उनसे विदा ली और आगे चल पड़ा।

कुछ दिन और यात्रा के बाद वह एक रात एक ब्राह्मण के घर रुका। उसने देखा कि ब्राह्मण थोड़ी-थोड़ी देर में अपनी पत्नी को दिलासा देता था। उत्सुकतावश विराज ने उससे पूछा कि माजरा क्या था।

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, ''हे नवयुवक, मैंने बहुत परेशानियाँ उठाकर अपनी बेटी के विवाह के लिये दस हज़ार मुद्राएँ बचाई थीं। एक सप्ताह पहले कुछ चोर मेरे घर में घुसकर वह धन चुरा ले गए। मेरी पत्नी इस बात से परेशान है कि अब हम अपनी पुत्री का विवाह कैसे करेंगे।''

विराज ने आश्चर्यपूर्वक पूछा, ''आपने इस बारे में स्थानीय कोतवाल के पास शिकायत दर्ज क्यों नहीं कराई?''

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, ''स्थितियाँ इतनी बदतर हो गई हैं कि मुझे अपने मामले पर उसका ध्यान केन्द्रित कराने के लिये कोतवाल को घूस देनी पड़ती। मेरे पास उसे घूस के लिये देने के लिये भी पर्याप्त धन नहीं है। हम बहुत चिन्तित हैं कि क्या करें क्योंकि हमें नहीं पता क्या करना चाहिये।''

''श्रीमान्, बहुत अच्छा होता यदि मेरे पास आपको देने के लिये कुछ और

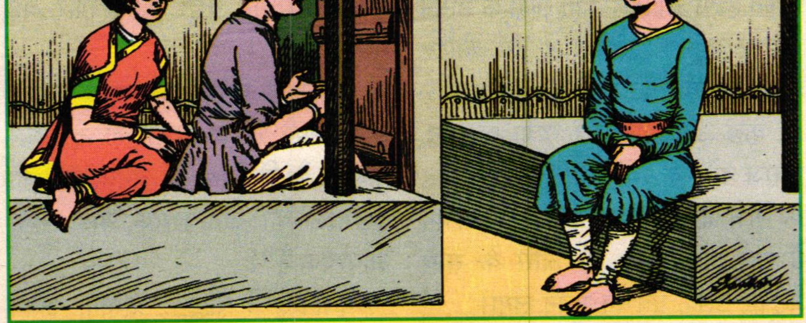

धन होता। फिलहाल आप यह थोड़ी सी राशि रख लें जिससे आप कम-से-कम अपना मामला दर्ज करा सकेंगे,'' कहकर विराज ने ब्राह्मण को कुछ मुद्राओं से भरी थैली दी।

इस दयालुता से ब्राह्मण का दिल भर आया। उसने वह थैली लेने से इन्कार कर दिया। लेकिन विराज ने ज़िद करके थैली उसे दे दी और बोला, ''मेरे कुछ सम्पर्क हैं जो मुझे राजा से मिलने में मदद कर सकते हैं। मैं आपकी व्यथा राजा के सामने अवश्य रखूँगा।'' ब्राह्मण ने उसे कोटि-कोटि धन्यवाद दिया।

कुछ और दिनों की यात्रा के बाद, विराज को एक साधु मिला जो एक पेड़ के नीचे बैठकर कुछ लोगों को प्रवचन दे रहा था। विराज भी औरों के साथ बैठकर उसके प्रवचन सुनने लगा।

प्रवचनों के बाद, वह तब तक रुका जब तक कि और सभी वहाँ से न चले गए। फिर उसने साधु को प्रणाम किया और उससे पूछा, ''मुझे लगता है कि आप साधु बनकर बहुत प्रसन्न होंगे।''

साधु मुस्कुराया और बोला, ''हाँ, नवयुवक मैं उत्तरदायित्व नामक बोझ से मुक्त होकर बहुत प्रसन्न हूँ।'' मुस्कुराकर विराज ने उससे कुछ देर और बातें कीं, और फिर अपने रास्ते चला गया।

कुछ देर बाद राजकुमार विराज ने एक झोंपड़ी देखी। वहाँ उसने एक अधेड़ उम्र के आदमी को दस बच्चों को भोजन कराते देखा।

इतने बड़े परिवार को देखकर आश्चर्यचकित विराज ने उससे बात करने की सोची। पास जाकर उसने अधेड़ से कहा, ''क्या ये सभी बच्चे आपके हैं श्रीमान्? काफ़ी बड़ा परिवार है!''

उस व्यक्ति ने उत्तर दिया, ''महोदय, मेरा नाम दयानन्द है। इनमें से दो बच्चे मेरे हैं। बाकी सभी अनाथ हैं। अपने साधनों से मैं इनकी उतनी देखभाल करता हूँ जितनी मेरे लिये सम्भव है। वास्तव में हमारा परिवार बड़ा है।'' फिर वह मुस्कुराया।

विराज ने पूछा, ''लगता है आपके लिये अपने दो बच्चों की ही देखभाल मुश्किल है। फिर क्या इन अनाथ बच्चों की देखभाल का अनावश्यक बोझ लेना आवश्यक है?''

दयानन्द ने कहा, ''श्रीमान्, अपने

साथी मनुष्यों के प्रति चिन्तित होना मेरी ज़िम्मेदारी है। यह बोझ कैसे हो सकता है? मुझे इसमें बहुत आनन्द मिलता है। आप भी हमारे साथ मिलकर हमारा सादा भोजन खाने को आमंत्रित हैं।''

विराज ने एक पल को सोचा, फिर दयानन्द के सामने सिर झुकाया और कहा, ''आपका जीवन वाकई धन्य है।'' फिर उसने दयानन्द का आतिथ्य स्वीकार किया और उनके साथ बैठकर भोजन किया।

कुछ देर उन बच्चों के साथ खेलने और दयानन्द से बातें करने के बाद वह वहाँ से आगे बढ़ा। वहाँ से वह बिना कहीं और रुके सीधे महल में गया।

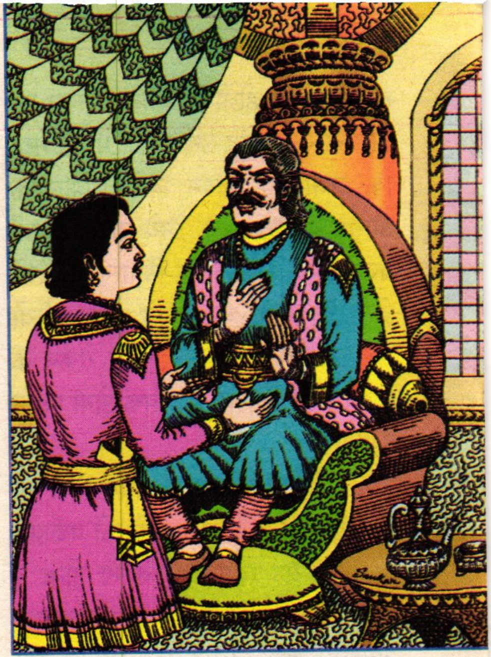

विराज अपने पिता के निजी कक्ष में उनसे मिलने गया और बोला, ''मैं राजसिंहासन पर बैठने को तैयार हूँ।''

प्रसन्न विचित्रवीर्य ने ऐसी निगाह से उसकी ओर देखा मानो वे जानते थे कि यही होगा और राहत पाने के स्वर में बोले, ''ईश्वर करे यह सबके हित में हो।''

गद्दी सम्भालने के बाद, विराज ने सबसे पहले घूसखोर अधिकारियों पर लगाम लगाने का आदेश दिया। उसने रिश्वत लेने वालों को दण्डित किया। चोरों को बन्दी बनाया गया और उन्हें कारावास में डाल दिया गया। उसने करों की मात्रा उचित की और लोगों ने उसे एक सुयोग्य शासक के रूप में मान दिया। राज्य अब योग्य हाथों में था।

इतनी कहानी सुनाकर बेताल ने कहा, ''राजा विक्रम, विराज दार्शनिक विचारों के साथ बड़ा हुआ था। उसमें राज्य का शासन करने के प्रति अरुचि थी। फिर अचानक उसका हृदय परिवर्तन होने और राजगद्दी का उत्तरदायित्व सम्भालने का कारण क्या था? क्या अब वह राजशाही को अलग दृष्टिकोण से देखता था? एक समय वह सोचता था कि राजा का जीवन ऐश-आराम से भरा होता है। क्या अब वह ऐसा नहीं सोचता था? या क्या अपनी थकाऊ यात्रा और दुःखभरी कहानियों के बाद अब उसे राजसी ठाठ-बाट रास आने लगा था? उसका दिमाग किस चीज़ से बदला होगा? यदि तुम जानते हुए भी इन प्रश्नों का जवाब नहीं दोगे तो तुम्हारा सिर फटकर सहस्त्रों टुकड़ों में बँट जाएगा।''

राजा विक्रम ने उत्तर दिया, ''बेताल, विराज को पहले लगता था कि राजा होना

ठाठ-बाट ही होता है। लेकिन राज्य का दौरा करने के बाद उसे समझ में आ गया कि राजा का जीवन किसी प्रकार के आराम को भोगने के लिये बल्कि अपनी प्रजा की कठिनाइयों के निवारण के लिये होता है। राजा को अपने अधिकारियों को उनके पद के दुरुपयोग से रोकने के ध्यान रखने के लिये प्रशासक होना पड़ता है।''

''उसे घूस लेने वाले अधिकारियों को दण्ड देना होता है। उसे चोरों को पकड़ना होता है। यह सुनिश्चित करना होता है कि उसकी प्रजा की मूलभूत आवश्यकताएँ, जैसे भोजन, कपड़ा और सिर छुपाने की जगह पूरी हो रही हैं। उसका कर्तव्य है कि वह अपने राज्य की शत्रुओं से रक्षा करे। राजा एक पिता के समान होता है जो अपने परिवार की रक्षा करता है। विराज यह समझ गया था। वह जिस साधु से मिला था वह मानता था कि कर्तव्य का बोझ होता है, एक सामान्य आदमी मानता था कि अनाथों की देखभाल उसका दायित्व है और वह उससे प्रसन्न था।''

''विराज समझ गया कि जब एक सामान्य मनुष्य इतने उत्तरदायित्व के साथ काम कर सकता था तो एक राजकुमार के रूप में राजा बनकर अपनी प्रजा का जिम्मा लेने के अपने कर्तव्य से उसे नहीं भागना चाहिये। इस कारण उसने निश्चय किया और राजसिंहासन पर बैठा।''

''वैराग्य, केवल उसी व्यक्ति को आनन्द दे सकता है जिसने सबकुछ त्यागा हो। लेकिन अपने कर्तव्य को निभाना व्यक्ति को सभी को प्रसन्नता देने का अवसर देता है। विराज ने राजतिलक के लिये हाँ इसीलिये किया क्योंकि वह उत्तरदायित्व और उत्तरदायत्व को नकारने के बीच का अन्तर समझ गया था।''

राजा विक्रम के इस प्रकार अपना मौन तोड़ते ही, बेताल शव सहित उनके कंधे से ग़ायब होकर फिर पेड़ पर जा लटका।

- एन. शिव नागेश्वर राव

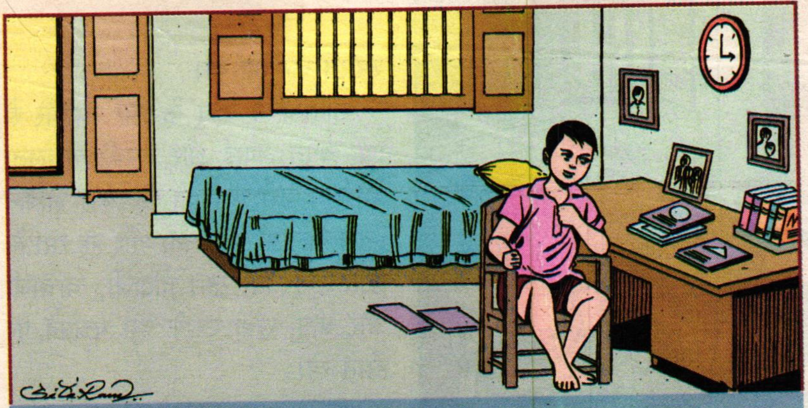

अच्छा काम

श्रीनू और बालू १४ और ९ वर्ष के थे और आपस में भाई थे। जहाँ श्रीनू शान्त बच्चा था वहीं बालू छोटा होने से बहुत खोजी प्रकृति का और चुप न बैठने वाला था। वह हमेशा कुछ ऐसा कर बैठता था जिससे वह स्वयं परेशानी में पड़ जाता था। गर्मी की छुट्टियों में दूसरे सभी बच्चों की तरह वे भी अपने दादा-दादी के पास रहने आए थे। वे अपना अधिकांश समय टेलीविज़न देखने में बिताते थे। एक दिन उनके दादाजी ने उनसे कहा, ''पूरे दिन टीवी देखने की जगह जाओ और घर के आस-पास कुछ उपयोगी काम करो।''

अगली सुबह बालू जल्दी उठ गया और अपने बड़े भाई श्रीनू को ढूँढ़ने लगा। उसने पाया कि उसका बड़ा भाई उससे भी पहले उठकर बगीचे में काम कर रहा था। ''श्रीनू दादाजी को खुश करने के लिये कड़ी मेहनत कर रहा है। मुझे भी कुछ करना होगा!'' नन्हें बालू ने सोचा।

कुछ सोचकर वह दादाजी के कमरे में गया। वहाँ उसने बहुत से पुराने काग़ज़ और किताबें देखीं। बालू ने उन सभी काग़ज़ों को इकट्ठा किया और बाँधकर गली के नुक्कड़ पर धनिया की परचून की दुकान पर ले गया और उसे बेच दिया।

उस शाम जब दादाजी लौटे, तो वे बगीचे में नई खुदी छोटी नालियों को देखकर दंग रह गए जिनमें से पानी बहकर जा सकता था। इतनी सफ़ाई से किया हुआ काम देखकर दादाजी श्रीनू की तारीफ़ करने लगे। श्रीनू अपनी तारीफ़ से बहुत खुश हुआ।

फिर दादी बाहर आईं। उन्होंने बालू की ओर इशारा करके दादाजी से कहा, ''आज बालू ने भी बहुत काम किया है। उसने पुराने काग़ज़ और अख़बार १००

एम. आनन्द राव

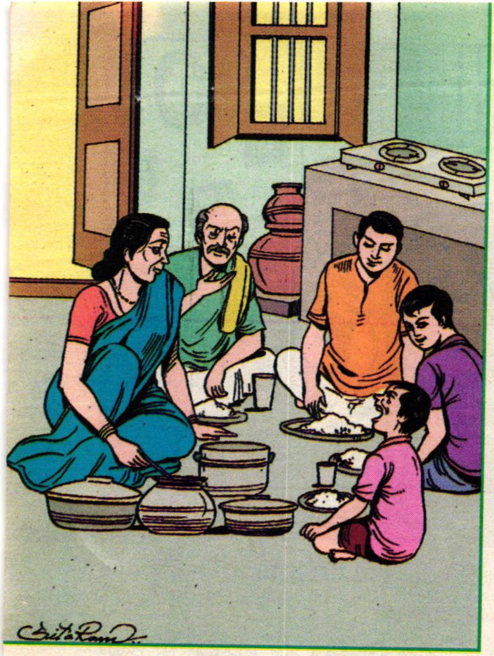

रुपये में बेचे हैं।''

दादाजी ने प्रसन्नता से कहा, ''बहुत अच्छे! वे तुम्हें कहाँ मिले?''

बालू ने उत्तर दिया, ''आप ही के कमरे से दादाजी!''

दादाजी ने सदमे की सी अवस्था में कहा, ''हे राम! मैंने उन्हें कितनी मुश्किल से इकट्ठा किया था,'' और जल्दी-जल्दी चलते हुए अपना कमरा देखने गए। अपनी किताबें वहाँ न देखकर वे गुस्से में कबाड़ी के यहाँ उन्हें वापस लेने गए। नन्हें बालू का चेहरा उतर गया।

रात हो चुकी थी। श्रीनू और बालू के चाचा, जो उसी गाँव में रहते थे, उनसे मिलने आए। वे सभी आम के पेड़ के नीचे बैठ कर परिवार के बारे में बातें कर रहे थे। बड़ों की बातें सुनकर बालू परेशान हो रहा था और बीच-बीच में बोल कर शरारतें कर रहा था।

दादीमाँ ने बालू के सिर में धीरे से एक चपत लगाई और उसकी चंचलता के लिये उसे प्यार से झिड़का। लेकिन इससे बालू को बुरा लगा और वह रात के खाने तक रोता रहा। दादाजी, चाचाजी और श्रीनू, सभी उसके इस बचपने पर हँसते रहे।

रात के आठ बज चुके थे। बालू घर में कहीं न था। चाचाजी उनके घर जा चुके थे। दादाजी और श्रीनू बालू को घर के बाहर बालू को ढूँढ़ने गए। कुछ देर बाद दादी ने श्रीनू को अकेले वापस आते देखा और उनकी आँखों से आँसू बहने लगे। लेकिन तभी श्रीनू को चॉकलेट का एक काग़ज़ फ़र्श पर उड़ता दिखाई दिया। उसने कहा, ''प्रिय दादीमाँ, मेरे यहाँ से जाने के बाद बालू वापस आया है। यह चॉकलेट का काग़ज़ मेरे जाने के समय यहाँ नहीं था।''

तभी दादाजी भी आ गए। श्रीनू ने देखा कि दुछत्ती पर जाने के लिये इस्तेमाल होने वाली रस्सी की सीढ़ी दिखाई नहीं दे रही थी। ''दादाजी, पक्का वह दुछत्ती पर ही है,'' उसने दृढ़ता से कहा।

उन्होंने बालू को ज़ोर से पुकारा, लेकिन कोई उत्तर न आया। श्रीनू ने दुछत्ती के नीचे एक मेज रखकर उसपर एक और छोटी मेज रखी। फिर वह उस मेज पर चढ़कर अपने पंजों के बल खड़ा हो गया। उसे दुछत्ती में बालू सोता दिखाई दिया। फिर श्रीनू ने एक आइना

लेकर उसे ४५ डग्री के कोण पर पकड़कर बालू का बिंब दादीमाँ को दिखाया। फिर वह बोला, ''पुराने ज़माने के यूनान में, लोग ४५ डिग्री के कोण पर आइना रखकर देखते थे कि गली में कौन खड़ा है। मैंने यह अपनी स्कूल के पुस्तकालय में पढ़ा था,'' और सभी राहत से मुस्कुरा उठे।

दादाजी ने सुझाव दिया कि उन्हें बालू को जगाने का प्रयास नहीं करना चाहिये क्योंकि दुछत्ती काफ़ी बड़ी और सुरक्षित थी और वह वहाँ से लुढ़क कर नीचे नहीं गिर सकता था। फिर भी, उन्होंने सुरक्षा के लिये वहाँ तकिये रखे और फिर सभी अपने बिस्तरों पर लौट आए।

आधी रात के बाद, दो चोर घर में घुसे। बालू दादी माँ के चिल्लाने के कारण नींद से जाग गया। एक चोर दादी माँ के गले से सोने की चेन खींचने की कोशिश कर रहा था। दूसरे ने दादाजी की गरदन पर एक छुरी रख रखी थी जिससे वे मदद के लिये न चिल्ला सकें। श्रीनू उस चोर का पैर पकड़कर उसे पीछे खींचने की कोशिश कर रहा था।

बालू की समझ में आ गया कि क्या हो रहा था। उसने दुछत्ती से आम के अचार की एक बरनी उठाई और उसे ठीक उस चोर के सिर पर पटक दिया जो सोने की चेन छीनने की कोशिश कर रहा था। चोर के सिर पर बाल कम होने से भी उसे इससे बहुत चोट लगी और वह जहाँ खड़ा था वहीं ज़मीन पर गिर पड़ा। इसका फ़ायदा उठाकर दादाजी और श्रीनू ने दूसरे चोर को पकड़ लिया। बालू दुछत्ती से नीचे उतरा और दूसरे चोर के पैर की पिंडली पर काट लिया। फिर बालू बाहर की ओर दौड़ा और मदद के लिये चिल्ला-चिल्ला कर सारे मुहल्ले को जगा दिया।

लोग दौड़े आए और उन्होंने चोरों को बाँध दिया। चोरों को पुलिस के हवाले किये जाने के लिये ले जाए जाने के बाद सभी लोगों ने नन्हें बालू के सही समय पर प्रतिक्रिया करने पर उसकी प्रशंसा की। दादीजी और दादी ने बालू को कसकर गले लगाया। वह बहुत प्रसन्न था।

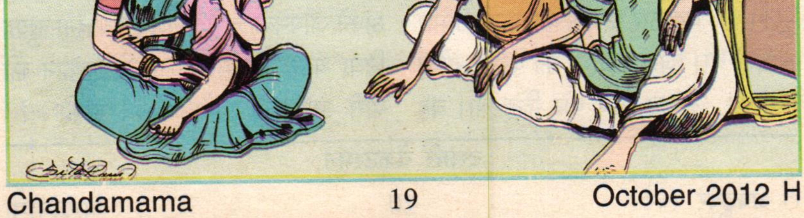

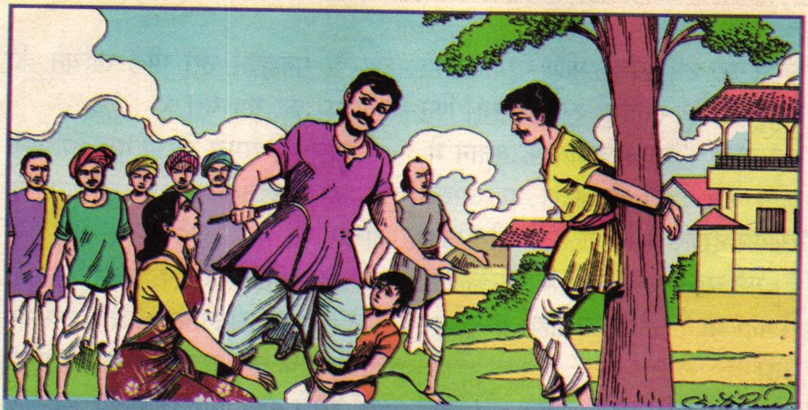

व्यवस्था

त्रिधाम नामक एक सन्त अपने शिष्य महेन्द्रगिरि के साथ देश में भ्रमण कर रहे थे। एक दिन वे दोनों रास्ते के एक गाँव में रुके। जब गुरु-शिष्य यह पता कर रहे थे कि क्या उन्हें उस गाँव में एक रात रुकने लायक स्थान मिल सकता है, तो उन्होंने एक विचित्र दृश्य देखा।

एक दुबला-पतला आदमी एक पेड़ से बँधा था। एक लम्बा और शक्तिशाली आदमी उसे कोड़े मार रहा था। दुबले-पतले आदमी की पत्नी और उसका छः वर्ष का पुत्र शक्तिशाली आदमी के पैरों में पड़कर उससे उस आदमी को न मारने की विनती कर रहे थे। उनके आस-पास बहुत सी भीड़ जमा हो गई थी।

महेन्द्रगिरि को पता लगा कि उस आदमी को मारने वाले व्यक्ति का नाम भुजंग था। वह उस इलाके का सबसे अमीर आदमी था। जिस आदमी को पेड़ से बाँधा गया था, उसका नाम वीर सिंह था। वह और उसका परिवार हमेशा से भुजंग के लिये काम करते थे। इसका कारण यह था कि तीन पीढ़ी पहले वीर सिंह के पूर्वजों ने भुजंग के पूर्वजों से कुछ उधार लिया था। वह उधार आज तक चुकता नहीं हुआ था। तीन पीढ़ियों तक, वीर सिंह के परिवार के सभी सदस्य अपना उधार चुकाने के लिये भुजंग के परिवार के लोगों के लिये काम करते रहे। बच्चों समेत सभी को उसके यहाँ बँधुआ मज़दूर का काम करना पड़ रहा था।

वीर सिंह का बड़ा बेटा सूर्या बहुत तीव्रबुद्धि था। वह भुजंग के मवेशियों की देखभाल करता था। धीरे-धीरे वह दुनियादारी से परिचित हो गया। एक दिन उसने भुजंग से सवाल किया, "मेरे पुरखों ने आपसे कितना कर्ज़ लिया था? उन्होंने अपने जीवनकाल में उसमें से कितना चुका दिया था? जब मेरे पिता की चुकाने की बारी आई तब कितना कर्ज़ बाकी था?

दसारि वेंकटरमन

हम सभी आपके खेतों में आपके लिये काम कर रहे हैं। आप हमारी मज़दूरी का हिसाब कैसे रख रहे हैं?''

इन तीखे और एक के बाद एक सवालों को सुनकर भुजंग हतप्रभ रह गया। उसने कभी सोचा भी न था कि कोई उससे ऐसे प्रश्न पूछेगा। नाराज़ होकर उसने सूर्या की पिटाई करवा दी।

इससे दुःखी होकर सूर्या घर छोड़कर बेहतर रोज़गार की तलाश में कहीं चला गया। अब भुजंग ने सूर्या को वापस लाने के लिये वीर सिंह को परेशान करना शुरू कर दिया। वह कहता था कि सूर्या अपना काम छोड़कर गया है इसलिये उसे वापस आना चाहिये।

गुरू त्रिधाम और शिष्य महेन्द्रगिरि वीर सिंह के परिवार की स्थिति को जानकर द्रवित हो गए।

महेन्द्रगिरि भीड़ में मिल गया और ज़ोर से बोला, ''यह बहुत अन्याय है। पहले हमें यह बताओ कि वीर सिंह पर तुम्हारा कितना कर्ज़ बकाया है?'' यह आवाज़ सुनकर भीड़ में फुसफुसाहट शुरू हो गई। फिर धीरे-धीरे लोगों की आवाज़ें तेज़ होने लगीं। वे भी वही माँग करने लगे।

तब साधु त्रिधाम ने अपने गरजदार आवाज़ में ज़ोर से कहा, ''यह तुम्हें हम सभी को अभी बताना होगा।''

भुजंग ने त्रिधाम को ऊपर से नीचे तक देखकर उनकी हँसी उड़ाते हुए कहा, ''क्यों? क्या तुम उसका ऋण चुकाओगे?''

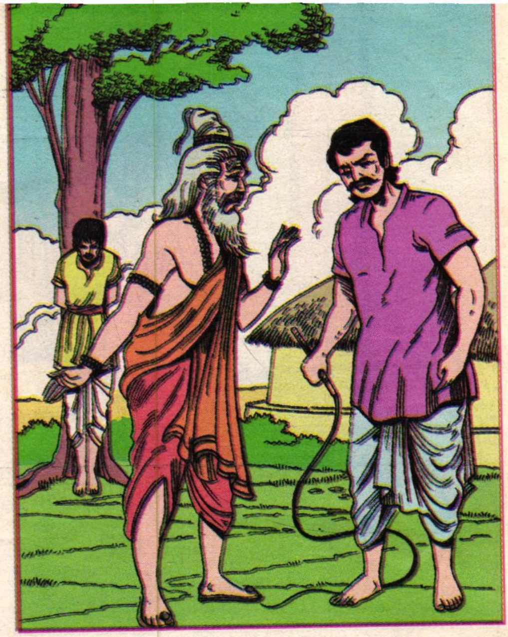

त्रिधाम ने उत्तर दिया, ''तुम्हारे लिये यह जानना आवश्यक नहीं है। या तो तुम यह बताओ कि इसे तुम्हें कितना धन चुकाना है, या फिर तुम्हें वीर सिंह के परिवार को हमेशा के लिये मुक्त करना होगा।''

अब भुजंग थोड़ा हड़बड़ाया। त्रिधाम के स्वर की दृढ़ता और आदेशात्मक लहजे ने उसे थोड़ा विचलित कर दिया था। अतः उसने अपने मन में आया कोई भी अंक बक दिया।

साधु त्रिधाम ने सीधे भुजंग की आँखों में देखकर पूछा, ''क्या तुम्हारे पास कोई दस्तावेज़ हैं जो यह बताएँ कि इसपर तुम्हारा यह कर्ज़ है?''

भुजंग क्रोधित हो गया। ''इनके पुरखों ने मेरे पुरखों से कर्ज़ लिया था। एक काम करते हैं। हम वीर सिंह से ही पूछ लेते हैं

कि क्या उसपर मेरा कोई कर्ज़ नहीं है?''

सभी वीर सिंह की ओर देखने लगे। वीर सिंह ने अपना सिर झुका लिया। जब त्रिधाम ने उसे उत्तर देने को कहा, तो वीर सिंह फूट-फूट कर रोने लगा। ''मैं क्या कहूँ श्रीमान्? मेरे दादाजी ने मेरे पिताजी से कहा था कि हमारे परिवार पर इनके परिवार का कर्ज़ है। फिर मेरे पिता ने यही बात मुझसे कही। मैंने कभी इनसे नहीं पूछा कि हमें कितना चुकाना है, न ही इन्होंने कभी बताया।''

त्रिधाम भुजंग वाले चबूतरे पर चढ़कर उसके सामने बैठ गए। उन्होंने अपने पैर में पहना हुआ कड़ा निकालकर भुजंग के हाथ में दिया। ''कृपया इसे अपने कर्ज़ की अदायगी समझकर रख लो और वीर सिंह के परिवार को मुक्त कर दो।''

भुजंग ने उनके हाथ से कड़ा लेकर उसे उलट-पलटकर देखा। फिर बोला, ''यदि मैं इसे ले भी लूँ तो भी कुछ कर्ज़ बाकी रह जाएगा।''

अब त्रिधाम पलटकर वहाँ खड़े लोगों से बोले, ''वीर सिंह का परिवार केवल अपने पूर्वजों के शब्दों के आधार पर भुजंग के परिवार की बँधुआ मज़दूरी कर रहा है। वे अपने प्रति हो रहे अन्याय और अत्याचार को सह रहे हैं। स्वतंत्रता के बिना मनुष्य मृत समान है। इसलिये मैं इसे वह कड़ा दे रहा हूँ जिसे इस राज्य के राजा ने स्वयं मेरे पैर पर पहनाया था।'' फिर वे भुजंग की ओर देखकर दृढ़ता से बोले, ''यह कड़ा सोने का बना है और इसमें कई कीमती पत्थर जड़े हैं। मुझे इसकी असली कीमत तो नहीं पता, लेकिन यह जानता हूँ कि इसे बेचकर जितना धन मिल सकता है, उससे मैं तुम जैसे सौ आदमी ख़रीद सकता हूँ। मैं अपने शिष्य के साथ तब तक यहाँ बैठूँगा जब तक तुम यह न मान लो कि वीर सिंह का ऋण चुकता हो गया है।''

राजा का नाम सुनने पर भुजंग घबराया। जिस हाथ में उसने कड़ा पकड़ रखा था, वह थोड़ा सा थरथराया। फिर बिना एक पल भी बिगाड़े उसने कहा, ''वीर सिंह का ऋण चुक गया है। कृपया यह आभूषण आप अपने ही पास रखें,'' और कड़ा त्रिधाम के हाथ में देकर वहाँ से चलता बना।

साधु त्रिधाम ने वीर सिंह के परिवार को पास बुलाया और बोले, ''शहर पहुँचकर मैं राजा के सैनिकों की मदद से तुम्हारे बेटे

सूर्या को खोजने का प्रयास करूँगा,'' और वहाँ से चल पड़े।

महेन्द्रगिरि इस पूरे मामले के बारे में सोचता रहा। वे सभी कुछ बोल क्यों न सके? क्यों वे इतने पुराने ऋण के लिये अमानवीयता सहते रहे जिसका अब कोई अर्थ नहीं रह गया था? पीढ़ियाँ बदल चुकी थीं और ऋण का कोई हिसाब भी नहीं था। फिर, ऐसा क्या था जिसने उन्हें इस प्रकार के ऋण के प्रति ज़िम्मेदार बना रखा था? वह क्या था जिसके कारण वे बँधुआ मज़दूरों की तरह काम कर रहे थे? अगली दोपहर, जब वे एक तालाब के किनारे विश्राम करने के लिये रुके, तो महेन्द्रगिरि ने त्रिधाम के समक्ष अपनी शंका जाहिर की। त्रिधाम ने मुस्कुराकर पास के एक पेड़ से बँधे हुए एक हाथी की ओर इशारा किया। उन्होंने पूछा कि वह क्या देख रहा था। ''एक हाथी,'' महेन्द्रगिरि ने कहा। त्रिधाम ने कहा, ''ध्यान से देखो। जब तुम्हारा इसके एक रोचक तथ्य की ओर ध्यान जाएगा तो तुम्हें बड़ा आश्चर्य होगा। फिर मुझे भी बताना वह क्या है।''

महेन्द्रगिरि ने कुछ देर तक गौर से देखा। फिर वह समझा कि उसके गुरु उसे क्या समझा रहे थे। इतने विशाल हाथी को एक मामूली ज़ंजीर से उस पेड़ से बाँधा गया था। यदि हाथी उसे थोड़ा सा भी झटका देता, तो ज़ंजीर टूट जाती। संत त्रिधाम को अपने शिष्य के दिमाग़ में चल रही बातें जैसे पता लग गईं। उन्होंने कहा, ''जब हाथी छोटा होता है, तब वह इस ज़ंजीर से छूट जाने का प्रयास करता है। लेकिन तब वह इसे तोड़ नहीं सकता। फिर जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, वह समझ लेता है कि छूट जाने की इच्छा करना बेकार है। दो व्यक्तियों के बीच के अनुबन्ध भी इसी प्रकार हैं। इनसे व्यक्ति मानसिक ज़ंजीरों में बँध जाता है। हाथी एक जानवर है। अतः उसके लिये इस प्रकार छूटना मुश्किल है। लेकिन सूर्या जैसे लोग भुजंग जैसों की पकड़ से छूटने में मदद करने के लिये वीर सिंह जैसों को इन अनुबन्धों की कमियों का अहसास कराएँगे।''

महेन्द्रगिरि को अपने गुरु की बात समझ में आ गई थी।

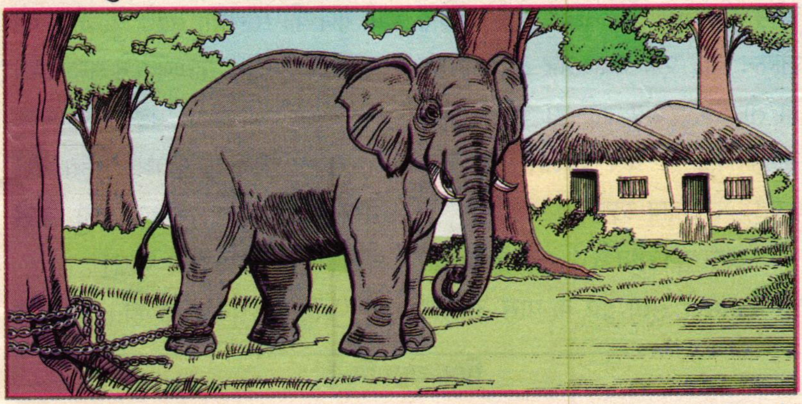

पंचतंत्र

हिरण्यक ने लघुपतनक से कहा, ''हम दोनों में मैत्री संभव नहीं है।'' इस पर लघुपतनक (कौए) ने यों बताया, ''तुमने चित्रग्रीव तथा उसके अनुचरों को जाल से मुक्त किया, इस पर मैं बडा प्रसन्न हुआ। इसीलिए मैं तुम्हारी मैत्री चाहता हूँ।''

''तुम खानेवाले हो और मैं आहार हूँ, इसलिए हम दोनों के बीच मैत्री कैसे हो सकती है? मैत्री तथा शत्रुता के लिए भी जन्म तथा संपदा में समानता होनी चाहिए, लेकिन यदि एक धनी और दूसरा निर्धन हो तो मैत्री संभव नहीं है। इसलिए तुम तुरन्त यहाँ से चले जाओ।'' हिरण्यक (चूहे) ने जवाब दिया।

''अगर तुम सुरंग में से बाहर न आओगे तो मैं तुम्हारे सुरंग द्वार के पास अनशन करके अपने प्राण त्याग दूँगा। इसका पाप तुम्हारे सिर लगेगा,'' लघुपतनक ने चुनौती दी।

''तुम्हारी बातें कैसी अस्वाभाविक हैं? मैं अपने सहज शत्रु के साथ कैसे मैत्री कर सकता हूँ? बुजुर्गों की बातें क्या तुमने नहीं सुनीं कि शत्रु गिड़गिड़ाये या मिन्नत भी करे तो, चाहे समान भाव भी क्यों न रखते हो, उसके साथ मैत्री नहीं करनी चाहिये। आख़िर गरम जल भी गुण की साम्यता रखते हुए आग को बुझा देता है न?'' हिरण्यक ने समझाया।

''तुम्हारी बातें भी सहज कैसे कही जा सकती हैं? तुमने मेरा चेहरा देखे बिना मुझे अपना सहज शत्रु कैसे माना?'' लघुपतनक ने पूछा।

''शत्रु दो प्रकार के होते हैं। कुछ

मित्र-सम्प्राप्ति-३

लोग जाति के शत्रु होते हैं, कुछ लोग अनेक कारणों से शत्रु बन जाते हैं। तुम मेरी जाति के शत्रु हो। जीवन निर्वाह के कार्यों में यदि किन्हीं कारणों से शत्रुता पैदा होती है तो उसे होशियारी के साथ हल किया जा सकता है। परंतु जाति की शत्रुता किसी एक की मृत्यु से ही खत्म होती है।'' हिरण्यक ने कहा।

''कृपया मुझे यह बताओ कि इन दोनों प्रकार की शत्रुता के बीच के अन्तर को कैसे जाना जा सकता है?'' कौए ने पूछा।

इस पर चूहे ने यों उत्तर दिया।

''संपर्क के कारण जो शत्रुता पैदा होती है, उसका कोई न कोई विशेष कारण होता है। उस कारण को दूर करें तो शत्रुता भी मिट जाती है। नेवला तथा साँप, शाकाहारी तथा मांसाहारी जानवर, जल और अग्नि, धनी और दरिद्र, सिंह तथा हाथी, शिकारी और हिरण, दार्शनिक और नास्तिक, विवेकशील तथा मूर्ख, शीलवती तथा दुराचारिणी, आदर्श व्यक्ति तथा दुष्ट, देवता और राक्षस - इनके बीच स्वाभाविक शत्रुता होती है। इनमें से कोई भी वर्ग दूसरे वर्ग का सम्पूर्ण विनाश नहीं कर सकता। मगर उनके बीच संघर्ष सदा चलता ही रहता है। एक वर्ग के मन में यह व्यथा है कि वह दूसरे वर्ग को मिटा न पाया। ऐसी शत्रुता का कोई हल नहीं है।''

''ऐसी शत्रुता अनर्थकारी है। विवेकशील व्यक्ति को चाहिये कि नये मित्रों का संपादन करे, उन्हें पुरानी शत्रुता को बढ़ाना नहीं चाहिए। इसलिए तुम मेरे साथ मैत्री करके इसके परिणाम की परीक्षा लो।'' कौए ने समझाया।

इस पर चूहे ने यों जवाब दिया।

''हो सकता है कि तुम उत्तम स्वभाव के हो। मेरा अहित करने की कामना तुम न रखते हो, फिर भी हमारी मैत्री के द्वारा कोई हित नहीं होता। अन्त में प्रकृति का स्वभाव ही विजयी होगा। तुम कह सकते हो कि तुम्हारा स्वभाव उत्तम है, इसलिए किसी की भी शत्रुता मेरी हानि नहीं कर

सकती। मगर पाणिनी नामक एक वैयाकरण को एक सिंह ने मार डाला है। जैमिनी नामक एक दार्शनिक को एक हाथी ने यूँ ही मार डाला। पिंगल नामक एक वेद पंडित को मगर-मच्छ ने निगल डाला।''

कौए ने इसके उत्तर में कहा, ''तुम्हारा कहना सत्य है। मगर मेरी भी बातों को सुनो। मैत्रीभाव तो मनुष्यों के बीच परस्पर सहयोग के द्वारा पैदा होता है। उत्तम लोगों के बीच प्रथम संदर्शन में ही मैत्रीभाव पैदा होता है। मैं अत्यन्त उत्तम प्रकृति का हूँ, मैं तुम्हें वचन देता हूँ, कि तुम्हारा कभी अहित न करूँगा।''

''तुम्हारे वचन पर मेरा कोई विश्वास नहीं है। शत्रु के वचनों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। जो व्यक्ति शत्रुओं पर विश्वास नहीं करता उसे देवता भी मार नहीं सकते। इन्द्र ने दिति के गर्भ में छिद्र बनाया। क्योंकि दिति ने उस पर विश्वास किया। इसलिए शत्रु पर कभी भी विश्वास नहीं करना चाहिए। बलवान व्यक्ति भी विश्वास करने के कारण दुर्बलों के हाथों विनाश को प्राप्त होते हैं।'' चूहे ने समझाया।

ये बातें सुन कौआ थोड़ी देर तक स्तब्ध रह गया। वह सोचने लगा, ''यह चूहा कैसी नीति जानता है। इसके साथ मैत्री करने की कामना मेरे भीतर बढ़ती जा रही है, घटती नहीं।''

अंत में वह बोला, ''हे हिरण्यक! कहा जाता है कि सात क़दम मिलाकर चलने से दो व्यक्ति मित्र हो जाते हैं। इस सुदीर्घ वार्तालाप के द्वारा तुम अप्रयत्न ही मेरे मित्र बन गये हो। इस प्रकार हम प्रतिदिन यों वार्तालाप कर सकते हैं न?''

कौए की बुद्धिमत्ता तथा उसकी बातों की सचाई को भाँपकर चूहा बोला, ''ऐसा कर सकते हैं, लेकिन तुम्हें कभी भी मेरी सुरंग में प्रवेश नहीं करना चाहिए।''

इस शर्त को कौए ने मान लिया।

(क्रमशः)

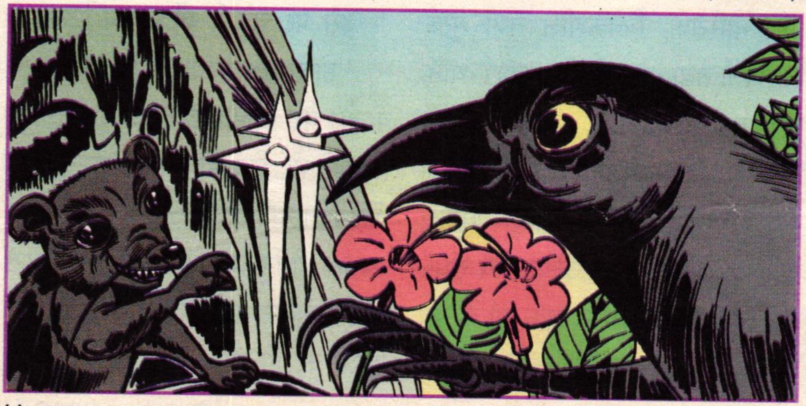

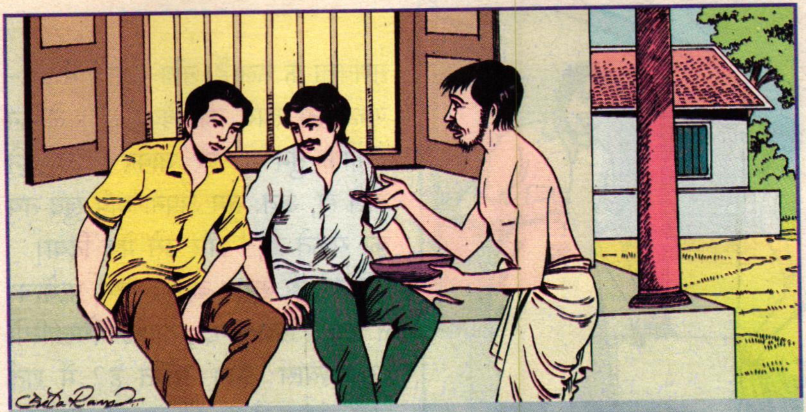

वासव की व्यावसायिक बुद्धि

पुरन्दर और परमेश्वर अच्छे मित्र थे। वे दोनों बहुत अच्छे व्यापारी थे। एक कपड़े का व्यापारी था जबकि दूसरा खुदरा व्यवसायी था। दोनों ने कड़ी मेहनत की और उचित मार्ग से धन कमाया। वे महीने में एकाध बार मिलकर अपने व्यवसायों में होने वाली नई बातों पर चर्चा कर लेते थे।

उस दिन परमेश्वर पुरन्दर के घर उससे मिलने आया। वे घर के बाहर बैठकर बातें कर रहे थे कि एक भिखारी वहाँ आकर भोजन माँगने लगा।

परमेश्वर ने उसे गुस्से में डाँटा। ''तुम इस प्रकार भीख क्यों माँग रहे हो? तुम अपाहिज तो नहीं लगते। फिर तुम कोई काम क्यों नहीं ढूँढ़ लेते?''

''बाबूजी, मैंने अपने माता-पिता को नहीं देखा। होश सम्भालने पर मैंने अपने आपको सड़कों पर ही घूमता पाया। ऐसे में, कौन मुझ पर विश्वास करके मुझे काम देगा?'' भिखारी ने बहुत दीन स्वर में उत्तर दिया। पुरन्दर को उसकी बात सुनकर बहुत दुःख हुआ। पहले उसने भिखारी को भोजन कराने का इन्तज़ाम किया। फिर उसने उससे पूछा, ''तुमने अपना नाम क्या बताया?''

''बाबूजी, मेरा नाम वासव है,'' उसने दीनता से कहा।

''प्रिय वासव, तुम शरीर से शक्तिशाली हो। तुम्हें चाहिये कि अपना दिल कड़ा करके कुछ काम ढूँढ़ो। इस प्रकार भीख माँगना तुम कब तक जारी रख सकते हो? तुम अपने दिमाग का उपयोग करके कुछ आजीविका का साधन क्यों नहीं तलाशते?'' पुरन्दर ने पूछा।

''बाबूजी, यदि आप मुझपर भरोसा करके मुझे कुछ काम दे दें, तो मैं निश्चित ही उस काम को पूरा करूँगा,'' वासव ने अपनी भूख शान्त होने का अहसान मानते हुए कहा।

ए. हेमावती

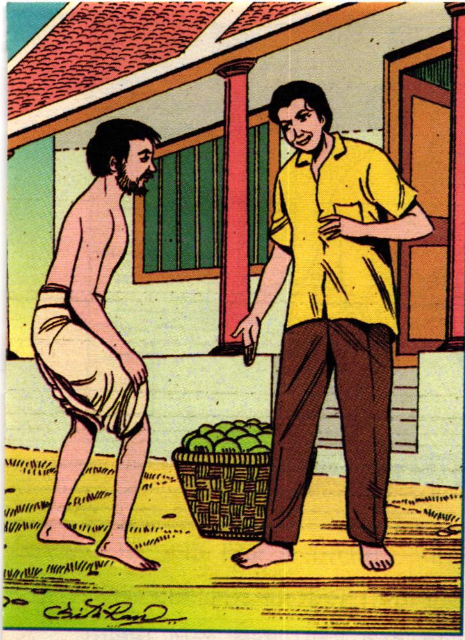

पुरन्दर ने एक क्षण के लिये सोचा। फिर उसने कहा, ''ठीक है, मैं तुम्हें हापुस आमों से भरी हुई एक टोकरी देता हूँ। उन्हें बेचकर मुझे उनका पैसा लाकर दो। यदि तुम अपनी सच्चाई साबित कर दो तो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा।''

तब उसने कुछ पुराने कपड़े खरीदकर वासव को दिये और कहा, ''यदि तुम फटे-पुराने कपड़े पहनकर आम बेचोगे, तो कोई तुमसे आम नहीं खरीदेगा। ये कपड़े पहनो।''

फिर उसने अपने नौकरों में से एक से एक टोकरी आम लाकर देने को कहा और आम वासव को दे दिये। वासव ने कहा, ''श्रीमान्, कृपया आप मुझे इन आमों का बाज़ार भाव बता दें।''

पुरन्दर उसकी विचारशीलता से प्रसन्न हुआ। उसने कहा, ''ये बहुत अच्छी गुणवत्ता के फल हैं। गाँव के मेले में एक-एक बीस रुपये का बिकता है। लेकिन क्योंकि तुम घर-घर जाकर इन्हें बेचने वाले हो, अतः तुम अपना भाव खुद तय कर सकते हो,'' और उसे भेज दिया।

जैसे ही वासव वहाँ से गया, परमेश्वर ने कहा, ''प्रिय पुरन्दर, क्या इन भिखारियों पर विश्वास करना उचित है? मैं शर्त लगा सकता हूँ कि वह यह टोकरी लेकर भाग गया है और अब कभी वापस नहीं आएगा। वह बिना कहीं गए तीन दिन तक उनपर बसर कर सकता है। फिर वह किसी और गाँव में चला जाएगा। तुमने एक टोकरी फल बेकार बिगाड़ दिये।''

''जाने दो परमेश्वर, हमने भी बहुत छोटे स्तर से अपना-अपना व्यवसाय शुरू किया था। हम भी उस दिन राघव जी द्वारा की गई मदद के कारण आज इस स्तर पर हैं। यदि आज हम किसी की मदद करें, तो हो सकता है हम उस व्यक्ति को उसके जीवन में आगे बढ़ने में मदद कर रहे हों। अन्यथा, हम यह मान लेंगे कि हमने फलों की एक टोकरी दान कर दी और उस बारे में भूल जाएँगे।''

''मैं तुमसे बहस नहीं कर सकता,'' परमेश्वर ने कहा जो आसानी से लोगों पर यकीन नहीं करता था। ''ठीक है, चलो हम भोजन करके कुछ देर आराम कर लें। फिर शाम को मैं तुम्हें मेरे नए नारियल के खेत में ले चलूँगा,'' कहकर पुरन्दर उठ खड़ा हुआ।

शाम को, वे दोनों नारियल के पेड़ों

की ओर पैदल चल पड़े। परमेश्वर कहने लगा, ''लगता है तुम्हें अपनी फलों की टोकरी को दान किया हुआ मान ही लेना चाहिये पुरन्दर।'' और तभी उन्हें खाली टोकरी लेकर आता हुआ वासव दिखाई दिया।

वासव ने पास आकर कहा, ''श्रीमान्, आपकी शुभेच्छाओं के कारण मैं आसानी से आम बेच पाया। कृपया ये उनका मूल्य ले लीजिये। यदि मैं थोड़ा सा देर से आता तो शायद आपसे न मिल पाता,'' और कुछ पैसे पुरन्दर के हाथ पर रख दिये।

''तुमने एक-एक फल कितने का बेचा?'' परमेश्वर ने उत्सुकता से पूछा।

''श्रीमान्, मैंने प्रत्येक पाँच फलों पर एक फल मुफ़्त दिया और प्रत्येक आम तीस रुपये का बेचा। टोकरी में एक सौ छब्बीस फल थे। यदि मैं बीस रुपये का एक बेचता, तो मुझे दो हज़ार पाँच सौ बीस रुपये मिलते। लेकिन प्रत्येक पाँच फलों पर एक फल मुफ़्त देने पर भी मुझे छः सौ तीस रुपये अधिक मिले, जिसमें मैंने इक्कीस आम मुफ़्त दिये, लेकिन प्रत्येक फल तीस रुपये का बेचा,'' वासव ने सविस्तार उत्तर दिया।

पुरन्दर परमेश्वर की ओर मुड़कर बोला, ''वासव ने सिद्ध किया है कि यदि हम मौका दें, तो कोई भी अपनी बुद्धिमत्ता सिद्ध कर सकता है।''

फिर वह वासव की ओर मुड़कर बोला, ''मैं तुम्हारी ईमानदारी और व्यावसायिक बुद्धि से प्रसन्न हूँ। तुम बुद्धिमान हो। स्वयं अपना व्यवसाय शुरू करो। भोजन माँगना बन्द करो। तुम्हारा आज कमाया हुआ लाभ तुम्हारा है। यह इस चतुराईपूर्ण विचार और घर-घर जाकर मेहनत करने के लिये तुम्हारा पारिश्रमिक है। कल फिर फलों की दो टोकरियाँ ले जाना। एक सप्ताह में जो धन इकट्ठा कर सको, उससे स्वयं अपना व्यवसाय शुरू करना। मैं इसमें तुम्हारी मदद करूँगा। तुममें व्यवसाय की गहरी समझ है। तुम निश्चय ही सफल व्यापारी बनोगे!'' कहकर पुरन्दर ने प्रेम से वासव का कन्धा थपथपाया।

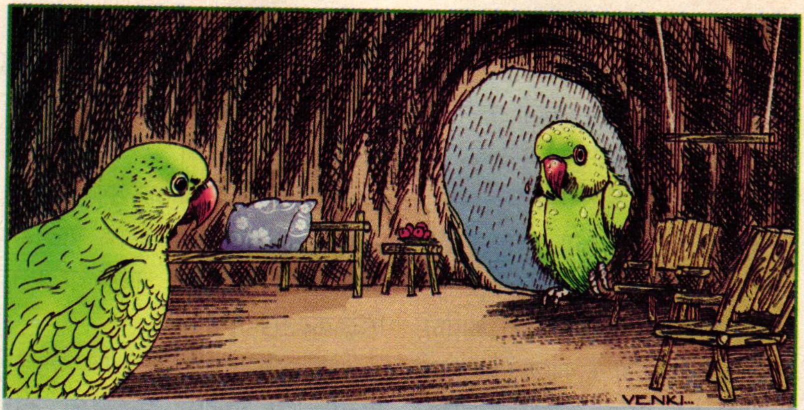

आँधी-तूफ़ान

कई दिनों और रातों से लगातार बारिश हो रही थी। पक्षी बड़े पेड़ों में छुपे बैठे थे। कुछ चिड़ियाँ गिरते पानी से सुरक्षित रखने वाले अपने आरामदेह घोंसलों में छुपी बैठी थीं। पेड़ की खोखलों में छुपकर बैठे पक्षी तो इस सब परेशानी से बचकर मजे से रह रहे थे। इनमें से कुछ पक्षियों ने तो पूरी बरसात के लिये अनाज के दाने और दूसरा भोजन भी इकट्ठा कर रखा था।

रॉबिन एक तोता था जो इनमें से एक खोखल में रहता था। उस सुबह उसने जम कर नाश्ता किया था और अब वह निंदासा महसूस कर रहा था। वह बरसात के रुकने पर खेत से कुछ मटर के दाने चुगने की सोच रहा था।

फिर थोड़ी देर के लिये बरसात रुकी, पर आकाश पूरा आच्छादित था और फुहार आती रही।

रॉबिन अपने बचपन की याद कर रहा था जब उसके पिता ने उसे सिखाया था कि बहुत ऊँचा उड़कर अचानक नीचे आकर किसी डाल पर कैसे बैठा जाता है। वे रोमांच और आनन्द भरे दिन थे। एक जगह बैठे-बैठे रॉबिन पुरानी यादों में घिरा हुआ था।

"रॉबिन, रॉबिन," किसी ने रॉबिन के घर के दरवाज़े पर आवाज़ लगाई।

रॉबिन वहाँ आया और अपने बचपन के मित्र चित्ती तोते को देखकर वह प्रसन्न हो गया।

"अरे वाह! मैं अभी तुम्हारे ही बारे में सोच रहा था। अन्दर आकर अपने आपको थोड़ा गर्म कर लो। तुम्हारे पंख गीले हो गए हैं। लगता है तुम बारिश में उड़ते फिरे हो," रॉबिन ने कहा।

रॉबिन का मित्र अन्दर आ गया। और लोग कहाँ हैं?" चित्ती ने पूछा।

एम. के. सोमनाथ पाणिकर

"मेरी पत्नी पास की खोखल में है। उसके पास सेने के लिये कुछ अण्डे हैं जो जल्दी ही फूटने वाले हैं," रॉबिन ने कहा।

"यह तो बड़ी अच्छी ख़बर है। तो तुम्हारा परिवार बड़ा होने जा रहा है, बधाई हो" चित्ती ने कहा। रॉबिन और उसके मित्र ने कुछ समय अपने बचपन के रोमांच को याद करते हुए बिताया। रॉबिन ने चित्ती को भोजन कराया और वे बातें करते रहे।

तभी खोखल के बाहर कोई आहट सी सुनकर रॉबिन ने अपना सिर उठाकर देखा। एक बड़े से काले साँप की चमकती आँखें देख कर वह सन्न रह गया। वह अपनी दोमुँही जीभ को लपलपा रहा था और फुफकारता और कुछ कहता जा रहा था।

"मैंने पिछले दो दिनों से कुछ नहीं खाया है। मुझे बेहद भूख लगी है। मुझे तुममें से केवल एक चाहिये। मुझे पता है तोते का मांस कितना स्वादिष्ट होता है," कहकर साँप ने एक बार और फ़ुफ़कार मारी।

"हे भगवान! यह क्रूर साँप हमें खा जाएगा," रॉबिन चिल्लाया।

दोनों पक्षी डर के मारे थर-थर काँपने लगे। वह भयानक साँप धीरे-धीरे खोखल के अन्दर आने लगा। लेकिन जैसे ही उसने अपना सिर खोखल के अन्दर डाला, उस पेड़ पर बिजली गिरी और एक बहरा कर देने वाली आवाज़ हुई। जले हुए मांस की गंध खोखल में भर गई। "हे भगवान! साँप पर बिजली गिर पड़ी है," रॉबिन बोला। फिर उन्हें साँप के बेजान शरीर के नीचे गिरने की आवाज़ सुनाई दी।

दोनों पक्षी अपने साथ एक क्षण में बीती घटना पर विश्वास नहीं कर पा रहे थे। उन्हें एक चमत्कार ने ही बचा लिया था।

"ईश्वर मुश्किल समय में हमारी सहायता करता है और हमें ख़तरे से बचाता है," कहते हुए चित्ती के शरीर ने झुरझुरी ली।

बहती हुई हवा और बादलों की गरज की आवाज़ें बढ़ने लगीं और शीघ्र ही घनघोर वर्षा शुरू हो गई।

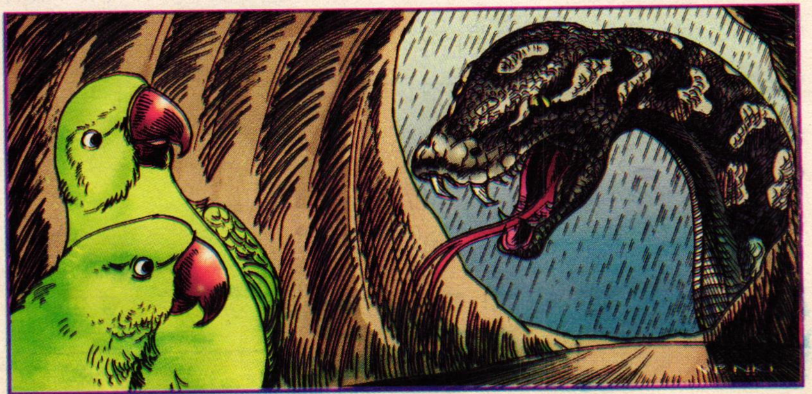

भाग्य देवता

अफ्रीका में कहीं एक मछुआरा हुआ करता था। वह एक बड़ी झील में मछलियाँ पकड़ा करता था। मछलियाँ पकड़ने के लिए, वह टोकरे जैसे जालों का उपयोग किया करता था। वह अपनी तमेड़ पर उनको ले जाता, और जहाँ पानी कम होता वहाँ उनको रस्सियों से बाँधकर उतार देता। क्योंकि वह रस्सियों के सिरों पर काठ के टुकड़े बाँध देता था इसलिए उसको पता लग जाता कि जाल कहाँ कहाँ लगे थे। घर जाते समय, वह उन टोकरों को ऊपर खींचता, उनमें फँसी मछलियों को बेचता और अपना जीवन निर्वाह करता।

एक दिन मछियारे ने जालों को एक एक करके ऊपर खींचना शुरू किया। दो जालों में एक मछली भी न थी। तीसरे में एक केकड़ा था। परन्तु चौथा जाल जब उठाया तो वह बहुत भारी सा लगा। ''ओह, मेरा भाग्य खिल उठा है। मेरी गरीबी गई समझो।'' सोचते सोचते उसने जाल को तमेड़ पर खींचा। परन्तु उसमें एक सूखी बुढ़िया थी।

मछुआरे का आश्चर्य यकायक घृणा में परिवर्तित हो गया। उसने बुढ़िया को फिर झील में धकेल देना चाहा। परन्तु उसने मछुआरे से कहा, ''मुझे फिर पानी में न धकेलो। मुझे तुम अपने साथ घर ले जाओ। तुम्हें कोई हानि न होगी।''

''तुम्हें मैं अपने घर ले जाऊँ? वाह, मैं अपना पेट ही मुश्किल से पाल पा

रहा हूँ। तुम्हारा कैसे पोषण कर सकूँगा?'' मछुआरे ने कहा।

परन्तु बुढ़िया उसके पैरों पड़ी। कुछ भी हो वह उसके साथ उसके घर गई। मछुआरे ने खीझते हुए अपने भोजन का कुछ भाग उसे भी दिया। दोनों के खाना खाने के बाद मछुआरे ने कहा, ''तुमने कहा था कि कुछ लाभ होगा? साफ साफ बताओ, वह लाभ क्या है? सुनकर सन्तुष्ट होऊँगा।''

''कल शाम तक तुम पशुओं के झुण्ड के मालिक होने जा रहे हो। इसलिए पशुओं के लिए एक लम्बा चौड़ा बाड़ा तैयार कर लो।'' बुढ़िया ने कहा।

मछुआरे ने कई प्रश्न किए। परन्तु बुढ़िया ने कोई जवाब न दिया। ''जो मैंने कहा है वह करो।'' उसने कहा।

मछुआरा गुनगुनाने लगा। परन्तु अगले दिन शाम तक काँटोंवाली झाड़ियों से, एक बड़ा बाड़ा तैयार किया। उसके ख़त्म होते होते शाम होने लगी।

यह काम होते ही झील की तरफ़ से, पशुओं की आवाज़ सुनाई दी। जल्दी ही एक बैल के पीछे कई गौ बछड़े झुन्ड बनाकर बाड़े में आये। इस

तरह वे उस जगह लेट गये, जैसे वह झुन्ड वहीं रहता आया हो।

तब से मछुआरे का जीवन बिल्कुल बदल गया। वह अब गरीब न रहकर बड़ा धनी हो गया था। आसपास के इलाके में उससे बड़ा धनी कोई न था। उसने भूमि भी खरीद ली। शादी कर ली। अच्छा घर बार भी बसा लिया। वह भी उस तरफ के खानदानी आदमियों में शामिल कर लिया गया। अगर कोई किसी सलाह के लिए आता, तो दाढ़ी हिलाता कहा करता, ''क्या मुझे यही काम है? कल आना। देखूँगा। खाली हाथ न आना।'' वह यों घमंड के साथ बातें करता।

छः महीने बीत गये। एक दिन मछुआरा कहीं गाँव में कोई सहभोज था, वहाँ भी गया। वहाँ उसने खूब खाया और खूब शराब पी। सहभोज ख़त्म होने पर अन्धेरा हो गया। मछुआरा झूमता झूमता आया। घर में सब किवाड़ बन्द करके बुढ़िया गहरी नींद में सोई थी।

''किवाड़ खोलो किवाड़, गिद्ध आया है। खोलो'' वह चिल्लाया। पर कोई भी नहीं बोला। उसे गुस्सा आ गया। ''यह क्या? ये इतने बेपरवाह हो गये हैं। वह बुढ़िया कहाँ गई जिसे मैंने झील में से निकाला था? अरे बुढ़िया, उठकर किवाड़ खोल।'' वह चिल्लाया। वह अभी चिल्लाया ही था कि बुढ़िया किवाड़ खोलकर दरवाज़े पर खड़ी थी। उसने उसकी ओर देखकर कहा, ''तुमने यूँ ही मुझे दुत्कारा है। मैं उन लोगों के साथ नहीं रहना चाहती जो उपकार करनेवालों को भूल जाते हैं। मैं कल ही अपनी जगह चली जाऊँगी।''

''वाह, जाती हो तो जाओ। पिंड छूटेगा।'' मछुआरे ने कहा।

अगले दिन बुढ़िया उठी। बिस्तर लपेटा। बर्तन वगैरह साफ़ किये। घर में बुहारी दी। घर से उसने एक तिनका भी न लिया। बाहर जाकर उसने बाड़े के दरवाज़े खोल दिये। वह फिर झील की ओर चलने लगी। पशु भी कतार में उसके पीछे गये और उसके साथ वे भी झील में चले गये। वे फिर न दिखाई दिये। मछुआरे की स्थिति फिर ऐसी हो गई कि उसको मछली बेचकर जीने की नौबत आ गई। उसका भाग्य चला गया।

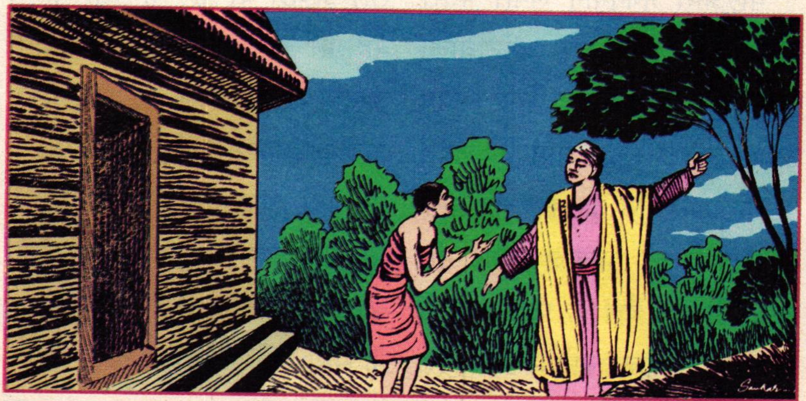

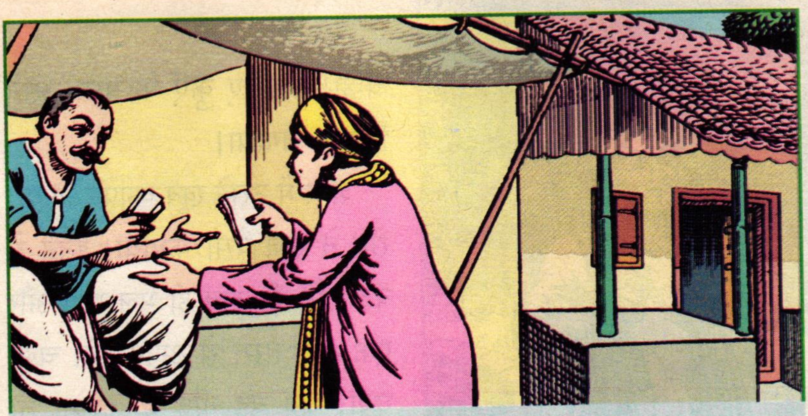

बातों की दुकान

एक गाँव में एक अजीब दुकान थी - बातों की दुकान। धर्मपाल नाम का व्यक्ति उसे चलाया करता था। उसने एक एक चिट पर एक एक सलाह लिख रखी थी। जिस किसी को सलाह की जरूरत होती, उसे, जितनी सलाह वह चाहता, वह बेचता, एक एक चिट की कीमत सौ रुपये थी। जो कोई उन चिट को खरीदता, उन पर लिखी सलाह पर चलता उसे बहुत फायदा होता।

एक दिन उस दुकान में एक सेठ आया। वह बड़ा अमीर था। ''बातों की दुकान'' में उसने तीन सौ रुपये देकर तीन सलाहें खरीदीं। वे सलाह ये थीं।

जब कभी यात्रा पर निकलो, पत्नी को कुछ न बताओ।

यदि रास्ते में कहीं भोजन करना पड़ जाय, तो कभी रास्ते के पास न करो।

जल्दी में किसी से भी किसी बात पर शर्त न लगाओ।

ये सलाहें खरीद कर सेठ घर चला गया। उसने जानना चाहा कि इनमें कितनी सचाई थी। बिना पत्नी को कहे, नौ थैलियों में नौ हज़ार रुपये रखे, गाड़ी में सवार हो, शहर में व्यापार करने निकल पड़ा।

सेठ के कुछ दूर जाने के बाद भोजन का समय हुआ। रास्ते से कुछ दूरी पर एक कुआँ दिखाई दिया।

एस. राजगोपालराव

चाहा। इसलिए कुएँ के पास उसने निशान लगाया।

शहर में उसने खूब व्यापार किया। सेठ ने खूब पैसा कमाया। इतने में वह काँटे की बात ही भूल गया और एक और रास्ते से अपने गाँव चला गया। जब वह गाँव में पहुँचा, तो उस गाँव का लखपति एक बड़े फोड़े के कारण बड़ी तकलीफ़ में था। उसने घोषणा कर रखी थी कि जो कोई उसका फोड़ा ठीक कर देगा वह उसे दस हज़ार रुपये देगा। तब तक कोई उसकी उचित चिकित्सा न कर सका था।

वहाँ उसने गाड़ी रोकी। कुएँ के पास भोजन करके वह फिर निकल पड़ा। थोड़ी दूर जाने के बाद उसने थैलियाँ गिनीं, तो वे आठ ही रह गईं थीं। तब कुएँ के पास जाकर उसने थैली खोजी तो वह उसे वहाँ मिल गई। वह वहाँ घास के ढेर के नीचे पड़ी थी। उस थैली को लेकर जब वह गाड़ी के पास आ रहा था, तो उसके पैर में गोखरू चुभा, और कमाल यह कि उसके चुभने से उसके पैर का एक फोड़ा जो ठीक न हो रहा था, यकायक ठीक हो गया। उस काँटे में, हो न हो, कोई खूबी थी, यह सोच उसने उसे वापिसी रास्ते पर घर ले जाना

जब यह बात उसे सुनाई दी तो उसे गोखरू की बात याद आई। यदि वह उसको ला सका, तो उसका फोड़ा ठीक हो जायेगा और उसे दस हज़ार रुपया मिलेगा। इसी उत्साह में वह उन सलाहों को भूल गया। उसने पत्नी को बता दिया कि कैसे उसने एक गोखरू छिपा रखा था, कैसे वह उसे लाकर दस हज़ार रुपये पा सकता था। ''मैं अभी लखपति के पास जाता हूँ, मैं उनसे लिखवाऊँगा। कल मैं जाकर गोखरू ले आऊँगा।'' उसने

पत्नी से कहा। पत्नी ने यह बात, जैसे कोई बड़ा भारी भेद हो, पड़ोस की स्त्री से कही। उसने अपने पति से कहा। जब सेठ लखपति के घर जा रहा था तो पड़ोस का आदमी उसे रास्ते में मिला। बातों बातों में दोनों जान गये कि दोनों एक ही काम पर जा रहे थे।

''वह फोड़ा कैसे ठीक होगा, यह मेरे सिवाय कोई नहीं जानता।'' सेठ ने कहा।

''मैं भी यह जानता हूँ।'' पड़ोस के आदमी ने कहा।

''लखपति का फोड़ा तुम नहीं ठीक कर सकते।'' सेठ ने कहा।

''ठीक कर दूँगा। चाहो तो शर्त लगाओ।'' पड़ोस के आदमी ने कहा।

सेठ वे सलाहें, जो उसने खरीदी थीं, फिर भूल बैठा। उसने कहा कि यदि पड़ोस के आदमी ने फोड़ा ठीक कर दिया, तो जो कुछ वह उसके घर में छुयेगा, वह उसे दे देगा।

पड़ोस का आदमी उसी दिन शाम को कुएँ के पास गया। सेठ ने जो गोखरू वहाँ गाड़ रखा था, उसको वह उखाड़ लाया। लखपति के फोड़े पर लगाकर उसने उसे ठीक कर दिया।

सेठ के गोखरू के लिए निकलने से पहले ही यह सब हो गया। अगर मान लो शर्त के अनुसार पड़ोसी ने उसके घर आकर उसकी तिजोरी छू दी तो क्या होगा? उसकी धन दौलत,

हज़ारों रुपये उसमें थे। क्योंकि उसने सलाह नहीं मानी थी इसलिए उस पर यह आफ़त आ रही थी। उसने पत्नी को बताया कि वह गोखरू लेने के लिए जा रहा था। उसने पड़ोसी से शर्त भी लगाई।

सेठ भागा भागा बातों की दुकानवाले धर्मपाल के पास गया। उसके पैरों पड़ा। जो कुछ गुज़रा था, उसने उसको बताया। उसने उससे पूछा कि वह कोई ऐसा रास्ता बताये जिससे उसको ऐसी भारी हानि न हो।

''जो हुआ सो हुआ। तुम अपनी तिजोरी कहीं अटारी के ऊपर छुपा दो। जब पड़ोसी आये तो उस पर सीढ़ी लगा देना। मैं भी आऊँगा।'' धर्मपाल ने कहा।

यह जानकर कि पड़ोसी सेठ के घर अपनी शर्त के अनुसार कोई चीज़ लेने वाला था, पाँच दस लोग जमा हो गये। उसी दिन शाम को पड़ोसी पाँच परिचित व्यक्तियों को लेकर सेठ के घर आया। उसने इधर-उधर देखा। तिजोरी नहीं दिखाई दी। अटारी और सीढ़ी दिखाई दी। तिजोरी ऊपर थी। सीढ़ी ऊपर चढ़ने के लिए पड़ोसी ने सीढ़ी पकड़ी।

''सेठ इसने सीढ़ी छू दी है। यह अब तुम्हारी नहीं है। तुम शर्त में हार गये हो।'' धर्मपाल ने कहा।

इस पर पड़ोसी ने आपत्ति की। परन्तु जो लोग वहाँ जमा हो गये थे उन्होंने कहा कि धर्मपाल का कहना ही ठीक था। उसके कारण सेठ को कोई खास हानि न हुई।

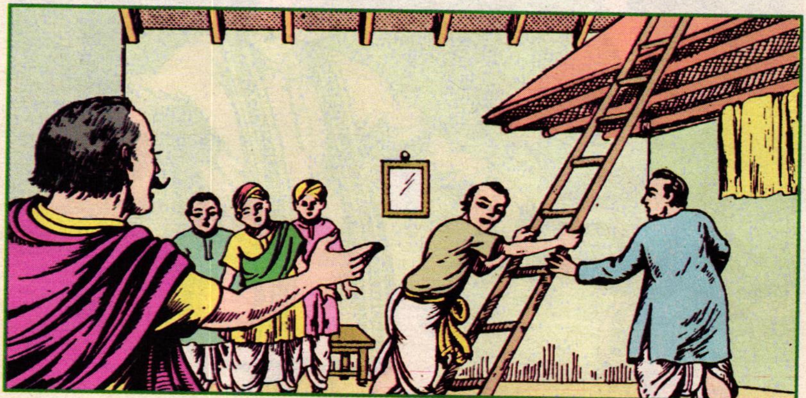

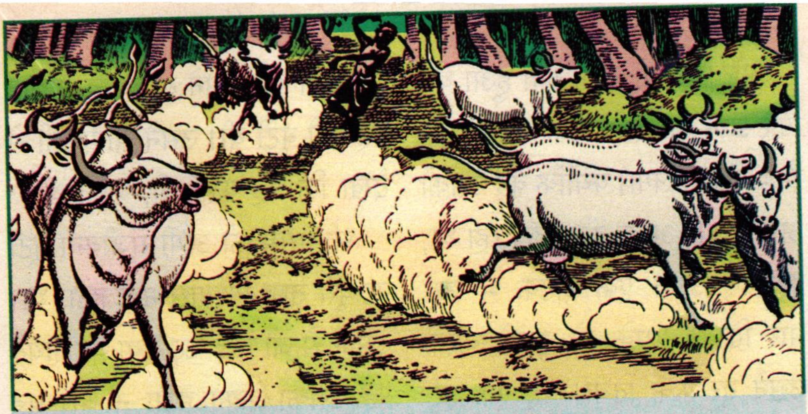

विधि अचूक है

एक गाँव में एक किसान के यहाँ सीताराम नाम का एक लड़का था। वह उसकी गौ-भैंसें चराया करता। वह रोज़ सवेरे उठता, मालिक के यहाँ काम करके, बासा भात खाकर, सवेरे ही गौ-भैंसों को चराने निकल जाता।

गाँव के बाहर एक उजड़ा बाग था। कभी उसमें अच्छे अच्छे फलों के वृक्ष थे। अब घास-फूस उग आई थी। उस बाग में गौ-भैंसों के लिए बहुत-सा चारा था और चराने पर कोई पूछनेवाला न था। गड़रियों के चढ़ने उतरने के लिए कुछ पेड़ रह गये थे। कभी कभी उन पर फल भी मिल जाते थे। सीताराम और उसके साथी अपने पशुओं को चराने उस बाग में आ जाते। पशु चरते रहते और लड़के शाम तक खेल-खिलवाड़ करते रहते। जब धूप होती तो पेड़ों की छाया में बैठकर गप्प मारते। शाम होते ही गाँव वापिस चले जाते। एक दिन सीताराम पशुओं को लेकर रोज़ की तरह बाग में गया। उस दिन त्यौहार था, इसलिए कोई लड़का न आया था। सीताराम त्यौहार के बारे में कुछ न जानता था। अकेला था, उस समय उसको बाग भी न भाया। वह सारे बाग में घूमा। उसने अपना गुस्सा पशुओं पर दिखाया। उनको इधर-उधर हाँकता रहा। पर समय कटता- सा न लगता था।

टी. सत्यनारायण

सीताराम तो यूँही ऊबा हुआ था, फिर इतने में उसके ऊपर आकर एक भिड़ मँडराने लगा। क्योंकि वह उसको अपनी ओर आता हुआ देख रहा था, इसलिए उसने एक झटके में उसे मार दिया। उसके दो टुकड़े करके उसने दूर फेंक दिया। वह एक हरी झाड़ी पर गिरा, उसमें प्राण-सा आ गया और वह उड़ गया।

सीताराम चकित रह गया। उसने गौर से वह जगह देखी जहाँ भिड़ गिरा था। उस झाड़ी में बहुत-से पत्ते थे। वे मामूली पत्ते न थे। वे बड़े नरम पत्ते थे। उसे लगा कि इन पत्तों के कारण वह मरा भिड़ जी गया होगा।

उसने संजीवनी बूटियों के बारे में सुन रखा था। उसने सोचा कि शायद वह वही बूटी थी। उसने सावधानी से देखा कि वह कहाँ थी, कैसी थी।

सीताराम को अभी संजीवनी बूटी पर पूरी तरह विश्वास नहीं हुआ था। उसपर से जो भिड़ उड़ गया था शायद वह उसका फेंका हुआ न था। वह सारे बाग में घूमा, उसे एक जगह एक मरी हुई टिड्डी दिखाई दी। उसने उसे लाकर संजीवनी बूटी पर रखा तो वह एक क्षण में हिली, फिर इधर उधर कहीं चली गई।

अब सीताराम जान गया कि वह सचमुच संजीवनी बूटी ही थी। जो कोई उसको छुयेगा, वह ज़रूर पुनर्जीवित हो जायेगा। वह इसके बारे

में अपने साथियों को कहने के लिए उतावला होने लगा।

जब अगले दिन वह अपने साथ केलड़कों के साथ गौ-भैंसों को लेकर आ रहा था, तो उसने बताया कि उसने संजीवनी बूटी मालूम की थी। उससे मरे भिड़ को और टिड्डी को जिलाया भी था, उनको अचरज होना तो अलग उन्होंने उसकी हँसी उड़ाई। सीताराम को उनपर गुस्सा आ गया। उसने वह बूटी किसी को दिखायी ही नहीं।

कुछ दिन बीत गये। एक दिन सवेरे गाँव का मुखिया मर गया। गाँव में उसका एक दुमंजिला मकान था। वह धनी ही नहीं, दानी भी था। उसने मन्दिर बनवाये। कुएँ और तालाब खुदवाये। धर्मशालाएँ बनवाईं। जो कोई घर बनाता या शादी करता उसको भी बहुत सा-धन देता आया था। इसलिए उसको गाँववाले भगवान-सा समझते।

मरने से पहले वह एक महीने बिस्तर पर पड़ा रहा। महीने भर तरह तरह की चिकित्सा की गई। कई औषधियाँ दी गईं। कितने ही वैद्यों ने आकर देखा। पर कोई भी अपने प्रयत्न में सफल न हुआ।

सवेरे के समय मुखिया के घर के सामने लोगों का जमघट लगा। कई उसकी प्रशंसा कर रहे थे। कई कह रहे थे- ''वैद्य औषधि तो दे

सकते हैं, प्राण थोड़े ही दे सकते हैं।'' गाँव का पुरोहित कह रहा था।

यह बात सीताराम के कान में पड़ी। वह उस समय पशुओं को चराने बाग की ओर जा रहा था। उसने सब कुछ मालूम करके कहा- ''मैं जिलाने का प्रयत्न बताता हूँ। उजड़े हुए बाग में संजीवनी बूटी है।'' उसने उससे पहले जो स्वयं अपनी आँखों से देखा था, वह बताया।

कई को उसकी बात पर विश्वास न हुआ। फिर भी दो तीन आदमी उसके साथ बाग में गये। सीताराम पहले बाग में पहुँचा। उसके बाद गाँव वाले गये। वह जानता था कि वह झाड़ी कहाँ थी। रोज़ वह उसे देखता आया था। इसलिए वह सीधा वहाँ चला गया। परन्तु उसे रोज़ जो पत्ते दिखाई देते थे, उस दिन वहाँ न दिखाई दिये। वह यह सोचता कि शायद यह झाड़ी हो और शायद यह हो, एक झाडी से दूसरी झाड़ी के पास चलता गया।

गाँववालों को उस पर गुस्सा आ गया। उन्होंने सोचा कि उसने उन्हें ठगा था। उन्होंने उसे मारा। इधर उसे उन लोगों की मार का दर्द था, उधर यह दर्द भी सता रहा था कि कैसे वह झाड़ी गायब हो गई थी। वह पन्द्रह बार सारा बाग घूम गया। पर वह झाड़ी कहीं न दिखाई दी।

कुछ भी हो, उसके जीवन में जीना नहीं लिखा था। इसलिए जो संजीवनी बूटी उसके सामने थी, वह भी न दिखाई दी।

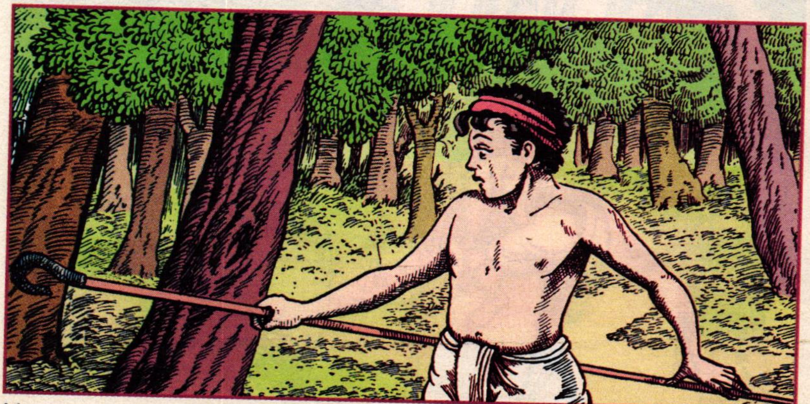

कछुए से सीख

एक दिन, रंगा अपने चाचा के साथ समुद्रतट पर गया। तट पर, रंगा के चाचा को उनके एक मित्र मिल गए और वे उनसे बातें करने लगे। कुछ देर बाद, रंगा को वहाँ एक कछुआ दिखाई दिया। रंगा बैठ गया और उत्सुकता के साथ कछुए की गतिविधि देखने लगा। कछुए ने अपना सिर अपनी खोल में छुपा लिया। अब केवल गोल ढाल जैसा खोल ही दिखाई दे रहा था। उसमें कोई हलचल नहीं थी। रंगा थोड़ी देर प्रतीक्षा करता रहा। लेकिन जब कछुए ने लम्बे समय तक अपना सिर बाहर न निकाला तो वह निराश हो गया। तभी उसे पास में एक छड़ी पड़ी दिखाई दी और वह उसे कछुए को चुभाने की कोशिश करने लगा जिससे वह अपना सिर बाहर निकाले। रंगा के चाचा ने यह सब देखा और वे उसके पास आए। रंगा ने उनसे कहा, ''चाचाजी, मैंने कुछ देर पहले इस कछुए का सिर देखा था। यह कुछ दूर चला भी था। मैंने सच में देखा था। और अब देखिये!'' रंगा के चाचा ने उससे छड़ी लेते हुए कहा, ''ऐसा नहीं करते। यदि तुम उसे छड़ी चुभो दोगे, तो वह मर भी सकता है।'' ''तो फिर कैसे चाचाजी?'' रंगा के चाचा ने कछुए को धीरे से उठाया और अपने घर ले आए। पीछे-पीछे रंगा भी उछलता-कूदता आया। उसके चाचा ने घर लाकर कछुए को एक गर्म जगह पर रखा। गर्माहट पाकर कछुए ने धीरे से अपना सिर बाहर निकाला। रंगा खुशी से चिल्लाया, ''वाह!'' ''कछुए इन्सानों की ही तरह ढीठ होते हैं। हमें उनसे ज़बरदस्ती नहीं करनी चाहिये। हमें जानवरों के साथ आराम से दोस्ती करनी चाहिये। उन्हें प्रेम दर्शाना चाहिये। समझे?'' रेंगते हुए कछुए को देखकर रंगा के चाचा ने पूछा।

- मंत्रावधि महेश्वर

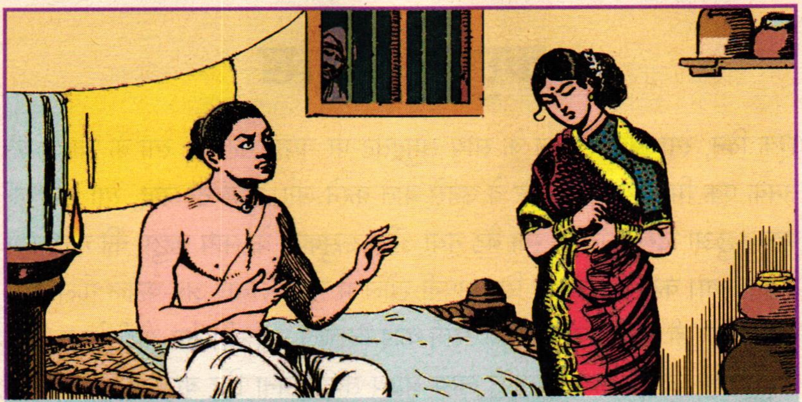

स्वर्ण हस्त

एक समय था, जब दक्षिण भारत के मदुरै नगर में एक पाण्ड्य राजा राज्य किया करता था। वह जनता को अपनी सन्तान की तरह देखता। किसी के प्रति कोई अन्याय न होने देता। उसका राज्य राम-राज्य की तरह था।

यदि किसी को कोई कष्ट होता तो उसकी खबर गुप्तचरों द्वारा राजा तक पहुँचती। वह यथासाध्य उनके कष्टों का निवारण करता रहता।

यही नहीं, वह प्रायः गुप्त वेश धारण करके जनता का कुशल-क्षेम मालूम किया करता। इसलिए उसके राज्य में प्रजा बड़ी सुखी थी।

एक दिन रात को जब राजा वेश बदलकर नगर में घूम रहा था तो दस बजे के समय एक ब्राह्मण-गली में आया। जब वह एक घर के पास पहुँचा तो घर के अन्दर से किसी का विलपना और किसी पुरुष का उसको आश्वासन देना सुनाई पड़ा।

राजा उस घर के सामने खड़े होकर उनका सम्भाषण सुनने लगा। उस घर में एक ब्राह्मण परिवार रहा करता था। उनकी सन्तान न थी। अगले दिन ही ब्राह्मण किसी काम पर काशी जा रहा था। उसके वापिस आने तक अकेले बैठ कर रोना होगा, यह सोचकर उसकी पत्नी रो रही थी।

''छः महीने बाद अमावस्या आते

वी. रमादेवी

ही मैं वापिस जो आ जाऊँगा। छः महीने के लिए आवश्यक चीज़ें मैंने घर में रख ही दी हैं। तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिए। ऐसी कोई बात नहीं है। तुम्हें कोई कष्ट न होगा।'' पति ने कहा।

''मैं यह सोच नहीं रो रही कि खाने-पीने की चीज़ें कम हो जायेंगी। स्त्री हूँ, फिर अकेली। छः महीने यदि अकेले घर में रहना पड़ जाय तो सोचिये कितना कष्ट होगा। हमेशा डर लगा रहेगा, जाने कब कौन चोर घर के अन्दर घुसता है।''

''अरे पगली, जब हर किसी के कष्ट निवारण करनेवाले हमारे राजा हैं, तब चोरों का क्या डर? वाह, कभी तुमने हमारे राज्य में चोरी डकैती के बारे में सुना? क्या तुम्हें यह भय है कि जो इतने बड़े राज्य की रक्षा कर रहा है, वह तुम्हें चोरों से नहीं बचा सकेगा? इस तरह का ऊटपटाँग भय छोड़ो।'' पति ने कहा।

यह सम्भाषण सुन राजा आगे चला गया। अगले दिन उस घर का मालिक काशी चला गया।

उस दिन रात को, राजा वेश बदलकर उस गली में आया और रात भर उसने उस घर के सामने पहरा दिया। उसके बाद वह रोज़ उस घर का पहरा देने आता।

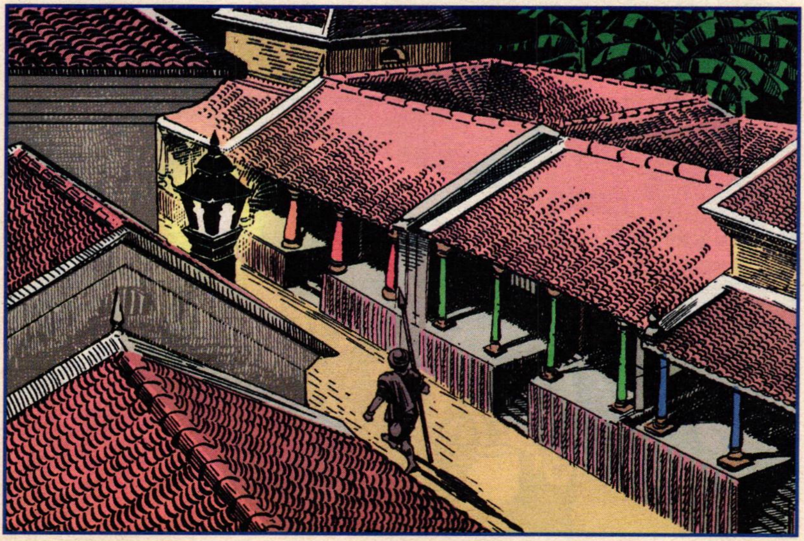

रोज़ बीते, सप्ताह हुए, महीने गुज़र गये। छः महीने हो गये। अमावस्या भी आ गई। राजा अपनी आदत के अनुसार वेश बदलकर उस घर का पहरा देने गली में आया।

वह अभी घर के पास पहुँचा ही था कि किसी पुरुष की आवाज़ अन्दर से सुनाई दी। यह सन्देह करके कि मालिक की अनुपस्थिति में कोई परपुरुष घर में घुसा है, उसने किवाड़ खटखटाया। परन्तु उसने जब किवाड़ के छेद से देखा तो पाया कि घर का मालिक काशी से वापिस आ गया था और बैठा बैठा अपनी पत्नी से बातचीत कर रहा था।

राजा चकराया। उसका किवाड़ खटखटाना ठीक न हुआ। उस ब्राह्मण को सन्देह हो सकता था कि जब वह काशी में था, तो कोई आकर उसका किवाड़ खटखटाता रहा होगा। इस गलती को ठीक करने के लिए उसने उस गली के कुछ घरों के किवाड़ खटखटाये और फिर अन्धेरे में कहीं चला गया।

किसने किवाड़ खटखटाये थे, यह देखने के लिए घरवाले बाहर आये। सबने सोचा कि यह किसी चोर की करतूत थी। उस नगर में ऐसा पहले कभी न हुआ था। इसलिए उन्होंने राजा

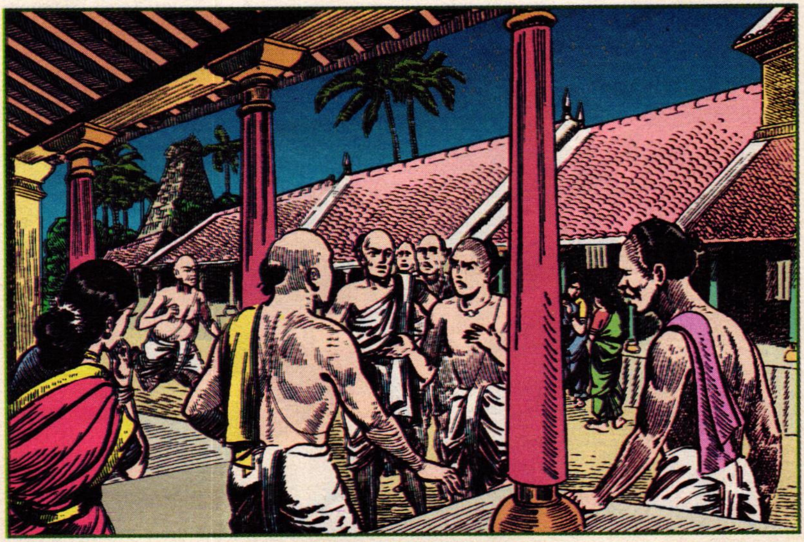

से शिकायत करने का निश्चय किया।

अगले दिन वे सब राजा के दरबार में हाज़िर हुए। "महाराज, हम अब तक आपके राज्य में बिना चोर के भय या किसी और भय के, आपकी रक्षा में निर्भय और सुखी रहते आये हैं। परन्तु कल रात हमारी गली में एक घटना हुई। उससे हम सब बड़े चिन्तित हैं और आपके लिए भी शायद यह अपकीर्ति का विषय हो। कोई चोर रात को हमारे घरों के किवाड़ खटखटाकर भाग गया। उसको पकड़कर दण्ड दिया जाय यह हमारा निवेदन है।"

तुरन्त राजा ने प्रधानमन्त्री की ओर मुड़कर पूछा, "जो ये अपराध बताते हैं उसका क्या दण्ड है?"

नगरवासियों ने कहा कि जिसने यह भय पैदा किया है उसका दायाँ हाथ कटवा देना चाहिये। यही इस अपराध का दण्ड है।" मन्त्री ने कहा।

तुरन्त राजा ने अपनी तलवार लेकर बायें हाथ से अपना दायाँ हाथ काट दिया। फिर उसने सबके समक्ष जो कुछ गुज़रा था, कह सुनाया। यह सुन सबने दुखी होकर राजा के सद्व्यवहार की खूब प्रशंसा की।

फिर उन्होंने एक सोने का हाथ बनवाकर, राजा की भुजा में लगा दिया। जब सबने जाकर सुन्दरेश्वर स्वामी के मन्दिर में पूजा की तो उसका हाथ फिर सामान्य हो गया।

चमचमाते, उस सोने के हाथ के कारण वह राजा सुवर्ण हस्त पाण्ड्य राजा के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

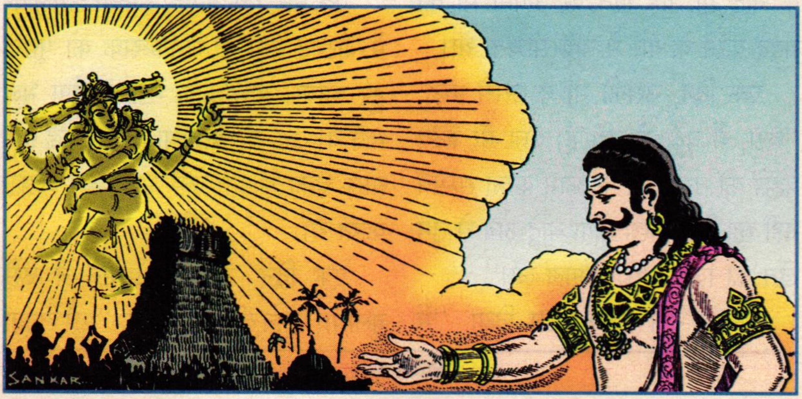

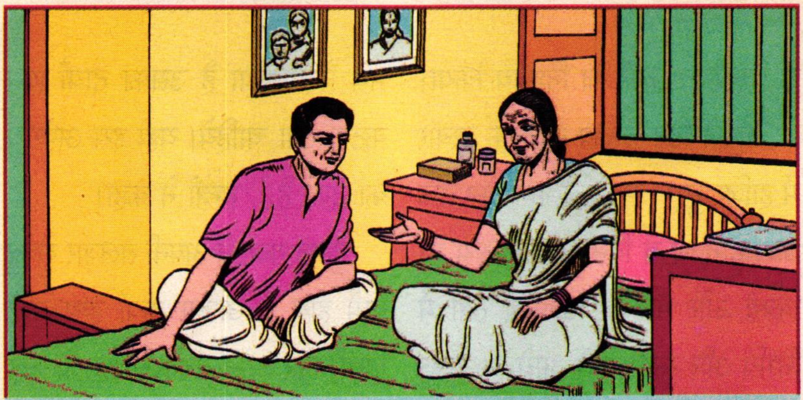

आदतन अपराधी

कमलापुर का वीरभद्र अपने बचपन में अपने पिता को खो चुका था। उसकी माँ अकेली ही उसकी देखभाल कर रही थीं। वे उसके पिता की तीन एकड़ ज़मीन पर खेती करके अकेले उसका पालन-पोषण कर रही थीं।

उसे पिता की कमी न खले, इसलिये उसकी माँ ने वीरभद्र के बहुत लाड़ लड़ाए। परिणामस्वरूप, वीरभद्र की पढ़ने में कोई रुचि न थी। वह सारा समय अपने दोस्तों के साथ खेलने में बिताता था। बड़ा होने के बाद भी, वह खेत पर अपनी माँ की मदद करने के बारे में नहीं सोचता था।

एक दिन, उसकी माँ ने उससे कहा, ''बेटा, मैं बूढ़ी हो रही हूँ। अब मेरे लिये पहले की तरह खेत पर काम करना सम्भव नहीं रहा है। अच्छा होगा यदि अब से तुम खेत की ज़िम्मेदारी सम्भाल लो।''

वीरभद्र ने चिढ़कर उत्तर दिया, ''मैं हल चलाना और यह सब काम नहीं कर सकता जिससे मेरे हाथ मिट्टी में ख़राब हों।''

बचपन से ही वीरभद्र की आसानी से झूठ बोलने की आदत थी। पास के नगर में किसी काम से जाने पर, वह अपने को चिकित्सक बताता। कभी कहता कि वह वकील है। और कभी वह लोगों से कहता कि वह एक सफल व्यापारी है। वह अपने तौर-तरीके भी वैसे ही रखता और लोग उसपर भरोसा कर लेते थे।

एक बार, एक बीमार आदमी कमलापुर में बीरभद्र नाम के चिकित्सक को पूछते हुए आया। वीरभद्र के मज़ाक लोग भूले नहीं थे। उन्हें यह पता था कि वह कई झूठ बोल चुका है और उसे ''आदतन झूठा'' कहते थे।

एक दिन, गाँव के प्रधान ने उसे बुलाया। उसने वीरभद्र से कहा, ''मुझे लगता

तिरुमलश्री

है कि तुम झूठ बोलने के अलावा कोई काम नहीं कर सकते। सफ़ाई से झूठ बोलना एक कला है। अच्छा हो कि तुम अपनी आदत को पेशा बना लो।''

वीरभद्र हैरान हो गया। ग्राम प्रधान ने उसे अपना मंतव्य बताया। प्रधान का दामाद गोपाल नगर में एक प्रसिद्ध वकील था। वह वीरभद्र को काम दे सकता था। वीरभद्र तैयार हो गया।

अपने ससुर की सिफ़ारिश पर आए वीरभद्र का गोपाल ने स्वागत किया। ''तुम मेरे पेशे में मेरे लिये उपयोगी रहोगे। यदि तुम मेरे कहे अनुसार करो, तो तुम बहुत धन कमा सकते हो।'' वीरभद्र झट से तैयार हो गया।

गोपाल कभी-कभी मुकदमे को अपने मुवक्किल के पक्ष में करने के लिये झूठे गवाहों का सहारा लेता था। उसने कई मुकदमों में वीरभद्र को अलग-अलग नामों और वेशों में झूठे गवाह के रूप में उपयोग किया।

वीरभद्र को तो पहले ही झूठ बोलने की आदत थी। अब वह मज़ाक में झूठ बोलने की जगह उससे धन कमा रहा था। एक बार गाँव में अपनी माँ से मिलकर वापस नगर की ओर जा रहा था। रास्ते में वह एक सराय में रुका।

वहाँ एक वृद्ध दम्पति पहले से रुका था। वे वृद्ध ऐसे लग रहे थे जैसे ग़रीबी ख़ुद इन्सान के रूप में सामने आ खड़ी हुई हो।

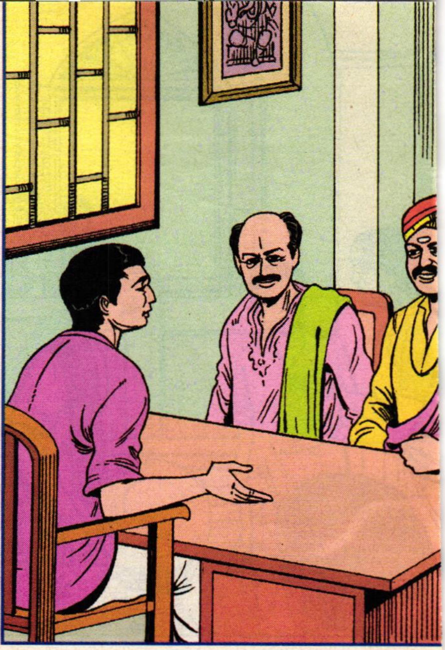

उसे पता लगा कि उनके बेटे पर किसी अपराध का झूठा आरोप लगा था और वह कारागार में था। अगले दिन अदालत में उसके मुकदमे की कार्यवाही होने वाली थी।

यदि उनके इकलौते बेटे को दण्ड मिलता तो दोनों वृद्ध बेसहारा हो जाते। वे दोनों उस स्थिति से डरे हुए थे। अतः वे दोनों आत्महत्या करने की योजना बना रहे थे।

वे अन्तिम बार अपने बेटे को देखना चाहते थे। अतः वे पैदल-पैदल चलकर नगर में आ पहुँचे थे।

उनकी दयनीय दशा देखकर वीरभद्र का मन पसीज गया। उसने उन्हें यह कहकर दिलासा दिया कि ईश्वर उनकी रक्षा करेगा और उन्हें हिम्मत नहीं हारनी चाहिये।

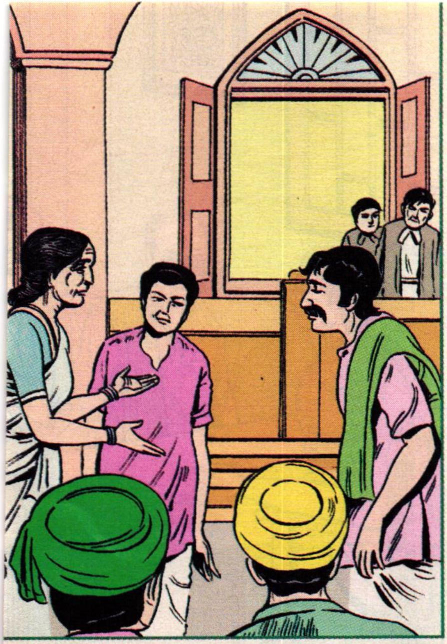

फिर वह उन्हें अपने साथ लेकर गया और नगर तक छोड़ आया।

अगले दिन, जब वह अदालत पहुँचा, तो उसने उस वृद्ध दम्पति को भी वहाँ देखा। उन्होंने उसे बताया कि उनके बेटे का मुकदमा अभी चल रहा था और कठघरे में खड़े आरोपी को ओर इशारा किया। उसकी ओर देखते ही वीरभद्र को जैसे झटका लगा। आरोपी एक नवयुवक था, जिसकी उम्र बीस वर्ष से अधिक नहीं थी। उसे देखकर उसके मन में अचानक कोई याद जाग उठी।

वीरभद्र किसी काम से जंगमपुर गया था। रात हो चुकी थी। उसके गाँव की सीमा तक पहुँचते-पहुँचते तेज़ बारिश भी शुरू हो गई। उसे वहाँ एक मन्दिर दिखा और वह बचने के लिये उसमें चला गया।

वहाँ उसने देखा कि गाँव के मुन्सिफ और मन्दिर के पुजारी ने मिलकर मन्दिर की मूर्ति के गहने चुरा लिये। एक युवक ने, जो गाँव की निगरानी कर रहा था, उन्हें देखा और रोका।

वह कुछ समझ पाता उससे पहले ही मुन्सिफ और पुजारी ने उस पर हमला करके, उस पर ये आरोप लगाते हुए कि उसी ने गहने चुराये हैं, उसे मन्दिर के एक खम्भे से बाँध दिया। उन्होंने एक रत्न उसकी जेब में रख दिया और बाकी के सभी गहने मूर्ति के नीचे एक गड्ढे में छुपा दिये।

वीरभद्र, जो मूक-दर्शक बना यह सब देख रहा था, यह सोचकर तुरन्त वहाँ से चल दिया कि कहीं वह इसमें न फँस जाये।

अब वीरभद्र बहुत विचलित हो रहा था कि उसे इसी युवक के विरुद्ध खड़े होकर झूठी गवाही देना थी।

अभियुक्त ने बयान दिया कि वह दोषी नहीं है और वे दोनों व्यक्ति ही असली अपराधी हैं। उन दोनों ने अपने बचाव में एक ही वकील खड़ा किया था। और यह एक संयोग ही था कि वह वकील स्वयं गोपाल ही था।

गोपाल ने वीरभद्र से कहा, ''तुम्हें अपनी गवाही से साबित करना है कि तुमने उस रात मन्दिर में शरण ली थी और जब यह युवक चोरी करके भाग ही रहा था तब मुन्सिफ और पुजारी को इसे पकड़कर बाँधते हुए तुमने देखा था।''

उसने वीरभद्र को विश्वास दिलाया कि हमेशा की तरह इसके लिए भी उसे अच्छे पैसे मिलेंगे। इसके बाद वीरभद्र को गवाहों के कटघरे में बुलाया गया।

वीरभद्र ने बारी-बारी से अभियुक्त, उसके माता-पिता, मुन्सिफ, मन्दिर के पुजारी और गोपाल की ओर देखा। फिर उसने भगवद्गीता पर हाथ रखकर सच बोलने की कसम खाई। फिर वह बोला।

फिर उसने उस दिन जब चोरी हुई थी जो कुछ देखा था सब ज्यों का त्यों कह सुनाया। पुजारी और मुन्सिफ के चेहरे का रंग उड़ गया। न्यायाधीश ने वीरभद्र का बयान कलमबद्ध कर लिया।

उसने आदेश दिया कि कुछ सिपाहियों के साथ कुछ अफ़सर जंगमपुर जाकर गहने बरामद करें और लाकर अदालत में पेश करें।

जैसे ही सच सामने आया, अभियुक्त को रिहा कर दिया गया। मुन्सिफ और पुजारी को गिरफ़्तार कर लिया गया।

गोपाल के क्रोध को वीरभद्र ने नज़र अन्दाज़ कर दिया। उस युवक के माता-पिता ने उसका बड़ा आभार माना और उसके पैरों पर गिरने ही वाले थे कि वीरभद्र ने उन्हें रोक लिया।

इस घटना के बाद वीरभद्र बड़ा खुश और सन्तुष्ट हुआ। उसे यह बड़ा अजीब लगा कि केवल एक ही सच बोलने से उसे कितना सन्तोष मिला।

धीरे-धीरे उसे इस बात के अहसास से बड़ा दुख हुआ कि उसके झूठ बोलने से और न जाने कितने लोग दुखी हुए होंगे। उसने फिर कभी झूठ न बोलने का निश्चय कर लिया।

वह जानता था कि इसके बाद गोपाल के पास उसके लिये कोई जगह न होगी और उसकी रोज़ी-रोटी जाती रहेगी। परन्तु उसे यह समझ में आ गया कि रोज़ी-रोटी कमाने के लिए उसे झूठ नहीं बोलना है।

उसने अपनी बूढ़ी माँ के पास जाकर खेती में मदद करने का निश्चय किया।

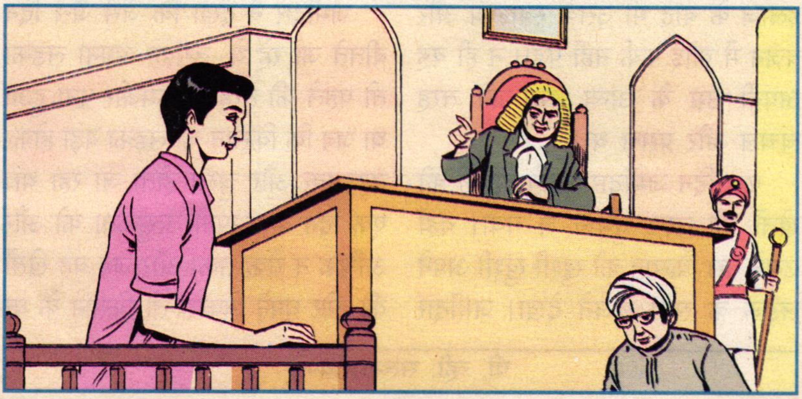

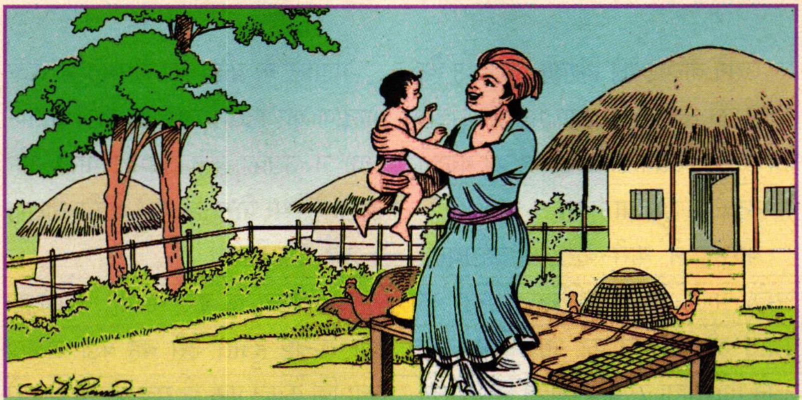

मकरंद

सिद्दामपल्लै के जमींदार और उसी गाँव में उसके खेत के पास की झोंपड़ी में रहनेवाले किसान के घर साथ ही साथ लड़के हुए। पाँच वर्ष बीत गए। जमींदार का बेटा बढ़िया और मनपसन्द खाना खाता था, और बड़ा लाड़ला था और उसकी खूब देखभाल की जाती थी। फिर भी वह बच्चा कमज़ोर था और हर वक़्त चिड़चिड़ाता रहता था। जमींदार ने उसे कई डॉक्टरों को दिखाया। डॉक्टर कहते थे कि उसे कोई रोग नहीं है परन्तु उसके शरीर में खून की कमी है। इलाज के बाद भी उसके स्वास्थ्य और वज़न में कोई फर्क नहीं पड़ा। न ही वह अपनी उम्र के अन्य बच्चों की तरह चंचल और प्रसन्न था।

एक दिन जमींदार अपने लड़के को खेतों की तरफ़ घुमाने ले गया। वहाँ उसने उस किसान को खुशी खुशी अपने लड़के के साथ खेलते देखा। जमींदार का बेटा भी अपने प्रतिदिन के व्यवहार के विपरीत हँसा और दौड़ा और किसान के बच्चे के साथ खूब खेला। किसान ने एक मिट्टी के कटोरे में कोई पेय लाकर अपने बच्चे को पिलाया। उसने बड़े उत्साह से उसे पी लिया और फिर से खेलने लगा। बच्चा स्वस्थ, ऊधमी और ऊर्जावान था।

उत्सुक जमींदार ने पूछा, ''वह क्या है?'' किसान ने मुस्कुराकर उत्तर दिया, ''वही मकरंद जो हमारे पूर्वज पीते रहते थे।''

जमींदार ने देखा कि जैसे जैसे दिन बीतते जा रहे थे, उसका अपना लड़का तो पहले की तरह ही कमज़ोर बना हुआ था जब कि किसान का लड़का बड़ा होकर ताकतवर और चुस्त होता जा रहा था। एक दिन वह अपनी उत्सुकता को और अधिक न रोक सका और जब वह खेतों की ओर घूमने निकला तो किसान के घर

पी. व्ही. सत्यनारायणा

जा पहुँचा। उसने किसान से पूछा, ''क्या तुम कृपा करके थोडा सा मकरंद मेरे बेटे के लिए दे दोगे, मैं उसके लिए कितने भी पैसे देने के लिए तैयार हूँ।''

''साहब, बात पैसे की नहीं है। मुझे आश्चर्य है कि आप जैसे धनवान लोगों को वह पसन्द भी आयेगा,'' किसान हिचकिचाया।

अवश्य ही वह मुझे पसन्द आयेगा। मेरे बेटे की सेहत और खुशी मेरे लिये ज्यादा महत्वपूर्ण है,'' जमींदार ने कहा।

''तो साहब अन्दर आइये। मैं बताता हूँ,'' किसान ने कहा और जमींदार को झोंपड़ी के अन्दर ले गया। वहाँ उसने एक बर्तन में पकाया जा रहा रागी का दलिया जमींदार को दिखाया। फिर उसने विनम्रता से कहा, ''साहब , यही हम गरीबों का मकरंद है जो हम लोग कई पीढ़ियों से पीते आये हैं। यह रागी का दलिया बढ़ते हुए बच्चों और बड़ों दोनों को रक्त की कमी से बचाता है और उन्हें ताकतवर बनाता है। कृपया ये हमारे छोटे मालिक को देना, देखें उन्हें पसन्द आता है कि नहीं।''

तब तक किसान के लड़के ने अपना थोड़ा सा दलिया जमींदार के बेटे को दे दिया था। जमींदार के बेटे ने जो घर पर अच्छे से अच्छा खाना दिये जाने पर भी नख़रे करता रहता था बिना कुछ कहे उसे पी लिया। जमींदार आश्चर्यचकित रह गया।

एक महीने में ही उसने देखा कि उसके लड़के में ताक़त आ गई थी और वह किसान के बेटे के समान चुस्त और फुर्तीला दिखने लगा था। उसने सोचा, ''इस मकरंद में कितनी शक्ति है,'' और अपने बँगले में बनने वाले भोजन में परिवर्तन करके ज़्यादा शक्तिदायी और सादी भारतीय दाल-दलहनों को चटपटे भोजन के बदले शामिल किया। उसने यह भी निश्चित किया कि उसके बच्चे को घर के बाहर दूसरे बच्चों के साथ खेलने दिया जाय। पोषणयुक्त भोजन करके, अपनी उम्र के बच्चों के साथ घर के बाहर खेलकर जमींदार का बेटा स्वस्थ और प्रसन्न था।

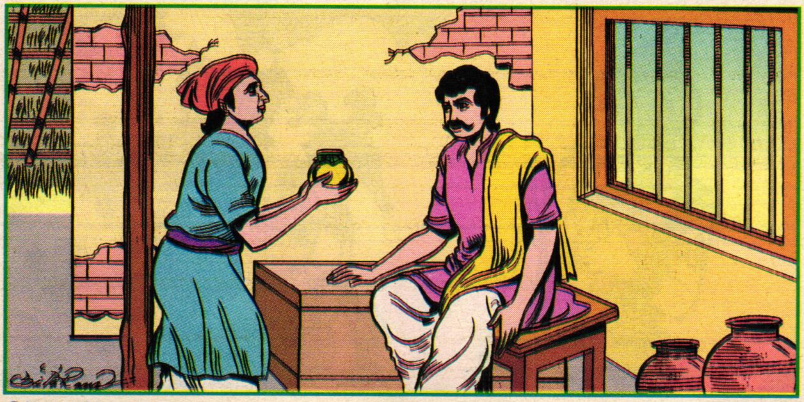

गीत की कहानी

एक बार अचानक पृथ्वी पर अकाल पड़ गया। सब जगह लोग भूखे मरने लगे। यह देखकर ईश्वर बहुत विचलित हो गये। ''पृथ्वी पर नैसर्गिक स्रोतों का भण्डार है। लोग सक्षम हैं। भूमि उपजाऊ है और जोतने पर अन्न पैदा करेगी। फिर अचानक ये अकाल क्यों? भगवान को बड़ा आश्‍चर्य हुआ और उन्होंने एक देवदूत को पृथ्वी पर यहाँ की स्थिति जानने के लिये भेजा। ''हे प्रभु! दुर्भिक्ष का कारण किसी नैसर्गिक स्रोत की कमी नहीं है, कारण है ऊब। मनुष्यों में यह एक खास बात है कि वे जल्दी ऊब उठते हैं। बार बार एक ही प्रकार का कार्य करते करते वे उकता गये हैं उन्होंने खेती का काम छोड़कर दूसरे कामों में रुचि लेना शुरू कर दिया है जो मनोरंजक हों,'' देवदूत ने कहा। उसने फिर ये भी कहा- ''यदि लोग अपने इस अरुचि के भाव से मुक्त होकर उत्साह प्राप्त न कर सके तो मनुष्य जाति का अस्तित्व ही ख़तरे में पड़ जायेगा।''

भगवान ने मुस्कुराते हुए कहा- ''हाँ, यह तो है। अब समय आ गया है कि गीत का जन्म हो।'' देवदूत आश्‍चर्य चकित हो गया। उसने उत्सुकता से पूछा, ''गीत''? ''अब से आगे जब लोग काम करना शुरू करेंगे, उनके होंठों पर एक गीत थिरकने लगेगा। उसके साथ एक लय होगी। उस लय के साथ धुन पर उनके कदम थिरकेंगे। गीत और काम एक दूसरे के साथ साथ चलेंगे। काम से परेशान आदमी की अरुचि इससे दूर हो जायेगी,'' भगवान ने कहा। ''यह उचित मालूम पड़ता है। परन्तु यदि आदमी इससे भी थक गया तो?'' देवदूत ने पूछा। ''यही तो गीत की महत्ता है। मैं गीत को यह आशीर्वाद देता हूँ कि इंसान उससे कभी ऊब महसूस न करे,'' भगवान ने कहा। इस तरह जन्म लेने वाला गीत कई रूप धारण करके किसानों का मनोरंजन करता है, विभिन्न कामों में लगे हुए लोगों का दिल बहलाता है और स्वयं ईश्‍वर की प्रार्थना के रूप में गाया जाता है।

- पी. वेंकटेश्‍वरराव

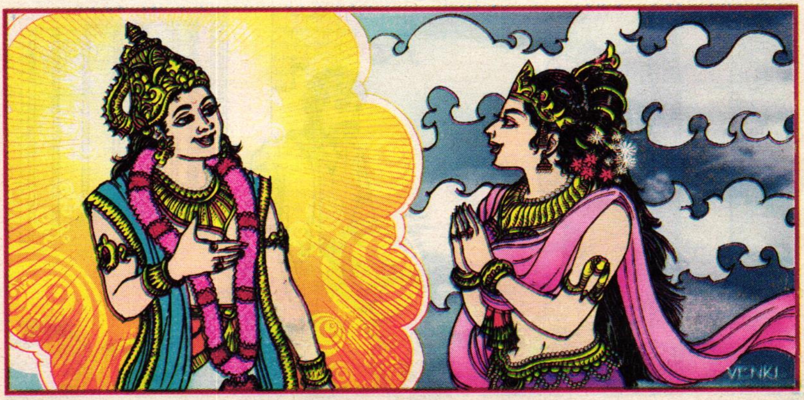

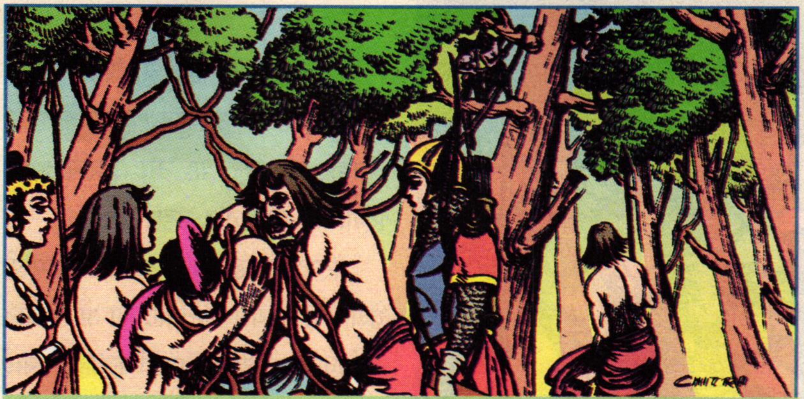

शिथिलालय-३१

(वृच्छिक नेता शिखिमुखी के हाथों हार गया। शिखिमुखी ने उसे क्षमा कर दिया। इसके बाद सब लोग घाटी में उतर पड़े। वहाँ पर सब ने मिलकर हाथियों के झुंड को भगा दिया। जांगला को संदेह हुआ कि पेड़ पर दीखनेवाली आकृति शायद नांगसोम की हो। जांगला जल्दी-जल्दी पेड़ पर चढ़ गया। इसके बाद....)

शिखिमुखी का दल पेड़ के नीचे खड़े हो जांगला के मुँह से समाचार सुनने के लिये व्यग्र हो उठा। जांगला डालों के बीच में से धीरे से चिल्ला उठा- ''शिखी साहब, यहाँ पर नांगसोम बेहोश पड़ा है। लेकिन अभी जिंदा है। उसकी साँस चल रही है। एक दो और आदमियों को भेज दो, तो इसे नीचे उतारा जा सकता है।''

जांगला के मुँह से ये बातें पूरी भी न हो पायीं थीं कि वृच्छिक जाति के दो युवक पेड़ पर चढ़ बैठे। उन दोनों ने मिलकर नांगसोम को मज़बूत लताओं से बाँध दिया और उसे नीचे उतारा।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी नांगसोम की यह जाँच कर ही रहे थे कि वह जिंदा है कि नहीं, इसी बीच वृच्छिक नेता झाड़ियों में से कोई पत्ती ले आया। उसका रस निचोड़कर नांगसोम की नाक में डाल दिया। दूसरे ही पल में नांगसोम छींक कर उठ बैठा।

''नांगसोम, तुम पहाड़ पर से घाटी के पेड़ों पर गिर गये थे, फिर भी गहरे घाव नहीं हुए, बच रहे, हमें बड़ी खुशी है।''

दसारि सुब्रह्मण्यम्

शिखिमुखी ने कहा।

नांगसोम ने पागल की तरह एक बार चारों तरफ़ देखा- "लो, वही शिथिलालय है! वही शिथिलालय है! चिल्लाते घने वृक्षों की ओर भागने को हुआ।

शिखिमुखी ने उसकी कमर पकड़कर जबर्दस्ती उसे बिठाया और विक्रम से बोला- "विक्रम, लगता है कि अभी तक उन्मत्त कैथे का असर उतरा नहीं है। क्या किया जाय?

विक्रमकेसरी कुछ कहने ही जा रहा था कि उन्हें "बचाइये! बचाइये!" की चिल्लाहटें सुनाई दीं।

सब ने उस ओर सर उठाकर देखा। लाल कुत्ता जोर से भूँक उठा। शिखिमुखी ने आश्चर्य में आकर पूछा- "क्या यह पिशाच की पुकार है? या शिथिलालाय के पुजारी की आवाज?" इसके बाद तलवार खींचकर वह उस आर्तनाद की दिशा की ओर दौड़ पड़ा।

बरगद के पेड़ों की छाया से शिखिमुखी रोशनी में आया। आर्तनाद की ओर ध्यान से देखा। इसी समय पुनः चिल्लाहट सुनाई दी- "बचाइये! बचाइये!" इस बार उस कंठध्वनि में पहले की गंभीरता न थी। अंतिम सांस लेनेवाली कराहट सी प्रतीत हुई।

"विक्रम! यह कंठध्वनि शिथिलालय के पुजारी की है। इसमें ज़रा भी संदेह नहीं है। वह सचमुच किसी ख़तरे में फँसा हुआ है।" शिखिमुखी ने कहा।

विक्रम जवाब देने ही जा रहा था कि लाल कुत्ता झाड़ियों पर से कूद पड़ा और आगे बढ़कर भूँकने लगा। सब उसके पीछे झाड़ियों से बाहर आये। वहाँ पर उन लोगों ने जो दृश्य देखा, उसने उन लोगों को भय एवं आश्चर्य में डाल दिया।

एक भारी सर्प शिथिलालय के पुजारी को लगभग घुटनों तक निगल चुका था। पुजारी अपने दोनों हाथों मेंज़मीनपर की किसी चीज़ को ज़ोर से पकड़े इधर-उधर हिलते चिल्लाने की कोशिश कर रहा था।

"चाहे यह पुजारी कैसा भी दुष्ट क्यों न हो, इसे साँप से बचाने में ही मानवता

है।'' ये शब्द कहते शिखिमुखी आगे कूद पड़ा। साँप की कमर पर तलवार से वार किया। चोट खाकर साँप डोलने लगा। उसके मुँह से पुजारी बाहर निकला। शिखिमुखी के दल के वृच्छिक जाति के लोग अपने पत्थर के हथियारों से साँप को अंधाधुंध मारने लगे।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी पुजारी के पास पहुँचे। साँप से बाहर निकलने पर भी पुजारी के पैरों से खून टपक रहा था। उसके पैरों की आकृति बिल्कुल बदल गई थी। वे दोनों पैर मांस के पिंडों की भाँति लाल थे और चमक रहे थे। पुजारी मारे पीड़ा के छटपटाते कराह रहा था। उसके हाथ किसी चीज को ज़ोर से पकड़े हुए थे।

शिखिमुखी झुककर उसे उठाने को हुआ तब शिथिलालय का पुजारी कराहते हुए बोला- ''शिखि, मुझे यहीं पर मरने दो। मरने के पहले मैंने किसी तरह शिथिलालय का पता लगा लिया है। मेरी मन्त्र-शक्ति तथा शिथिलेश्वरी के प्रति मेरी भक्ति बेकार न गई।''

''तुमने सचमुच शिथिलालय का पता लगा लिया? कहाँ पर है शिथिलालय? मरने के पहले भी तुम क्यों डींग मारते हो?'' शिखिमुखी ने क्रोध भरे स्वर में पुजारी से पूछा।

शिखिमुखी की क्रोधपूर्ण बातें सुन पुजारी ने सर उठा कर सीधे उसकी आँखों में देखा। इसके बाद क्षणभर रुक कर बोला- ''तुम्हारी नज़र में मैं दुष्ट हूँ, दगाख़ोर हूँ! बस यही है न?

शिथिलेश्वरी के वास्ते ही मुझे कुछ

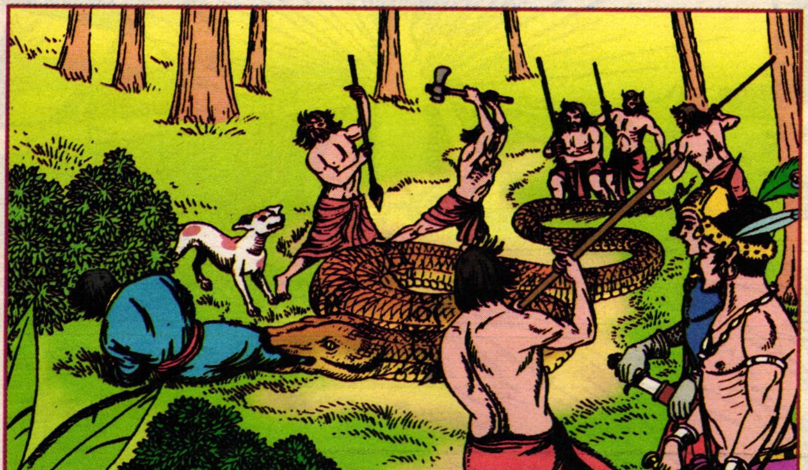

तुच्छ मानवों को कष्ट देना पड़ा। उस देवी के सामने इन मानवों की क्या गिनती है! लो, देखो शिथिलालय के गोपुर का कलश!'' इन शब्दों के साथ पुजारी ने दोनों हाथ ऊपर उठाये?

तब तक शिखिमुखी तथा विक्रमकेसरी ने पुजारी के हाथों में बँधी चीज़ को नहीं देखा था। अब उन्हें सूर्य की रोशनी में आँखों को चकाचौंध करते चमकने वाला कलश दिखाई पड़ा। उनके आश्चर्य की सीमा न थी। उस कलश को देखते ही वृच्छिक जाति के सब लोग साष्टांग दण्डवत करने लगे।

एक-दो पल तक सब मौन रहे। शिखिमुखी को शक हुआ कि शिथिलालय का पुजारी उस पर कोई जादू तो नहीं चला रहा है। विक्रमकेसरी ने न मालूम क्या सोचा, झट दो क़दम आगे बढ़ा कर, कलश को दोनों हाथों से पकड़ कर सारी ताक़त लगा उसे ऊपर उठाने की कोशिश करने लगा, पर वह हिला तक नहीं।

इसे देख उस ख़तरनाक हालत में भी शिथिलालय का पुजारी ठठाकर हँस पड़ा। ''छोटे विक्रम, तुम यह समझते हो कि वह कलश एक छोटी थाली की भाँति ज़मीन पर औंधे मुँह डाल दी गई है? मैं असली बात बताता हूँ। सुनो! मैं तुम्हारे

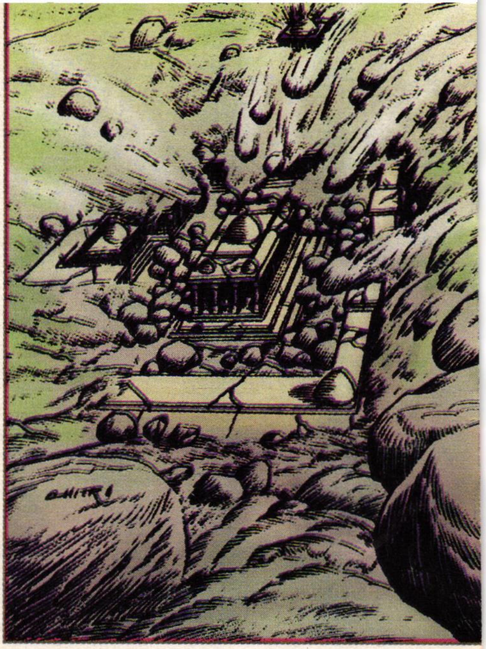

दादा को जानता हूँ। उन में जो हठीलापन है, वह तुम में भी है!''

''पुजारी, तुम यह कहते हो कि शिथिलालाय के गोपुर का कलश ज़मीन में धँस गया है?'' शिखिमुखी ने पूछा।

''कई साल पहले भूकंप के कारण यह मंदिर धँस गया है। यह मंदिर कुछ फुट गहराई तक ज़मीन में धँस गया है। बगल के पहाड़ी पत्थर लुढ़क पड़े जिससे वह ढ़क गया है। उन पत्थरों को हटाओगे तो शिथिलालय तथा उसमें शिथिलेश्वरी देवी तुम्हें दिखाई देंगी। शिखी, तुम शबर जाति वालों को उस देवी से क्या मतलब? तुम लोगों को वहाँ पर प्राप्त होनेवाला सोना ही तो चाहिये न?'' पुजारी ने घृणा भरे स्वर में कहा।

"यह काम बड़े मुश्किल का है। फिर भी करना पड़ेगा। क्यों शिखी, तुम्हारी क्या राय है?" विक्रम ने पूछा।

"चाहे कितना भी मुश्किल काम क्यों न हो, हमें करना ही होगा। इतनी दूर आकर शिथिलालय में प्रवेश किये बिना हम वापस कैसे लौट सकते हैं? क्या तुम्हारे दादा की आत्मा को शांति नहीं पहुँचानी है? क्या तुम्हारे पिता की आज्ञा का पालन नहीं करना है?" ये शब्द कह कर शिखिमुखी ने धीमी आवाज़ में विक्रम से पूछा- "मगर इस पुजारी का क्या करें? यह अपनी जाति के लोगों को हम पर उकसा रहा है।"

नांगसोम ने शायद शिखिमुखी के विचार को भाँप लिया। वह हँसते हुए आगे बढ़कर गुप्त रूप में बोला- "इस पुजारी के दोनों पैर चटनी हो गये हैं। वात के प्रकोप से यह अपनेआप मर जायेगा। इसकी बातों पर ध्यान मत दो। मेरा पूर्ण विश्वास है कि यह कलश शिथिलालय से संबंधित है।"

"यदि हम इस पर गिरे पत्थरों के ढ़ेर को उठा उठाकर नहीं फेंकेंगे तो हम इसके नीचे दबे मंदिर को नहीं देख सकते। यह काम एक दो दिन में पूरा होने का नहीं। हमें इसके समीप ही अपना निवास बनाना होगा। उसके लिये आवश्यक झोंपड़ियाँ

शिखिमुखी ने विक्रम की ओर देखा। उन दोनों ने समझ लिया कि पुजारी मरने के पहले भी इभ्यु जातिवालों तथा वृच्छिक जातिवालों को उनके विरुद्ध भड़का रहा है। वे सोच ही रहे थे कि पुजारी का क्या करना होगा, नांगसोम एक एक क़दम बढ़ाते उस कलश के पास आ पहुँचा और उसका स्पर्श करके देखा। तुरंत उसे लगा कि उसमें कोई नई शक्ति प्रवेश कर गई हो।

नांगसोम एक बार गहरा निःश्वास लेकर बोला- "विक्रम साहब! अब मैं उन्मत्त कैथे के असर से मुक्त हो गया हूँ। इस कलश के अन्दर कोई महिमा है। इसमें सन्देह नहीं कि इसके नीचे मन्दिर है। इन पत्थरों को हटा देंगे।"

पहले बना लेंगे। तब यह काम शुरू करेंगे।'' शिखिमुखी ने कहा।

नांगसोम ने सर हिलाकर वृच्छिक जाति वालों की ओर देखा। वृच्छिक नायक हाथ बाँधे शिखिमुखी के आगे आ खड़ा हुआ। शिखिमुखी ने उसे ज़रूरी काम बता दिया। उसने शिखिमुखी के मुँह से सारी बातें सुनकर कहा- ''शिखी साहब! यहाँ झोंपड़ी बनाना कोई बड़ी बात नहीं है। इन पत्थरों व चट्टानों को हटाना ही बहुत बड़ा काम है। एक-दो हाथी को हम पालतू बना लें, तो यह काम बड़ा आसान हो जायगा।'' फिर शिथिलालय के पुजारी की ओर उंगली से संकेत करके कहा- ''यह तो किसी भी हालत में मर जायेगा, पर बिना दवा-दारू के मरने देना क्या मुनासिब होगा?''

''हो सके तो कोई इलाज करके उसकी पीड़ा दूर करो। मैं उसकी बात बिलकुल भूल गया हूँ।'' शिखिमुखी ने कहा।

वृच्छिक जाति के नेता का आदेश पाकर उसके अनुचर झाड़ियों से पत्तियाँ लाये और पुजारी के पैरों में बाँधने लगे। पुजारी ने इनकार करते हुए कहा- ''मुझे उस पेड़ की डालों में झूला डालकर उसमें बिठा दो।''

इसके बाद उसने नम्र भाव से फिर कहा- ''मैं और चार दिनों से ज़्यादा

नहीं जी सकता। इस बीच में तुम लोग शिथिलालय को खोज निकालो। मैं शिथिलेश्वरी के दर्शन करके निश्चिंत हो प्राण छोड़ूँगा।''

मरनेवाले की इच्छा की पूर्ति करना अपना धर्म है। यह सोचकर शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने उन्हें वैसा ही करने की सलाह दी। उन लोगों ने पुजारी के पैरों में पट्टियाँ बांध दीं, तब निकट के एक पेड़ की डाल पर झूला लगाया और उसमें पुजारी को बिठाया।

उस दिन शाम तक सबने मिलकर पेड़ों की डालें काट दीं। उन्हें ज़मीन में गाढ़कर उन पर पत्ते बिछाये। वृच्छिक जातिवालों, शिखिमुखी तथा उसके अनुचरों के रहने योग्य छोटी-छोटी

झोंपड़ियाँ तैयार कीं। उस रात को उन्हें ठीक से नींद न आयी। चारों तरफ़ जंगली हाथी चिंघाड़ रहे थे। खूँख्वार जानवरों के गर्जन उनके कान के पर्दों को फाड़ रहे थे।

झोंपड़ियों के चारों तरफ़ अलाव जलाये ऊँघते उन लोगों ने सूर्योदय तक समय बिताया।

दूसरे दिन सूर्योदय के साथ सबने लताओं के रस्से तैयार किये। उनसे बाँधकर बड़े बड़े पत्थर और चट्टानों को हटाने का काम शुरू किया। उनके कार्य में विघ्न डालते बीच बीच में जंगली हाथी हमला कर बैठते थे। ऐसी हालत में वे लोग डफ़ली बजाकर उन्हें भगा देते, या पत्थर फेंककर खदेड़ दिया करते थे।

सूर्यास्त होने तक उनके काम में कोई बड़ा विघ्न पैदा न हुआ। शिखिमुखी ने उस दिन का काम समाप्त कर रसोई बनाने की तैयारी करने का अपने अनुचरों को आदेश दिया। ठीक उसी समय हठात् उस प्रदेश के चारों तरफ़ के टीलों पर चार हाथी दिखाई पड़े। उन पर बड़े बड़े त्रिशूलधारी चार भयंकर आकृति के व्यक्ति बैठे थे।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने अपने अनुचरों को सचेत किया। सब हथियार लेकर लड़ने को तैयार हुए। पर उसी वक़्त हाथियों पर सवार हुये लोगों ने कहा- "जहाँ के लोग वहीं खड़े हो जाइये। हमारे पीछे एक सौ हाथियों पर और अघोरी आ रहे हैं। भागने की कोशिश करोगे तो तुम लोगों को अपने प्राणों से हाथ धोना पड़ेगा।"

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने यह सोचकर नांगसोम तथा वृच्छिक नायक की ओर देखा कि अब क्या किया जाय? वे दोनों अपने हथियार उठाये त्रिशूलधारियों की ओर चल पड़े।

(और है)

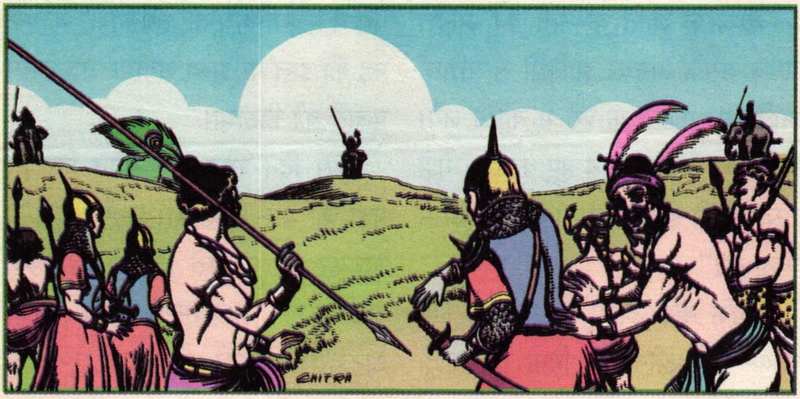

पढ़ा हुआ-किया हुआ

एक बार एक गुरु थे जिनका नाम था भाद्रपद। वे पेरिपालम गाँव के राम मन्दिर में धार्मिक ग्रन्थों में से उपदेश दिया करते थे। अपने उपदेशों के लिए आसपास के गाँवों में भी उनकी ख्याति थी। इस तरह पेरिपालम गाँव के आसपास के सब गाँव वाले गुरु भाद्रपद को अत्यन्त आदर की दृष्टि से देखते थे। एक बार जब गुरुजी नदी के किनारे स्नान कर रहे थे एक बडी सी लहर ने उन्हें धकेल कर नदी की गहराई में पहुँचा दिया। गुरुजी मदद के लिये चिल्लाने लगे। उनके सब शिष्यों को तैरना आता था। परन्तु उनमें से किसी में इतनी हिम्मत न थी कि नदी में कूद कर उन्हें बचा ले। इसलिए वे सब जोर जोर से चिल्लाने लगे "मदद करो! कृपया कोई मदद करो।" उस समय मंगय्या नामक एक मछुआरा वहाँ से गुज़र रहा था। उसे भाद्रपद की स्थिति मालूम पड़ी तो वह बिना अधिक सोचे-विचारे नदी में कूद पड़ा। बड़ी मुश्किल से पानी की धार की विपरीत दिशा मे तैरते हुए अपनी जान पर खेलकर उसने भाद्रपद की जान बचाई। जैसे ही उनके गुरु को वह किनारे पर लाया, शिष्यों ने मंगय्या को घेर लिया और उसने जिस व्यक्ति की जान बचाई उनकी महानता का वर्णन करने लगे।

थोड़ी देर में गुरु भाद्रपद उस घटना के दुष्प्रभाव से मुक्त होकर सामान्य स्थिति में आ गये। उन्होंने फिर अपने शिष्यों को रोका और स्वयं उनसे कहने लगे, " यहाँ यदि किसी की महानता की प्रशंसा की जानी चाहिये तो वह है यह 'मंगय्या'। हज़ारों तथ्यों का जानकार व्यक्ति भी उस एक व्यक्ति से अधिक अच्छा नहीं है जो अपने याद किये हुए पाठों में से किसी एक पर भी अमल करता है।" फिर उन्होंने मंगय्या की ओर मुड़कर हाथ जोड़कर आदर सहित उसे प्रणाम किया। अब जाकर शिष्यों को महसूस हुआ कि वे अपने कर्तव्य से चूक गए थे और उन्हें अपने गुरु को बचाना था। शर्म से उनके सर झुक गये।

-भीमावरप्पु पुरुषोत्तम

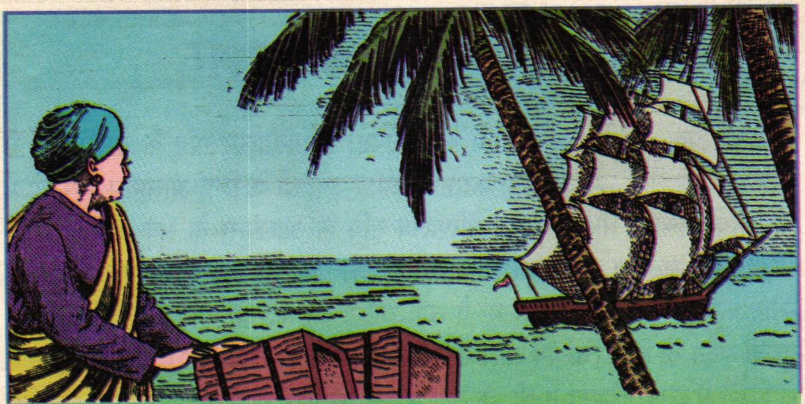

लहरों का मुन्शी

उन दिनों ब्रिटिश सरकार नई-नई थी। कामशास्त्री ब्राह्मणों के ग्राम केरटा का मुन्शी था। कामशास्त्री मामूली आदमी न था। बड़ा चालाक था। रिश्वतें लिया करता। हर किसी से लेता। किसी का लिहाज न करता। उस गाँव में एक कलेक्टर की भी कुछ भूमि थी। उसने उस भूमि का कर चुकाने के लिए कुछ रुपये भेजे। मुन्शी ने यह कहकर वह रकम वापिस कर दी कि यदि उसका मामूल यानी घूस न दी गई, तो वह उसे जमा न करेगा। कलेक्टर ने बहुत कोशिश की पर कुछ फायदा न हुआ।

उसी समय गाँव के लोगों ने एक फरियाद की- "यह मुन्शी घूस लेता है। हम इसके मारे तंग हैं। फरियाद रेवेन्यू बोर्ड के बड़े-बड़े अफ़सरों के पास गई। एक प्रति लन्डन के प्रिवी कॉन्सिल के पास भी भेजी गई।

इस तरह के आदमी से तहलका मच सकता है इसलिए यह निर्धारित करने के लिए कि उसको क्या सज़ा दी जाये, एक कमेटी बिठायी गई। यह निर्णय किया गया कि एक साल तक महासमुद्र में एक द्वीप में उसे छोड़ दिया जाये और एक वर्ष तक, जितनी रसद ज़रूरी हो, उसे दे दी जाये। यह निर्णय जब भारत के गवर्नर के पास पहुँचा, तो मुन्शी को भी सूचना मिली। उससे कहा गया कि ज़रूरी रसद के लिये वह दर्ख्वास्त दे। मुन्शी ने और चीज़ों के साथ दस रीम कागज़, स्याही, कलम, पेन्सिलों की भी अर्जी दी। जब यह सूची मिली तो अधिकारियों ने वे सब

सी. लक्ष्मी

चीज़ें दे दीं और उसे स्टीमर पर चढ़वा दिया।

मुन्शी जब द्वीप में पहुँचा, तो उसने कागज़ों की कॉपी बनाकर, उसकी जिल्द बाँध ली, फिर उन पर लकीरें खींचकर, उन पर लिखने लगा। दस लहरें तट तक आईं, उनमें से आठ वापिस चली गईं-इस प्रकार वह जैसा जी में आता लिखता। कॉपियाँ भरती जाती थीं। इतने में ईस्ट इण्डिया कम्पनीवालों का जहाज़ उस द्वीप में आया। मुन्शी ने उसे रोका, सौ रुपये की रसीद देकर, उसने चीज़ें लाने के लिये कहा। स्टीमर के अंग्रेज़ ने पूछा- ''यह रसीद क्या है? तुम कौन हो?'' ''जब तक ये दे नहीं देते, स्टीमर बन्दरगाह से नहीं हिल सकता। मैं तरंगों का मुन्शी हूँ। ये देखो मेरे रिकार्ड की पुस्तक।'' मुन्शी ने कहा।

अंग्रेज़ ने सौ रुपये देकर, रसीद के पीछे लिख दिया- ''लहरों के मुन्शी को दी गई रकम।'' इसके बाद से उस तरफ़ से जो जहाज़ गुज़रता, मुन्शी उससे सौ रुपये वसूल करता। उसने जो रसीदें दीं थीं, वे सब इंग्लैन्ड में मुख्य कार्यालय में पहुँचीं। वहाँ आडिटरों ने आपत्ति की कि ये सब लिखी रसीदें हैं। छपी रसीदें कहाँ हैं-नहीं तो हिसाब ठीक नहीं होगा, यह उन्होंने भारत लिख भी भेजा। यह पत्र ज़िला कलेक्टर के पास पहुँचा। आख़िर पूछताछ करने पर मालूम हुआ रसीद देने वाला वह कामशास्त्री ही था जो, रिश्वतखोरी के लिए समुद्र के एक द्वीप में सज़ा भुगत रहा था। इतना समर्थ व्यक्ति है, यह सोच सरकार ने तय किया कि जो कुछ मुन्शी को दिया जाता है, वह घूस नहीं, ''मामूल'' है। कामशास्त्री की सज़ा भी रद्द कर दी।

बेकार का यश

कलिंग देश का राजा दानकर्ण कहलाता था। वह हर रोज़ हजारों गरीब लोगों को अन्नदान करता और ब्राह्मणों को स्वर्णदान भी देता। इसलिए सभी देशों में महादाता के रूप में उसका यश फैल गया।

कलिंग राजा के एक पुत्री थी। जब वह शादी के योग्य हुई तब योग्य वर की खोज होने लगी। आख़िर मालूम हुआ कि कांभोज देश का राजकुमार सब तरह से कलिंग राजकुमारी के योग्य वर है।

कलिंग राजा ने कांभोज राजा के पास दूत भेजा। दूतों ने जाकर कांभोज राजा से कहा-''महाराज, हमारे राजा की ख्याति सर्वविदित है। वे हज़ारों गरीबों और ब्राह्मणों को प्रतिदिन दान दिया करते हैं। हमारी राजकुमारी के साथ आपके पुत्र का विवाह हो जाए तो बड़ा अच्छा होगा।''

''मुझे लगता है कि तुम्हारे देश में गरीब ही गरीब भरे हैं। ऐसे गरीब देश के साथ हम संबंध रखना नहीं चाहते।'' कांभोज राजा ने जवाब दिया।

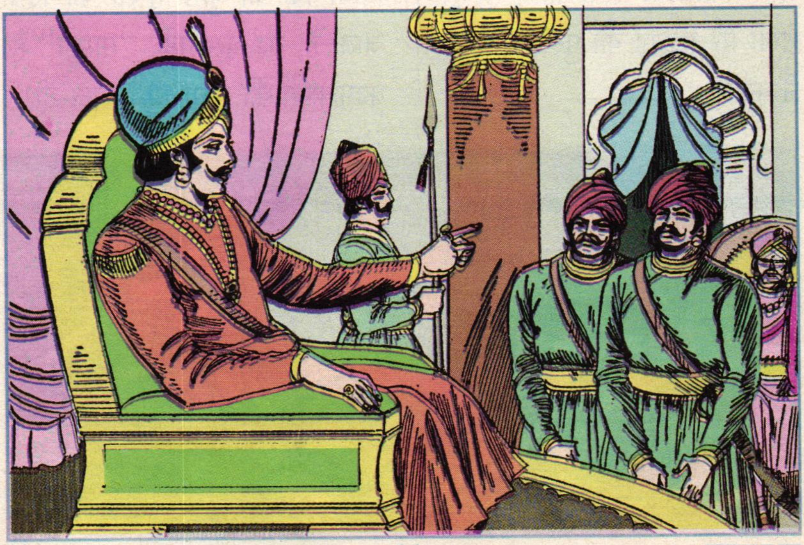

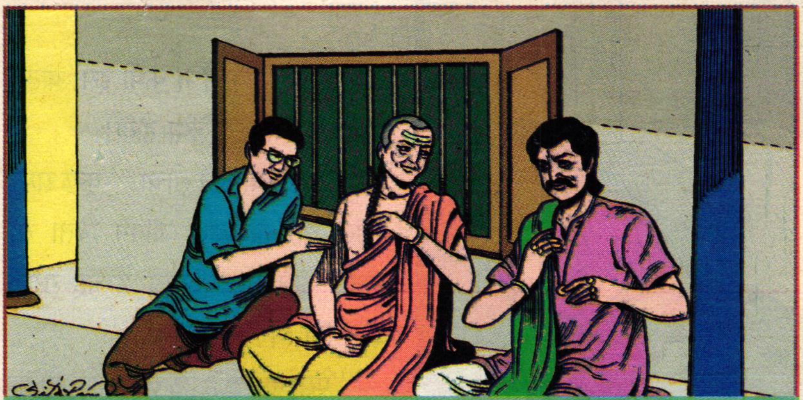

सब से बड़ा गुण क्या है?

एक बार तीन व्यक्ति एक सराय में मिले। उनमें से एक अत्यन्त सफल डॉक्टर था। दूसरा एक बड़ा विद्वान था। तीसरा व्यक्ति अत्यन्त धनवान था। वे तीनों अपनी अपनी व्यक्तिगत महानता के गुण गाते एक बहस में उलझ गए।

धनवान बोला, ''दुनिया पैसे से चलती है। हर कोई धन की बात सुनता है।''

''यह सच नहीं है। मनुष्य यदि जीवित है और स्वस्थ है तभी वह सुख-वैभव को भोग सकता है। एक चिकित्सक का पेशा सबसे बड़ा है,'' डॉक्टर ने कहा।

''यदि कोई मनुष्य सौ वर्ष भी जिये और उसके पास धन का बोझ भी हो परंतु बिना शिक्षा के वह जानवर से कुछ ज़्यादा अलग नहीं है।,'' विद्वान बोला।

सराय का मालिक उनकी बातें सुन रहा था। उसने एक सलाह दी, ''केवल बहस करके यह सिद्ध करना कठिन है कि तुम तीनों में कौन सबसे बड़ा है। ऐसी कोई परीक्षा आयोजित करो जिससे यह निश्चित हो सके कि तुम तीनों में कौन सबसे बड़ा है।'' तब उन तीनों ने इस बात की परीक्षा करने का निश्चय किया कि उन के बीच में सबसे बड़ा कौन है।

वे तीनों गाँव में गए। एक दस वर्ष का लड़का जो उसी सराय के एक कोने में सो रहा था, उनके पास आकर बोला, ''साहब, मैं अनाथ हूँ। कृपया मुझे साथ ले चलिए। मैं आपकी हर तरह से सेवा करूँगा। उन्हें उस पर दया आ गई और उन्होंने उसे साथ ले लिया। जब वे गाँव में घुसे तो उन्हें एक बहुत पुरानी इमारत दिखाई दी। जब वे उस मकान में गये तो उन्हें किसी

सीएच.डी.लक्ष्मणराव

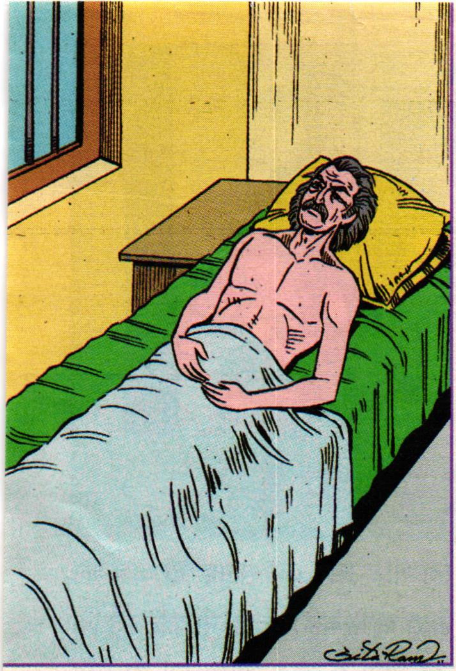

के बुरी तरह से खाँसने की आवाज़ सुनाई दी।

चारों उस कमरे की तरफ़ गये जिधर से आवाज़ आ रही थी। वहाँ उन्हें बिस्तर पर लेटा हुआ एक बूढ़ा आदमी दिखा।

लड़के ने उससे पूछा, "महाशय, क्या घर में कोई नहीं है?"

बूढ़े ने आह भरते हुए कहा- "हाँ बेटा मैं बिलकुल अकेला हूँ।"

डॉक्टर ने बूढ़े की कलाई पकड़ी और उसकी नब्ज़ देखी। उसने अपने मन में सोचा, "यदि ये आदमी सही दवाइयाँ ले तो बहुत जल्दी अच्छा हो जाय।" इसी दौरान धनवान व्यक्ति और वह विद्वान मकान को सब तरफ़ से देखने चले गए। उन्हें लगा कि कभी न कभी इस आदमी ने अच्छा जीवन जिया होगा।

धनी व्यक्ति ने सोचा- "कुछ समय पहले यह खुशहाल जीवन बिता रहा होगा। अब अन्त समय में वह गरीबी झेल रहा है।"

"ऐसा लगता है कि यह व्यक्ति विद्वान नहीं होगा नहीं तो उसका घर आज इस हालत में न होता। चारों तरफ़ पढ़ेलिखे विद्वानों से घिरा होकर गुलज़ार होता।"

फिर अचानक तीनों आदमियों ने एक ही साथ एक ही बात सोची। उन्होंने उस आदमी की स्थिति का उपयोग करके उन तीनों में कौन सब से बड़ा है यह जानने की सोची।

दूसरे ही दिन से चिकित्सक ने उसका इलाज करना शुरू कर दिया। वह बड़े ध्यान से उसे दवाइयाँ दे रहा था। तीन दिन में उस व्यक्ति को ठीक करके उसकी शक्ति को वापस लाने का उसका निश्चय था।

धनी व्यक्ति ने घर के और दवाओं के सारे खर्च उठा लिए। खाना बनाने के लिए भी नौकर रख लिया गया।

विद्वान आदमी उस बूढ़े के पास बैठता और उसे पवित्र पुस्तकों की कहानियाँ सुनाता और उसका मनोरंजन करता।

वह बच्चा जो उन तीनों के साथ वहाँ आया था पहले ही दिन से उस बूढ़े से लगाव महसूस करने लगा। वह सारे दिन उसी के पास बैठता, उसकी देखभाल करता और उसकी बड़े प्रेम से सेवा करता। बूढ़ा बहुत जल्दी ठीक हो गया जैसी कि सब को आशा थी।

और तब वे तीनों आदमी फिर से उसी बहस में पड़ गये। उनमें से हर कोई यही कह रहा था कि उसी की वजह से बूढ़ा ठीक हो गया था।

बूढ़ा आदमी सुनता रहा और धीरे धीरे हँसता रहा। ''तुममें से अकेले ही किसी ने ठीक होने में मेरी मदद नहीं की। वास्तव में यह बच्चा है जिसने ठीक होकर शक्ति अर्जित करने में मेरी मदद की। तुम लोगों में से एक बहुत धनवान है, दूसरा हुनरमन्द चिकित्सक है और तीसरा बड़ा विद्वान है। मुझमें ये तीनों बातें हैं। मेरे पास धन से भरी तिजोरी है।

एक समय था जब मैंने कई रोगियों को मौत के मुँह से खींचकर उन्हें स्वस्थ और दीर्घ जीवन जीने में मदद की थी। अपनी विद्वत्ता के लिये मुझे अनेक पुरस्कार मिले। मैं खुद एक डॉक्टर था पर इन में से किसी चीज़ ने मेरी जान बचाने में मेरी मदद नहीं की। उसका कारण यह था कि मुझे किसी मनुष्य के स्नेह की जरूरत थी। मुझ से लोग जो कुछ चाहते थे वह था मेरा पैसा, हुनर या समय। इस बच्चे ने मुझ पर दया और अपनत्व दर्शाया और मुझे अपना पुराना व्यक्तित्व प्राप्त करने में मेरी मदद की। मेरी दृष्टि में, सच्चा स्नेह ही सबसे बड़ा गुण है। अब मैं इस बच्चे को गोद लेना चाहता हूँ।''

तीनों आदमी यह सोचते हुए सन्तुष्ट होकर चल दिये कि उनकी बहस का अन्तिम परिणाम सुखद रहा।

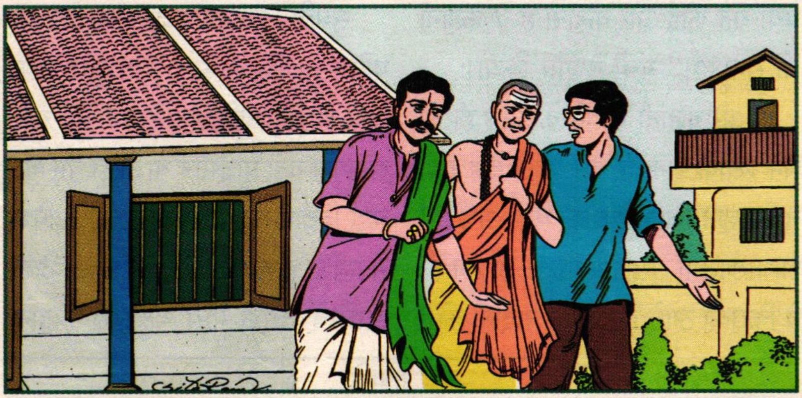

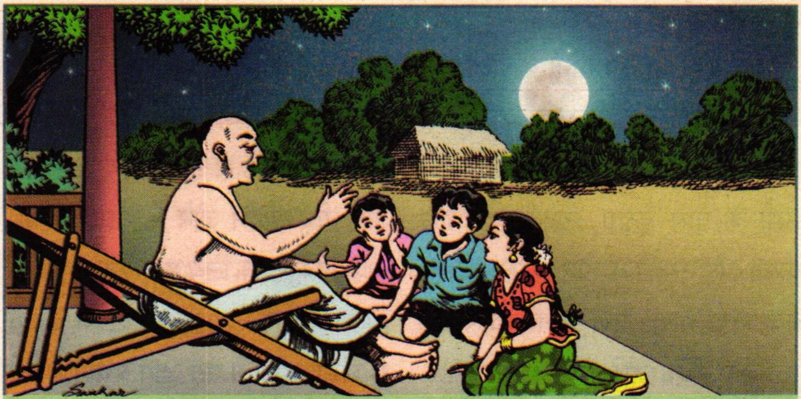

पुरस्कार

पूर्णिमा की चाँदनी थी। बाबा भोजन के बाद आराम कुर्सी में बैठ गए, बच्चे उससे पहले ही आ गये थे। बाबा ने सुंघनी निकाली और नाक में डालते हुए यह श्लोक पढ़ा

"अज्ञा एव जनाः प्रायो
वच्च्यन्ते वंचकै नृभिः
प्राज्ञा नजातु वंच्यन्ते
सुमति श्चोल राजिव"

"इसका अर्थ क्या है बाबा? बाबा क्या यह कोई और कहानी है ? कहानी तो सुनाओ।" बच्चों ने शोर किया।

"अरे कहानी सुनाने के लिये ही तो मैंने श्लोक सुनाया था। पहले यह क्यों नहीं पूछते कि श्लोक का क्या अर्थ है? साधारणतया संसार में कितने ही ठग हैं। वे किसको ठगते हैं? बेचारे नादानों को? क्यों? परन्तु कभी कभी अक्लमन्द इन ठगों को ही ठगते रहते हैं। कभी सुमति नाम के चोल राजा ने इसी तरह ठगा था, यह इस श्लोक का अर्थ है।" बाबा ने कहा।

"सुमति ने किसको ठगा था, बाबा? ठग कौन था, बाबा?" बच्चों ने एक एक प्रश्न किया।

"मुझे सुनाने दो।" कहते हुए बाबा ने यह कहानी सुनानी शुरू की।

सुमति नाम का राजा चोल देश का परिपालन किया करता था। सुमति का अर्थ ही बड़ा बुद्धिमान है न? वह राजा सचमुच बड़ा बुद्धिमान था। बड़ा वीर था। बड़ा विद्वान था। अगर कोई किसी विद्या में प्रवीण होता, तो उसको पुरस्कार देता। इसलिये उसके पास बहुत से विद्वान,

सी. शेषाद्रि

चतुर व्यक्ति आते और अपना पांडित्य और चातुर्य दिखाते।

जानते हो, एक बार क्या हुआ? एक ने आकर राजा को नमस्कार किया। राजा ने पूछा- "तुम किस विद्या में प्रवीण हो?"

"महाराज, मैं बड़ा वैज्ञानिक हूँ, मैं ऐसी विद्या जानता हूँ कि किसी भी धातु से सोना बना सकता हूँ। यह हमारी पारम्परिक विद्या है।" उसने कहा।

इस तरह के ठग अपने को वैज्ञानिक बताकर, लोगों को ठगते और चाँदी आदि चुराकर भाग जाते।

राजा क्योंकि अक्लमन्द था, इसलिए वह यह जान गया। उसने उसका अपमान करने का भी निश्चय किया। इसलिए उसने नौकर को बुलाकर कान में कुछ कहा। उस नौकर ने क्या किया? उसने एक लोहे का सन्दूक लाकर ठग को दिया।

ठग ने सोचा कि उसकी चाल चल गई थी। हो सकता है कि उसने सोचा कि राजा उस सन्दूक में सोना, चान्दी, हीरे-मोती रखकर उसे दे रहा था। जब उसने खुशी-खुशी लोहे का सन्दूक खोला तो वह खाली था।

उसने राजा से कहा- "यह सोच कि आप कोई बड़ा सा पुरस्कार मुझे देंगे, मैं इतनी दूर से पहाड़ सी आस लेकर आया और आपने मुझे यह खाली सन्दूक दिया। क्या मेरा इस तरह अपमान करना ठीक है?

राजा ने कहा- "यह भी क्या बात है, तुम कह रहे हो कि सोना बनाना तुम्हारी पारम्परिक वृत्ति है। कहते थे कि किसी भी धातु का सोना बना सकते हो। तब मैं तुम्हें क्या दे सकता हूँ? तुम सोना तैयार करके इसमें रख सकोगे, इसलिए मैंने यह सन्दूक दिया। इसमें गलती क्या है?" सब के सब ठट्ठा मारके हँसे।

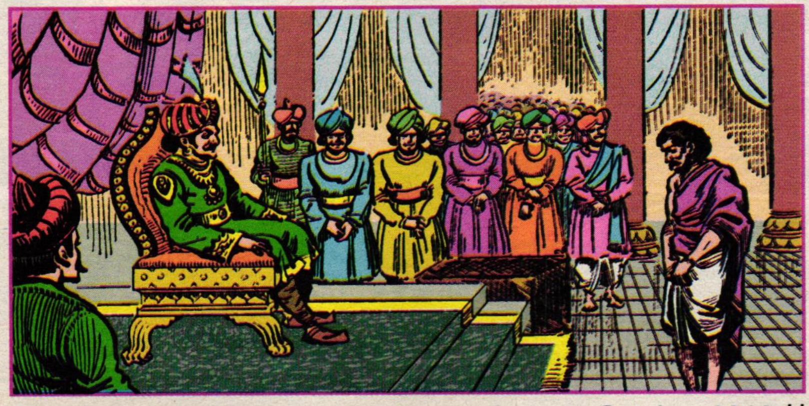

Log onto www.chandamama.com
YOUR CHANDAMAMA IS AVAILABLE IN MANY
AVATARS!
Junior Chandamama
(4+ age group):
A magazine for the little ones peppered with activities, pictures, and stories that will grip their imagination !
Junior Chandamama
₹ 20/-
Regional Chandamama
Read your favourite stories in your own language! Chandamama takes you closer home even as your imagination soars!
Chandamama
చందమామ
चन्दामामा
चांदोबा
₹ 30/-
Chandamama English
(9+ age group)
A children's magazine that has adapted itself to the changing needs of children across decades, Chandamama English offers you a delectable mix of the classic and the contemporary in 70 pages that value fun!
₹ 25/-
Revamped
Redesigned
Relevant
Read it!
YOUR LANGUAGE, YOUR CHANDAMAMA.
Available in 11 languages:
Telugu, Hindi, Marathi, Oriya, Kannada, Bengali, Tamil, Malayalam, Gujarati, Assamese, Sanskrit.

मैं क्या बन सकता हूँ?

फ़ूड क्रिटिक या फूड राइटर किसी ऐसे लेखक के लिये उपयोग होने वाला शब्द है जो भोजन या रेस्त्राओं का अन्वेषण करता है और फिर अपनी खोज का परिणाम प्रकाशित करता है। अख़बारों और पत्रिकाओं में भोजन के कॉलम्स के माध्यम से अपने मत बताने वाले फूड कॉलमिस्ट्स कहलाते हैं।

फूड क्रिटिक फ़ास्ट फूड प्रतिष्ठानों से लेकर महँगे रेस्त्राओं, कैफ़े, दुकानों, भोजन निर्माताओं या अन्य भोजनशालाओं के बारे में लिखते हैं। वे लोगों को विचारशील, विवरणात्मक और पक्षपात रहित जानकारी देते हैं।

क्रिटिक इन भोजनशालाओं में जाते हैं, उनके विशेष व्यंजन चखते हैं और फिर अख़बारों/पत्रिकाओं, इन्टरनेट, टीवी या रेडियो के माध्यम से अपने निष्कर्ष लोगों तक पहुँचाते हैं। आजकल इन्टरनेट रेस्त्राओं के बारे में जनमत बनाने में महत्वपूर्ण कारक बनता जा रहा है।

इस काम के लिये यह आवश्यक है कि आपके सामने जो भी व्यंजन आए, आप उसे चखें, चाहे वह कितना ही तेज़ या अजीब हो और फिर जितना हो सके उतने विवरण के साथ अपना विचार लिखें।

और केवल भोजन को चखना ही अच्छा फूड क्रिटिक बनने के लिये आवश्यक नहीं। इसके साथ ही आपको भोजन के हर पहलू के बारे में, कुछ प्रकार के भोजन किस प्रकार प्राप्त किये जाते हैं, से लेकर कुछ व्यंजनों के इतिहास और विशेष व्यंजनों में डाली जाने वाली चीज़ों के बारे में, वे कैसे बनाए जाते हैं और रेस्त्रां किस तरह काम करता है, पता होना चाहिये।

फूड क्रिटिक को ईमानदार और सच्चा होना चाहिये। 'क्रिटिक' शब्द हमेशा नकारात्मक हो, यह आवश्यक नहीं। यदि भोजन अच्छा नहीं हो तो एक समझदार क्रिटिक किसी भोजन या रेस्त्रां को बेहतर बनाने के लिये सुझाव दे सकता है।

मेहनताना

फूड क्रिटिक शहर और उनकी समीक्षाएँ छापने वाले प्रकाशकों के आधार पर मेहनताने की आशा रख सकते हैं। किसी स्थानीय समाचार-पत्र में लिखने वाले की अपेक्षा किसी मासिक राष्ट्रीय पत्रिका में अपना काम दिखाने वाले क्रिटिक की आय अधिक होगी।

- साई

चन्दामामा सामान्य ज्ञान पहेली - ४५

(१६ वर्ष से कम आयु के बच्चों के लिए)

सही उत्तर देने वाली प्रविष्टियों में से एक को ₹२५०/- रुपये का इनाम दिया जाएगा।*

**यदि सही प्रविष्टियों की संख्या एक से अधिक हो तो सफल प्रतियोगियों में से प्रत्येक को ` ५०/- की राशि मिलेगी।*

तुम्हें क्या करना है:

१. एक कागज पर उत्तर लिखो।
२. अपना नाम, आयु तथा पिन कोड के साथ घर का पूरा पता लिखो।
३. लिफाफे पर **चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४५** लिखो।
४. तुम्हारे उत्तर ३० नवम्बर तक मिल जाने चाहिये।
५. सही उत्तर जनवरी २०१३ के अंक में प्रकाशित होंगे।

गाँधीजी के बारे में

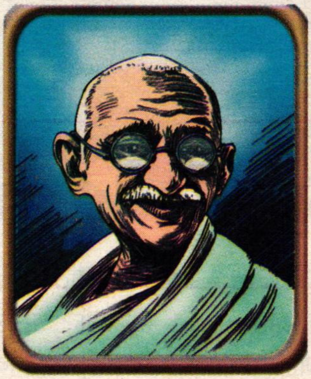

१. गाँधीजी कहाँ पैदा हुए थे?
२. गाँधीजी की माता का नाम क्या था?
३. दक्षिण अफ्रीका के किस शहर में वह प्रसिद्ध घटना घटी जिसमें गाँधीजी को ट्रेन के डिब्बे से बाहर निकाल दिया गया था?
४. गाँधीजी ने किस काँग्रेस अधिवेशन की अध्यक्षता की?
५. गाँधीजी ने भारत में एक समाचार पत्र निकाला। उसका नाम क्या था?
६. गाँधीजी ने अपना पहला आश्रम कहाँ स्थापित किया?
७. गाँधीजी ने भारत में पहली बार कहाँ सत्याग्रह किया?

चन्दामामा सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी-४२, जुलाई २०१२ के उत्तर:

१.चिकनकारी; २.मैसूर; ३.पंजाब; ४.गुजरात व राजस्थान; ५. आन्ध्र प्रदेश; ६.ओड़िशा; ७.महाराष्ट्र; ८.काँचीपुरम्

जुलाई'१२ की सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का कोई विजेता नहीं है।

चुटकुले

विनयः एक बार मैं सड़क पर खेल रहा था, तभी तेज़ी से आती हुई एक बाइक ने मुझे ऐसी टक्कर मारी कि मैं बेहोश होकर गिर पड़ा।

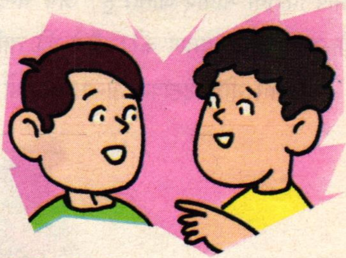

विशालः हे भगवान्! तो तुम उस हादसे में बचे या नहीं?

विनयः ठीक से याद नहीं, तब मैं केवल चार साल का था।

दो साँप बातें कर रहे थे। एक ने दूसरे से पूछा, "क्या हममें ज़हर है?"

दूसरे ने कहा, "हाँ, क्यों?"

"मैंने अभी-अभी अपना होंठ काट लिया!"

मरीज़ः मैंने एक चाबी निगल ली।

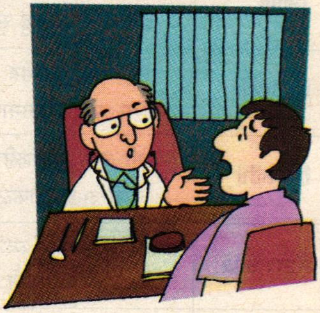

डॉक्टरः कब?

मरीज़ः चार माह पूर्व!

डॉक्टरः तो अब तक क्या कर रहे थे?

मरीज़ः मैं दूसरी चाबी का उपयोग कर रहा था पर अब वह भी खो गई है।

चार साल का बच्चा कार की पिछली सीट पर सेब खा रहा था। उसने पूछा, "डैडी, मेरा सेब भूरा क्यों होता जा रहा है?"

"क्योंकि," पिता ने समझाया, "जब तुमने इसका छिलका खा लिया तो सेब का गूदे वाला भाग हवा के सम्पर्क में आया जिससे इसका ऑक्सिडाइज़ेशन हो गया और मॉलिक्यूल संरचना में पतरवर्तन के कारण इसका रंग बदलने लगा।"

इसके बाद काफ़ी देर शान्ति रही। फिर बच्चे ने पूछा, "डैडी, क्या आप मुझसे बात कर रहे हैं?"

चूँ-चूँ का डिब्बा

आप कितनी भाषाएँ जानते हैं? अब चन्दामामा के माध्यम से बहुत सी भाषाएँ जानें एवं आत्मविश्वास के साथ भारत भ्रमण करें! नीचे की तालिका में दिए गये भाषा के शब्द पढ़ें। उसके बाद तालिका में और नीचे देखकर अन्य भाषाओं में इन्हें किस तरह बोला एवं लिखा जाता है वह जानें।

English	No I'm free now.	Have you understood?
Hindi	नहीं अब मेरे पास कोई काम नहीं।	क्या तुम समझ गए/गईं?
Telugu	లేదు, నేను ఇప్పుడు ఖాళీగా ఉన్నాను. लेदु, नेनु इप्पुडु खालीगा वुन्नानु।	నీకు అర్థమైందా? नीकु अर्थमेन्धा?
Tamil	இல்லை, நான் இப்போது சும்மாத்தான் இருக்கிறேன். इल्लै, नाण इप्पोद्धु सुम्मततान इरुक्किराएन।	உனக்குப் புரிந்ததா? उनक्कु पुरिन्धाधा?
Bengali	না, এখন আমার কোনও কাজ নেই। ना, एखोन आमार कोनो काज नेई।	তুমি কি বুঝতে পেরেছ? तुमी कि बुझते पेरेच्छो?
Marathi	मी आता मोकळीच/मोकळाच आहे. मी आता मोकळा/मोकळी आहे।	तुला हे समजलं का? तुला हे समजल का?
Kannada	ಇಲ್ಲ, ಈಗ ನನಗೆ ಪುರುಸೊತ್ತಿದೆ. इल्ला, ननगे पुरुसोत्तिला।	ನಿಮಗೆ ಅರ್ಥವಾಯಿತೇ? निमगे अर्थवायिते?
Odia	ମୁଁ ବର୍ତ୍ତମାନ ଖାଲି ଅଛି। मुं बर्तमान खाली आच्छी।	ତୁମେ ବୁଝିପାରିଲ ? तुमे बुझिपारिला?
Gujarati	ના હવે મને ફુરસદ છે. ना हवे मने फुरसद छे।	શું તમે સમજી ગયા? शुं तमे समजी गया?
Assamese	নহয়, মই এতিয়া আজৰি। नोहोई, मोई आतिया आजोरी।	তুমি বুজি পালানে? तुमी बुजि पालाने?
Malayalam	ഇപ്പോൾ എനിക്ക് തിരക്കില്ല. इप्पोल एनिक्कु थिरक्किल्ला।	നിങ്ങൾക്ക് മനസ്സിലായോ? निन्गालक्कु मनस्सिलायो?
Sanskrit	न, अधुना व्यस्त: नास्मि। ना, अधुना व्यस्त नास्मि।	अवगतं वा? अवगतं वा?

English	Have you taken notes?	It is enough for today.
Hindi	क्या तुमने नोट्स लिये?	यह आज के लिये काफ़ी है।
Telugu	నీవు నోట్స్ తీసుకున్నావా? नीवु नोट्स थीसुकुन्नावा?	ఈ రోజుకు ఇది చాలు. ईरोजुकु इधि चालु।
Tamil	நீ குறிப்பு எடுத்துக் கொண்டாயா? नी कुरिप्पु एदुत्तु कोन्डाया?	இன்று இது போதும். इन्द्रु इधु पोढुम।
Bengali	তুমি কি নোট নিয়েছ? तुमी कि नोटे नियेच्छो?	আজকের জন্য এটাই যথেষ্ট। आजकेर जोन्यो एटाइ यथेष्टो।
Marathi	तू मुद्दे काढलेस का? तु मुद्दे काढलेस का?	आजच्यासाठी हे पुरेसं आहे. आजच्यासाठी हे पुरेस आहे।
Kannada	ನೀವು ಟಿಪ್ಪಣಿ ಮಾಡಿಕೊಂಡಿರಾ? नीवु टिप्पणी माडिकोन्डिरा?	ಇವತ್ತಿಗೆ ಇಷ್ಟು ಸಾಕು. इवत्तिगे इष्टु साकु।
Odia	ତୁମେ ନୋଟ୍ସ ନେଇଛ କି? तुमे नोट्स नेइछा कि?	ଏହା ଆଜି ପାଇଁ ଯଥେଷ୍ଟ। एहा आजि पायेन यथेष्ट।
Gujarati	તમે નોટ્સ લઈ લીધા? तमे नोट्स लई लीधा?	આજ માટે પૂરતું છે. आज माटे पूरतुं छे।
Assamese	তুমি টুকি ললানে? तुमी तुकि लोलाने?	আজিৰ বাবে এয়াই যথেষ্ট। आजिर बाबे ऐयाइ जथेस्ठो।
Malayalam	നിങ്ങൾ എഴുതിയെടുത്തോ? निन्गाल एझुथियेदुतो?	ഇന്നത്തേക്ക് ഇത്ര മതി. इन्नथेक्कु इथरा माथि।
Sanskrit	त्वया टिप्पणि: कृता वा? त्वया टिप्पणी: कृता वा?	अद्य एतावत् पर्याप्तम्। अद्य एतावत पर्याप्तम।

कैदियों को शिक्षक बनाना

जल्दी ही उच्च सुरक्षा वाली तिहाड़ जेल की जेल नं. ३ में रहने वालों को शिक्षकों के रूप में एक नई पहचान मिलने वाली है। 'द हिन्दू' समाचारपत्र की ख़बर के अनुसार दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग ने एक विशेष कार्यक्रम बनाया है जिसके तहत जेल में औपचारिक शिक्षा योजना शुरू की जायेगी। इसके लिये दो तरीके अपनाये जा रहे हैं - एक, जिसके अनुसार वहाँ रहने वालों को सिखानेवालों के रूप में तैयार करके और एक उचित पाठ्यक्रम और परीक्षा पद्धति लागू करके। कैदियों को आठ सरकारी स्कूल के शिक्षकों द्वारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है।

प्रशिक्षित होकर ये कैदी दूसरे कैदियों को तीन ''प्राइमर'' पुस्तकों की सहायता से जो प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए विशेष रूप से उपलब्ध करवाई गई हैं- प्रशिक्षित करेंगे। अगली कक्षाओं में पहुँचने के लिये वे परीक्षा भी दे सकते हैं। शिक्षा इन कैदियों को जेल से छूटने के बाद मदद करेगी, यही नहीं जेल के भीतर भी वह उनके लिये उपयोगी सिद्ध होगी।

हर व्यक्ति तक रोशनी पहुँचाना

राजस्थान के तिलोनिया में हर चीज़ सौर ऊर्जा से चलती है। एक समाज-सेवी के रूप में बुनकर रॉय का कहना है कि सौर ऊर्जा किसी भी गाँव को कम से कम खर्च पर बिजली प्रदान कर सकती है। उनतीस वर्ष पहले 'बेअरफूट' कॉलेज की स्थापना गाँव के नौजवानों को देश के विभिन्न स्थानों पर सोलर फोटोवोल्टैक युनिट्स (जो सूर्य की रोशनी को सीधे बिजली में परिवर्तित कर देती है) के संस्थापन और उनके रख-रखाव का प्रशिक्षण देने के लिये की गई थी। सौर ऊर्जा प्रकाश सिस्टम दूर-दराज़ इलाकों में भी व्यवस्थित रूप से काम कर सकता है चाहे वह रेगिस्तान हो या आदिवासियों क जंगली प्रदेश। रॉय का 'बेअरफूट कॉलेज', सौर ऊर्जा पर विश्वास करके पारम्परिक और अपरिवर्तनीय स्रोतों को एक कम ख़र्चीला और प्रदूषण रहित विकल्प प्रदान कर रहा है। रॉय के बेअरफूट सौर इंजीनियर्स आज राजस्थान से बाहर शेष भारत में भी प्रकाश फैला रहे हैं। दूर हिमाच्छादित लद्दाख, भारतीय राज्य जो तिब्बत की सीमा पर है - एक ऐसा ही प्रदेश है।

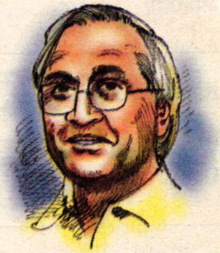

कुछ ही दिन पहले रोटेस राथाउस या 'द रेडसिटी हॉलिनबर्लिन, जर्मनी में बुनकर रॉय ने पुरस्कार प्राप्त किया। उनकी योजना इस पुरस्कार से प्राप्त राशि से हिमालय में और बेअरफूट महिला इंजीनियर्स को प्रशिक्षण देने की है।

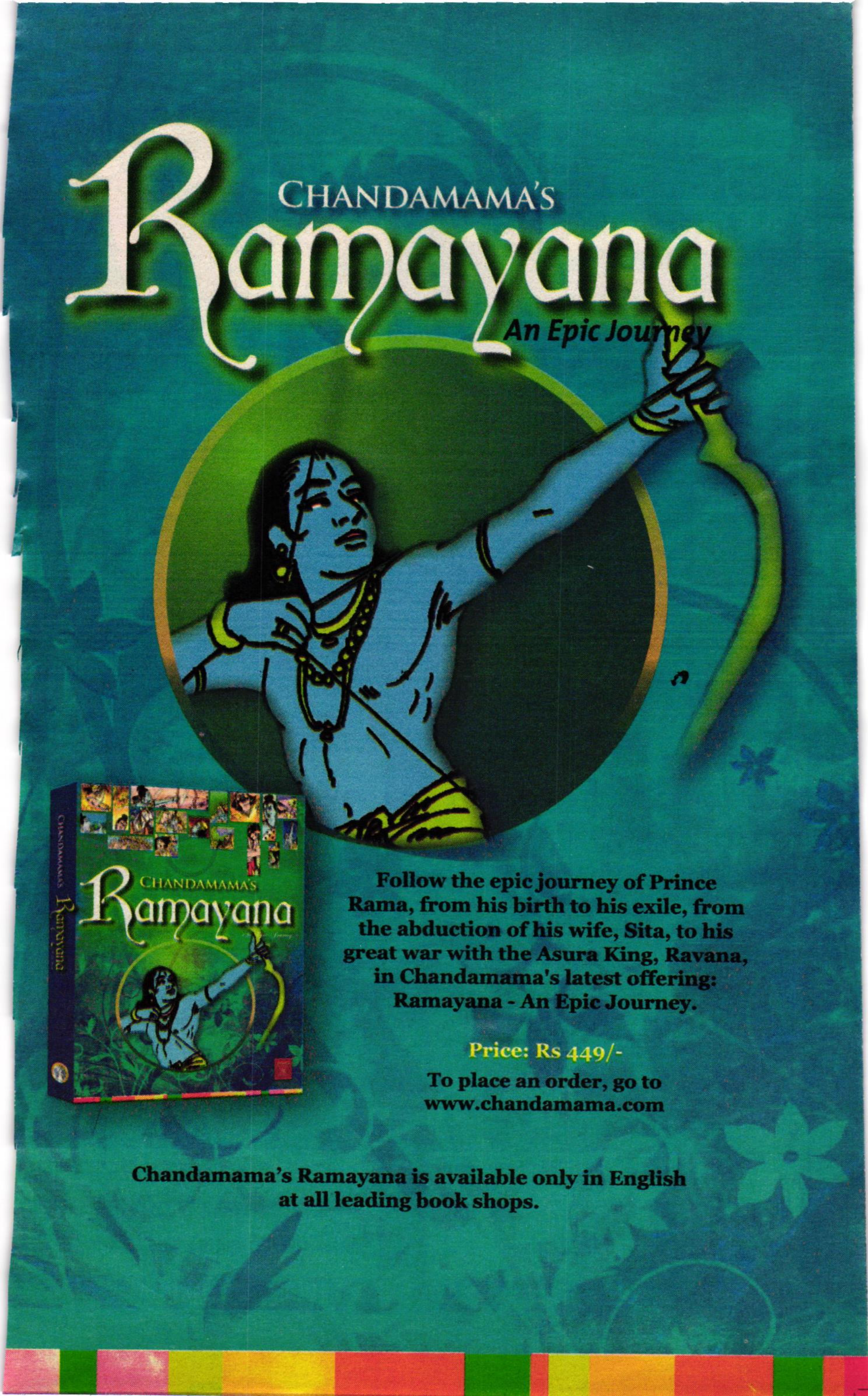
CHANDAMAMA'S
Ramayana
An Epic Journey
CHANDAMAMA'S
Ramayana
Follow the epic journey of Prince Rama, from his birth to his exile, from the abduction of his wife, Sita, to his great war with the Asura King, Ravana, in Chandamama's latest offering: Ramayana - An Epic Journey.
Price: Rs 449/-
To place an order, go to www.chandamama.com
Chandamama's Ramayana is available only in English at all leading book shops.

हाज़िरजवाब

बीरबल

नाई की किस्मत

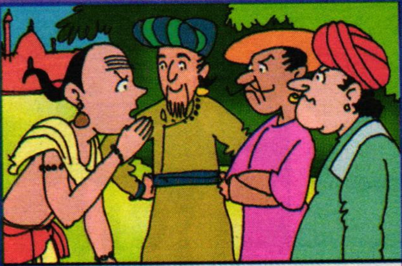

१. बीरबल से जलने वाले दरबारियों ने योजना बनाई। उसे रास्ते से हटाना चाहिये। पर कैसे? एक ने कहा, ''मेरे पास एक तरीका है।''

२. दरबारी ने शाही नाई से बात करके योजना बताई। ''यह पैसा लो। बीरबल मर जाना चाहिये,'' उसने कहा। ''हो जाएगा,'' नाई बोला।

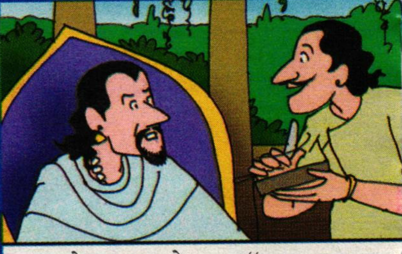

३. उसने बादशाह से कहा, ''हुज़ूर, क्या आप जानना चाहेंगे कि स्वर्ग में आपके पुरखे कैसे हैं?'' अकबर ने पूछा, ''क्या यह सम्भव है?''

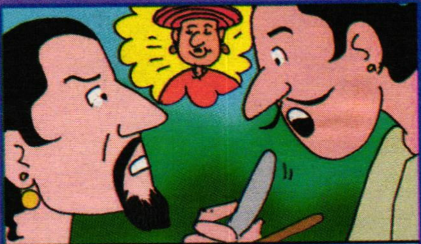

४. ''हाँ, बीरबल को चिता के ज़रिये स्वर्ग में भेजकर,'' नाई ने कहा, ''वे मरेंगे नहीं, क्योंकि मैं मंत्र पढ़ता रहूँगा।''

५. बीरबल को इस योजना का पता लग गया। उन्होंने चिता के स्थान से अपने घर तक एक सुरंग खोदी। ''मैं नाई को सबक सिखाऊँगा।''

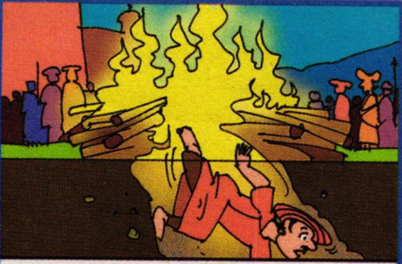

६. बीरबल को चिता पर बैठाया गया। उसमें आग लगाई गई। बीरबल बच गए। वे एक माह घर पर रहे और दाढ़ी और बाल बढ़ा लिये।

७. दरबार में जाने पर अकबर ने पूछा, "तुम आ गए? क्या तुम मेरे पुरखों से मिले?" बीरबल बोले, "हाँ शहंशाह! उन्हें एक ही परेशानी है।"

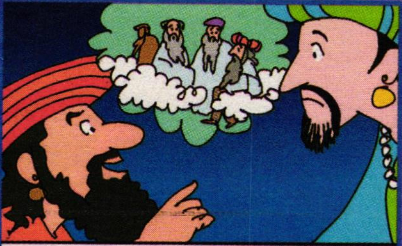

८. "वह क्या?" "उनके बाल और दाढ़ियाँ बहुत बढ़ी हुई हैं। क्या हम शाही नाई को वहाँ भेज सकते हैं?" अकबर बोले, 'हाँ, फ़ौरन!"

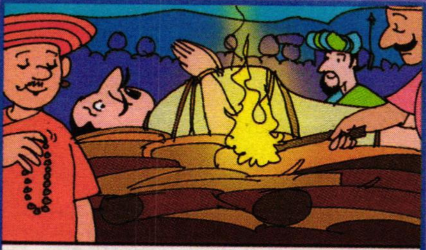

९. नाई को चिता पर बैठा दिया गया। चिता जला दी गई। बीरबल मंत्र पढ़ने लगे और वह चिल्लाने लगा, "मुझे छोड़ दो, छोड़ दो!"

पुस्तक की पहचान

जब तुम कोई किताब उठा कर उसके पिछले पृष्ठ को देखो, तो उसपर तुम्हें कुछ ऐसा नम्बर लिखा दिखेगा, जैसे ISBN-80-60001-33-4। क्या तुम मानोगे कि यह उस किताब का 'पता' है?

मानो या न मानो, पर यह सच है। ISBN या इंटरनेशनल स्टेंडर्ड बुक नम्बरिंग सिस्टम किताबों की नम्बरिंग करने के लिये प्रयोग होने वाली प्रणाली है। जब कोई प्रकाशक किसी खास पुस्तक की किसी संख्या में प्रतियाँ छापता है, तो वह उन्हें पहचानने के लिये किसी ख़ास नम्बर का कोड प्रयोग करता है। नम्बर कोड में दस अंक होते हैं।

पहला भाग जिस देश में पुस्तक प्रकाशित हुई है, उसकी पहचान के लिये। दूसरा भाग है प्रकाशक का उपसर्ग। तीसरा भाग शीर्षक पहचानकर्ता है जबकि चौथा भाग चेक डिजिट कहलाता है।

ट्रेज़र बॉक्स

इस माह, आओ हम कुछ पेड़ों के चित्रों पर एक स्क्रैपबुक बनाते हैं।

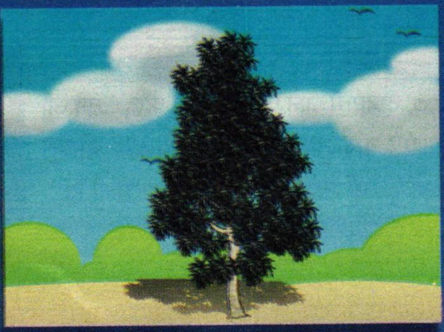

यूक्लिप्टस

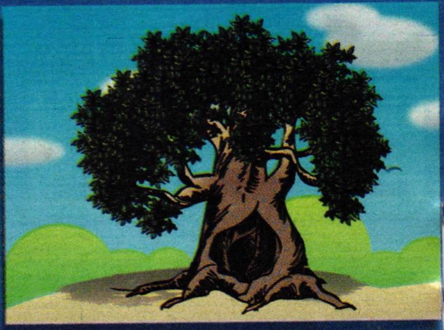

बाओबाब

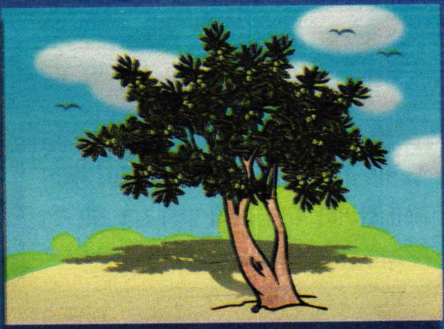

अमरूद

आँवला

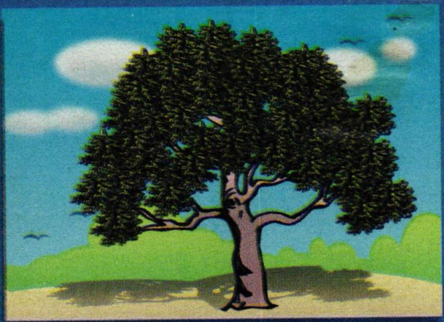

ओक

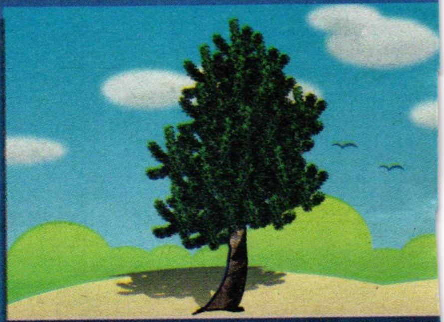

पाइन

TI INDIA
murugappa
BSA LADYBIRD
Your best friend for life.
SELECTED Superbrand INDIA 2011/12
Consumer Validated
BSA LADYBIRD
Breeze
Ride like a wild Breeze
When there's a Breeze around, every day looks even more exciting. The dashingly designed cycle is your perfect partner for the daily getaways and weekend adventures. Ride the joy.
Attractive Product Benefits: Designer Step Through Frame Attractive Wire Mesh Basket | MTB Tyres | Stylish Chain Cover Designer Skirt Guard | Strong Integrated Carrier
Available in four colours
Black
Coral Red
Aqua Green
Steel Blue
LadybirdBSA | YouTube bsahercules | www.bsahercules.com | Customer care no : 18001022324 (Toll Free)

CHANDAMAMA (Hindi) October 2012 Registrar of Newspapers of India No. MAHHIN/2010/35899
Published on first of every month. Licensed to post regd. No. MH/MR/N/130/MBI/10-12